Designed & Printed by :
Pashupati Enterprises , Bareilly
#9760188816, 9458858509

श्री पूर्णागिरी दर्पण 2025

श्री पूर्णागिरी दर्पण 2025

राजकीय महाविद्यालय बनबसा

चम्पावत, उत्तराखण्ड

+91-9410364046 | www.gdcbanbasa.org

राष्ट्रगान

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष माँगे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे

सरस्वती वंदना

हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी अम्ब विमल मति दे, अम्ब विमल मति दे...
जग सिर मौर बनाएं भारत वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल मति दे...

साहस शील हृदय में भर दे,जीवन त्याग तपोमय कर दे
संयम सत्य स्नेह का वर दे, स्वाभिमान भर दे हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल मति दे, अम्ब विमल मति दे ...

लव–कुश, ध्रुव प्रहलाद बनैं,
हम मानवता का त्राश हरें हम, सीता सावित्री दुर्गा माँ फिर घर–घर भर दे
हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी, अम्ब विमल मति दे, अम्ब विमल मति दे ...

श्री पूर्णागिरी दर्पण

संयुक्तांक – पत्रिका (प्रथमांक)

2025

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो. (डॉ.) आनन्द प्रकाश सिंह

प्रधान संपादक

डॉ. राजीव कुमार सक्सेना

संपादक

श्री हेम कुमार गहतोड़ी

महाविद्यालय : दृष्टि एवं उद्देश्य

(Vision & Mission)

दृष्टि

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत का उद्देश्य शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार के केन्द्र के रूप में उभरना, सामाजिक विकास और राष्ट्र निर्माण में योगदान देना और छात्रों को सर्वांगीण विकास के लिए एक आभा प्रदान करना, उन्हें एक सफल कैरियर के लिए तैयार करना और साथ ही समाज की बेहतरी में उनकी भूमिका निभाने में मदद करना है। कॉलेज एक ऐसा शिक्षण वातावरण बनाने का प्रयास करता है जो बौद्धिक जिज्ञासा, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करता है।

उद्देश्य

1. अच्छी शिक्षा प्रदान करना, चरित्र निर्माण करना और आध्यात्मिक सत्य एवं ईश्वर के ज्ञान का प्रसार करना।

2. समग्र विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करना तथा सभी धर्मों की सराहना और सम्मान करने के लिए प्रबुद्ध नागरिकों को तैयार करना, आत्म और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देना, तथा राष्ट्रीय एकता के लिए धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देना।

3. यह सुनिश्चित करना कि उच्च शिक्षा समाज के सभी वर्गों तक पहुँच सके।

4. पाठ्यक्रम में सम्बन्धित विषयों को शामिल करके और सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को सामाजिक आर्थिक मुद्दों (लिंग और मानव अधिकारों पर जोर देते हुए) के प्रति संवेदनशील बनाना।

5. महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करना तथा लैंगिक न्याय एवं उनका सशक्तिकरण सुनिश्चित करना।

6. प्रासंगिक ज्ञान की खोज के लिए अनुकूल शिक्षण–अधिगम वातावरण का निर्माण करना और कैरियर उन्मुख होना।

7. छात्रों को तर्कसंगत ढंग से सोचने में मदद करना और पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों पर जागरूकता को बढ़ावा देना।

8. व्यावसायिक और उद्यमशील शिक्षा के माध्यम से कुशल कर्मियों का विकास करना।

9. स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनो के सतत उपयोग और प्रबन्धन।

शुभकामना सन्देश

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड राज्य

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून – 248001
फोन : 0135–2650433
0135–2716262
फैक्स : 0135–2712827
कैम्प कार्यालय
फोन : 0135–2750033
0135–2750344
फैक्स : 0135–2752144

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राजकीय महाविद्यालय, बनबसा, चम्पावत द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका **''श्री पूर्णागिरी दर्पण''** का संयुक्त विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्र–पत्रिकाएं, छात्र–छात्राओं को उनकी सृजनात्मक एवं रचनात्मक क्षमताओं के विकास के साथ ही संवेदनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु सशक्त मंच उपलब्ध कराती हैं।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका में प्रकाशित लेख व अन्य जानकारियां छात्र–छात्राओं तथा अन्य पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगें, ऐसी आशा है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

शुभकामना सन्देश

डॉ० धन सिंह रावत
मंत्री चिकित्सा स्वास्थ्य,
चिकित्सा शिक्षा, सहकारिता,
उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा,
विद्यालयी शिक्षा

उत्तराखण्ड राज्य

विधान सभा भवन
कक्ष संख्याः 20
फोनः 0135–2666410
फैक्सः 0135–2666411

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत इस वर्ष अपनी वार्षिक पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** के संयुक्तांक का प्रकाशन करने जा रहा है।

यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत अपने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के उन्नयन के साथ–साथ आधुनिक जीवन की चुनौतियों के अनुरूप शिक्षा प्रदान कर रहा है। राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत ने स्थापना के समय से ही छात्रों के सर्वांगीण विकास और उन्हें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने की दिशा में सराहनीय योगदान किया है और यह क्रम इसी तरह आगे भी जारी रहेगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

मैं राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत की वार्षिक पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** के विशेष संयुक्तांक के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(डॉ. धन सिंह रावत)

शुभकामना सन्देश

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

E-mail-highereducation.director@gmail.com

डॉ० विश्वनाथ खाली
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांकः 2640 / 2025–26
दिनांकः 11 अगस्त, 2025

संदेश

महोदय,

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, (चम्पावत) अपनी पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जायेगी जिससे छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन–दर्शन कार्य–संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र–छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

मंगल कामनाओं सहित

प्रो0 (डा0 वी0एन0 खाली)

शुभकामना सन्देश

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

E-mail-highereducation.director@gmail.com

डॉ० कमल किशोर पाण्डे
पूर्व निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांकः 1449/2025–26

संदेश

महोदय,

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, (चम्पावत) अपनी पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जायेगी जिससे छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन–दर्शन कार्य–संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र–छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

मंगल कामनाओं सहित

(डॉ० कमल किशोर पाण्डे)

शुभकामना सन्देश

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट
कुलपति

मो. +91 7579138434
ईमेल- vessju@gmail.com

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत (उत्तराखंड) द्वारा **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** के संयुक्त विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यार्थियों को रचनात्मक बनाने के लिए यह सराहनीय पहल है। पर्वतीय राज्य 'उत्तराखण्ड' हमेशा से ही वैश्विक पटल पर चर्चा के केंद्र में रहा है। प्राकृतिक रूप से परिपूर्ण इस प्रदेश का प्रत्येक क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहरों के लिए जाना जाता है। इसी प्रदेश में चंपावत जनपद भी अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को लेकर प्रसिद्ध है। आज हम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, तो ऐसे में गौरवशाली धरोहरों के प्रति हमारा लगाव कम हुआ है। जबकि अतीत में इन धरोहरों के बल पर ही यह देश विश्वपटल पर सुशोभित रहा है। आज अपने आस–पास के क्षेत्र के गौरवशाली इतिहास, पुरातत्त्व, परंपरा एवं संस्कृति को संरक्षित करने और इनके बारे में हमारे विद्यार्थियों को जानकारी देने की आवश्यकता है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास भी है कि यह संयुक्तांक पत्रिका अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए विद्यार्थियों का आवाहन करेगी।

मैं **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० आनन्द प्रकाश सिंह, पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों एवं विद्यार्थियों को शुभकामना देता हूं।

28 जनवरी 2025

(प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट)
कुलपति

शुभकामना सन्देश

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

प्रो. देवेन्द्र सिंह बिष्ट
कुलसचिव

मो. +91 8449399063
ईमेल- registrarssju@gmail.com

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत (उत्तराखंड) द्वारा एक **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** शीर्षक से एक संयुक्त विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यार्थियों को रचनात्मक बनाने के लिए यह एक सराहनीय पहल है। प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, आध्यात्मिक क्षेत्रों में विशिष्टता को लेकर यह पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड विश्वपटल पर हमेशा से ही चर्चा के केंद्र में रहा है। प्राचीन ग्रंथों एवं शास्त्रों से यह ज्ञात होता है कि इस भूमि में देवी–देवताओं ने वास किया है। इसी विशेषता को लेकर इस भूमि को 'देवभूमि' नाम से भी संबोधित किया जाता है। प्राकृतिक रूप से समृद्ध इस भूमि में यक्ष, किन्नर, नाग जैसी आदिम जातियां एवं असंख्य जनजातियां भी निवास कर चुकी हैं। अतः इन सभी के महत्व को लेकर हमारे विद्यार्थियों को बताए जाने की आवश्यकता है। चूंकि भारतीय संस्कृति के साथ क्षेत्रीय संस्कृति भी भारत को विशिष्ट बनाती है और भारत की पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुशोभित करती है, तो ऐसे में क्षेत्रीय संस्कृति को उजागर करने का प्रयास **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** पत्रिका एक सार्थक क्रांति का पर्याय बनेगी। इस पत्रिका के माध्यम से अपने क्षेत्र की समृद्ध धरोहरों से संबंधित सामग्री भी जनमानस के लिए प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया जाना चाहिए। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** पत्रिका अपनी जड़ों से जुड़ने और युवाओं में रचनात्मक क्षमताओं का विकास करने के लिए लाभदायी सिद्ध होगी।

मैं इस संयुक्तांक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० आनन्द प्रकाश सिंह एवं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूं।

21 जनवरी 2025

प्रो. देवेन्द्र सिंह बिष्ट
कुलसचिव

शुभकामना सन्देश

कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
स्लीपी हॉलो, नैनीताल–263001, उत्तराखण्ड, भारत

Kumaun University, Nainital
Sleepy Hollow, Nainital-263001, Uttarakhand, India
(Accredited "B+" Grade by NAAC)

K U Nainital

प्रो० दीवान एस. रावत
कुलपति
Prof. Diwan S. Rawat
FNASc, FRSC, CChem (London)
Vice-Chancellor

संदेश

हर्ष का विषय है राजकीय महाविद्यालय, बनबसा, (चम्पावत) द्वारा शैक्षणिक सत्र 2024–25 हेतु अपनी पत्रिका **श्री पूर्णागिरी दर्पण'** के संयुक्त विशेषांक के प्रकाशन का संकल्प लिया है। किसी भी संस्थान से प्रकाशित पत्रिका में छात्र–छात्राओं द्वारा दी गयी रचनायें, विचार, कहानियां आदि उनके बौद्धिक विकास को तो दर्शाता ही है साथ ही ऐसे प्रयासों से छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास में भी आशातीत वृद्धि होती है। आशा है महाविद्यालय अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए भविष्य में भी उच्च स्तरीय प्रकाशनों, सेमीनार, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी को लाभान्वित करने में अग्रसर रहेगा।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होंगी। पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी विद्यार्थियों, अधिकारियों कार्मिकों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

प्रो० दीवान एस. रावत

दूरभाष (कार्यालय) 05942–235068, मो. 9810232301 फैक्स (कार्यालय) 05942–235576
E-mail: vc@kunainital.ac.in

शुभकामना सन्देश

प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी
कुलपति
Prof. Navin Chandra Lohani
Vice Chancellor

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Uttarakhand Open University

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि राजकीय महाविद्यालय, बनबसा (चम्पावत) द्वारा पत्रिका **''श्री पूर्णागिरी दर्पण''** (संयुक्तांक विशेषांक सत्र 2024–25) का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकाएं विद्यार्थियों के उज्ज्वलतम भविष्य एवं सक्रिय कार्यकुशलता में बढ़ोत्तरी व परस्पर सहयोग एवं रचनात्मक अभिरूचियों को प्रकाश में लाने का उत्कृष्ट कार्य करती हैं। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में शोधार्थियों, छात्र–छात्राओं तथा जनसामान्य हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जायेगा। जिससे छात्र–छात्राओं एवं समाज के सभी वर्ग लाभान्वित होंगे, तथा ज्ञान विकास के नये आयाम विकसित होंगे। साथ ही पत्रिका दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से देश व क्षेत्र की जन सामान्य की चेतना को जागृत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

मैं वार्षिक पत्रिका (संयुक्तांक विशेषांक 2024–25) के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित

प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी
कुलपति

Vishvidhyalaya Marg, Near T.P. Nagar, Haldwani-263139 (Nainital) Uttarakhand विश्वविद्यालय मार्ग, निकट ट्रान्सपोर्ट नगर, हल्द्वानी-263139 (नैनीताल) उत्तराखण्ड
Mob.: 8954043377, Ph.: 05946-263014 Fax: 05946-262032 Website: www.uou.ac.in, E-mail: vc@uou.ac.in

शुभकामना सन्देश

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय बादशाहीथौल – टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) – 249199

SRI DEV SUMAN UTTARAKHAND VISHWAVIDHYALAYA BADSHAHITHAUL - TEHRI GARHWAL (UTTARAKHAND)-249199

प्रो० एन० के० जोशी
कुलपति
मो0: 9520871191
वेबसाइड : www.sdsuv.ac.in
ई–मेल : vc@sdsuv.ac.in

Prof. N.K. Joshi
Vice Chancellor
Mob: 9520871191
website: www.sdsuv.ac.in
email: vc@sdsuv.ac.in

पत्रांक : Memo **दिनांक : 24/01/2025**

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत (उत्तराखंड) अपने महाविद्यालय की पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** के संयुक्तांक का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका में शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ छात्र–छात्राओं में छिपी हुई प्रतिभा, साहित्य–संस्कृति एवं रचनात्मक उन्नयन को उजागर किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशित वार्षिक संयुक्तांक पत्रिका का प्रकाशन उच्च शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने, छात्र–छात्राओं तथा शिक्षा जगत के क्षेत्र में बेहतर सवांद कायम करने में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं, राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत (उत्तराखंड) द्वारा प्रकाशित की जाने वाली वार्षिक पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** की भव्यता एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें ज्ञापित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित !

प्रो0(एन0के0 जोशी)

शुभकामना सन्देश

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

क्षेत्रीय कार्यालय, दून विश्वविद्यालय परिसर, फैकल्टी लॉज, देहरादून–248001

डॉ० आनन्द सिंह उनियाल

संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा

E-mail - jdhedehradun@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि राजकीय महाविद्यालय, बनबसा (चंपावत) की पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** प्रकाशित होने जा रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होंगे।

मेरी ओर से **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** पत्रिका प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(डॉ० आनन्द सिंह उनियाल)

शुभकामना सन्देश

ऋषि रंजन आर्य,
पावर स्टेशन प्रमुख,
एनएचपीसी लिमिटेड,
टनकपुर पावर स्टेशन,
बनबसा, जिला चंपावत (उत्तराखंड)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय महाविद्यालय, बनबसा (चंपावत) की पत्रिका **''श्री पूर्णागिरी दर्पण''** प्रकाशित होने जा रही है। आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी और इसमें ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री का समावेश होगा। पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त होंगे। यह पत्रिका समाज के बौद्धिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विकास एवं राष्ट्र निर्माण की प्रगति में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

प्रिय पाठकों! शिक्षा का ध्येय है मनुष्य के सर्वांगीण विकास से है। एक शिक्षित मनुष्य अपने प्रभाव से साथ रहने वाले संगियों पर सकारात्मक प्रभाव बना सकता है। शिक्षा शक्ति का एक महान केन्द्र है और इसके बल पर वह जो चाहे कर सकता है। शिक्षा के साथ–साथ जीवन में अनुशासन बनाये रखना हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है। एक शिक्षित एवं अनुशासित मनुष्य अपने शब्दों और कर्मों की एकता से स्थानीय समुदाय, समाज और राष्ट्र को नवनिर्मित एवं नवसृजित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस पत्रिका के माध्यम से मैं विद्यार्थियों को संदेश देना चाहूँगा कि अपने जीवन में शिक्षा के साथ–साथ अनुशासन को भी अधिक से अधिक महत्व प्रदान करें ताकि राष्ट्र निर्माण में आपका योगदान बना रहे।

अंत में मैं महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों व विशेष रूप से सम्पादकीय मण्डल, प्राचार्य एवं समस्त विद्यार्थियों को **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** पत्रिका के प्रकाशन होने पर हार्दिक बधाई देता हूँ। जिनके रचनात्मक प्रयास से आगामी अंक का सफल प्रकाशन होने जा रहा है। इस श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए मेरी आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

22/02/25

ऋषि रंजन आर्य,
पावर स्टेशन प्रमुख,

प्राचार्य की कलम से

प्रोफेसर (डॉ.) आनन्द प्रकाश सिंह

राजकीय महाविद्यालय बनबसा (चंपावत) की सृजनात्मक पत्रिका **'श्री पूर्णागिरि दर्पण'** 2023–2024 एवं 2024–2025 प्रवेशांक आपको आलोकनार्थ प्रदान करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। किसी भी महाविद्यालय की पत्रिका विभिन्न शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक गतिविधियों को दर्शाती है जो छात्र–छात्राओं की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करती है। किसी भी समाज, संगठन एवं संस्था की रचनात्मक सृजनशीलता एवं उसकी अभिव्यक्ति अपना एक विशेष महत्व रखती है। छात्र–छात्राएं अपनी सृजनशीलता एवं अभिव्यक्ति, नई प्रौद्योगिकी एवं संचार की दुनिया में जहां सूचनाओं का विशेष महत्व है। कल्पना शक्ति के सतत स्रोत के माध्यम से अपने विचार तथा साहित्य जगत को आलोकित करने में सफल होंगे राजकीय महाविद्यालय बनबसा (चंपावत) की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना पर्वतीय भू–भाग में होने के नाते समृद्ध एवं प्रतिभाओं से भरी हुई है। मां पूर्णागिरि आस्था एवं पौराणिकता यहां की सांस्कृतिक विरासत के बीच स्थित इस महाविद्यालय में निरंतर शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां छात्र–छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया जाती रही हैं। छात्र–छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति ने कल्पना–प्रसूत विचार बीजों को अंकुरित शब्दों का आकार दिया है। किसी भी महाविद्यालय का शैक्षणिक लक्ष्य ज्ञान के विकास के साथ–साथ छात्र–छात्राओं के समग्र व्यक्तित्व विकास पर होता है छात्र–छात्राओं में नैतिकता, सामाजिक सांस्कृतिक धरोहर के प्रति समर्पण, ज्ञान कौशल का विकास, वैज्ञानिक सोच विकसित हो ऐसा प्रयास, महाविद्यालय परिवार के शिक्षकों द्वारा रहता है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र–छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान होगा। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के माध्यम से समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की विसंगतियों, जैसेः मद्यपान, नशा, ड्रग्स, पर्यावरण प्रदूषण समाज में विद्यमान सामाजिक एवं आर्थिक विसंगति, महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार को दूर किया जा सकेगा नेपाल स्थित अंतरराष्ट्रीय सीमा एवं पूर्णागिरि के बीच स्थित बनबसा महाविद्यालय के माध्यम से इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में छात्र–छात्राओं का योगदान हो, स्वच्छता एवं सौंदर्य को विकसित करने में भूमिका हो, इस सृजनात्मक शक्ति के माध्यम से करने का प्रयास रहेगा। इस सृजनात्मक संयुक्तांक के माध्यम से छात्र–छात्राओं के अभिव्यक्ति को एक महत्वपूर्ण पड़ाव मिलेगा। मैं इस सृजनात्मक अंक के संपादक मंडल के साथ–साथ सभी अध्यापकों, छात्र–छात्राओं जिन्होंने इस प्रवेशांक में अपनी सृजनात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया है धन्यवाद देता हूं जिनके अथक एवं निरंतर प्रयास से इस पत्रिका का संपादन संभव हो सका। सृजनात्मक **'श्री पूर्णागिरि दर्पण'** पत्रिका के सभी सुधि पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सम्पादकीय

सुधी पाठकों,

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत का संयुक्तांक **'श्री पूर्णागिरि दर्पण'** का यह नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष एवं आह्लाद की मिश्रित अनुभूति हो रही है। महाविद्यालय परिवार के शिक्षकों एवं विद्यार्थीयों के संयुक्त प्रयास से यह प्रकाशन पहली बार आपके कर कमलों में समर्पित करते हुए हम गौरवान्वित हैं।

उत्तराखंड के चम्पावत जनपद में. हिमालय की सुरम्य उपत्यकाओं में अवस्थित माँ पूर्णागिरि का पावन धाम श्रद्धा आस्था एवं आध्यात्मिक चेतना का एक जाग्रत केंद्र रहा है। पूर्णागिरि पर्वत पर प्रतिष्ठित यह देवालय, जो टनकपुर से अनुमानतः 20 किलोमीटर की दूरी पर पुण्यसलिला काली नदी के दक्षिण तट पर शोभायमान है, समुद्र तल से लगभग 3000 फ़ीट की ऊँचाई पर हिमालय की तलहटी में स्थित है। इसकी स्थापत्य कला में उत्तर भारतीय एवं नेपाली निर्माण शैलियों का एक अद्वितीय समन्वय परिलक्षित होता है। देवी की मनोहारी प्रतिमा कृष्ण प्रस्तर से निर्मित है तथा स्वर्णिम आभूषणों एवं बहुरंगी परिधानों से अलंकृत की गई है, जहाँ माँ पूर्णागिरि को आदि शक्ति का प्रतिरूप माना जाता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अर्थव्यवस्था, भौतिक समृद्धि, चहुंमुखी विकास एवं संपन्नता की शिक्षा ही वस्तुतः वह आधारशिला है जो इस दौर में न केवल मनुष्य को उदार एवं चरित्रवान बनाता है अपितु उसमें नैतिकता, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति निष्ठा तथा मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था का बीजारोपण भी करता है। किसी भी शिक्षण संस्थान की सार्थकता एवं उसकी सफलता अथवा विफलता का निर्धारण वस्तुतः उसके पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक गुणवत्ता पर ही निर्भर करता है। भारत की विपुल मानव संसाधन क्षमता का समतामूलक एवं समावेशी सिद्धांतों के आधार पर राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में विनियोजन हमारा मुख्य ध्येय है। आज विश्व के विकसित राष्ट्रों की आर्थिक एवं तकनीकी प्रगति के मूल में उनकी सुदृढ़ शोध परंपरा ही निहित है। उच्चतर विद्या की गुणवत्ता और उसकी व्यावहारिकता पर गहन मनन करने पर यह तथ्य उभरता है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली, अपनी कुछ अंतर्निहित सीमाओं के कारण, बेरोजगारी जैसी जटिल चुनौतियों को भी उत्पन्न कर रही है। यह आवश्यक है कि हम अपने इन विद्या अध्ययनों की क्षमताओं का सम्यक उपयोग राष्ट्र के आर्थिक उत्थान और सामाजिक न्याय के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रभावी ढंग से कर सकें।

वस्तुतः यह अंक हमारे संस्थान की सृजनात्मक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक सक्रियता का जीवंत प्रतीक है। यह केवल एक मुद्रण मात्र नहीं. अपितु प्राणवंत जीवन एवं उसकी ऊर्जस्विता का प्रतिमान है। यह स्पंदनशील, संजीव इकाई अपने समय की संवेदनाओं, योगदानकर्ताओं की अभिलाषाओं एवं पाठकों की सर्वश्रेष्ठ कल्पनाओं को प्रतिबिंबित करती है। यह एक ऐसा वैचारिक धरातल है जो नवोन्मेषी चिंतन को अभिव्यक्ति प्रदान करता है जहाँ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के स्वर एक रचनात्मक संवाद में एकाकार होते हैं।

साहित्य सदैव ही मानव सभ्यता का आलोकित पथ–प्रदर्शक, अस्मिता की पहचान, इतिहास का संरक्षक एवं युगीन परिवर्तन का सशक्त प्रेरक रहा है। डिजिटल एवं इंटरनेट के इस युग में भी साहित्य की प्रासंगिकता अक्षुण्ण बनी हुई है। यह हमें क्षण भर ठहरकर गहन चिंतन करने तथा अपने परिवेश एवं जगत के साथ अंतःकरण से जुड़ने का स्मरण कराता है। इन पृष्ठों में आपको सृजनशील अभिव्यक्तियों का एक वैविध्यपूर्ण संकलन प्राप्त होगा जिसमें ऐसी कविताएँ

हैं जो मानवीय अस्तित्व की गहनतम अनुभूतियों को सहेजती हैं। प्रत्येक कृति हमारे युवा मानस एवं शिक्षकों की प्रखर बौद्धिक जिज्ञासा तथा उत्कृष्ट कलात्मक प्रतिभा का जीवंत प्रमाण है।

साहित्यिक सृजन के अतिरिक्त, प्रस्तुत संयुक्तांक सांस्कृतिक एवं सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में घटित हो रहे परिवर्तनों के प्रति हमारे विद्यार्थी वर्ग की जागरूकता, उनकी सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रियता, विभिन्न सेवाभावी स्वयंसेवकों द्वारा सामुदायिक उत्थान के प्रयासों, तथा सांस्कृतिक समिति की जीवंत पहलों के माध्यम से हमारे संस्थान की स्पंदित गतिशील चेतना को भी अभिव्यक्त करता है। इसमें समाहित प्रतिवेदन उन सामुदायिक उद्यमों का आलेख हैं जो हमारे शैक्षिक परिवेश के समर्पण एवं उत्साह को उजागर करते हैं।

इन पन्नों का अवलोकन करते हुए हमें यह आत्मसात करना होगा कि ऐसा कोई भी सृजनात्मक प्रयास केवल शब्दों का समुच्चय मात्र नहीं होता है अपितु यह हमारे अस्तित्व एवं हमारी आकांक्षाओं का प्रतिबिंब भी है। यह एक ऐसा संगम प्रस्तुत करता है जहाँ सृजनात्मकता का आलोचनात्मक विवेक से तथा परंपरा का नवाचार से समन्वय स्थापित होता है, और विचारों को पुष्पित–पल्लवित होने के लिए सर्वश्रेष्ठ धरातल प्रदान करता है।

हम समस्त योगदानकर्ताओं, विद्यार्थियों, सम्मानित प्राध्यापकगणों एवं समिति के सुधी प्रतिनिधियों के प्रति अपना हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी प्रज्ञापूर्ण अंतर्दृष्टि एवं मौलिक रचनात्मकता से इस सृजन को समृद्ध किया है। हम विशेष कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिनके अथक परिश्रम ने यह सुनिश्चित किया है कि यह प्रस्तुति न केवल ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणास्पद हो, अपितु हमारे संस्थान की मूल भावना के साथ भी इसका सामंजस्य स्थापित हो।

हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि यह साहित्य प्रयास केवल पृष्ठों का एक समुच्चय न रहकर, एक ऐसा अविस्मरणीय अनुभव सिद्ध हो जो आपके मानस पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़े। पत्रिका प्रकाशन में यथा संभव सावधानी के बावजूद यदि वर्तनी–शुद्धिकरण में कोई त्रुटि रह गयी हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे, इस कामना के साथ आपके स्नेहिल प्रोत्साहन का आकांक्षी हूँ।

डॉ. राजीव कुमार सक्सेना
प्रधान संपादक

"गलतियाँ ही इंसान को
सीखने का मौका देती हैं"

विवरणिका (Table of Contents)

- महाविद्यालयः ज्ञान और विकास की पूर्णता की ओर 1–2
- शिक्षा में समावेशिताः प्रवेश आँकड़ों का अध्ययन 3–6
- पर्वतीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की समस्या एवं संभावना 7
- जीव–जगत और मानव 8
- लेख : सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा 9
- लेख : महिला सशक्तिकरणः एक नया सवेरा 10
- बेरोजगारीः सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ 11
- संस्कृत विभाग – परिचयः एक साहित्यिक दृष्टि 12–14
- पर्यावरण 15
- पेड़–पौधों का इंटरनेट 16–17
- ग्राफोलॉजीः हस्तलेखन विश्लेषण की कला 18–20
- विद्यार्थियों की कविताएँ : पिता जीवन का सार है, आवाज 21
- चित्र : महाविद्यालय परीक्षा 22
- चित्र : खेलकूद प्रतियोगिता 23
- विद्यार्थियों की कविताएँ : समय का महत्व, जीवनः एक अनमोल उपहार 24
- लेख : मनुस्मृति का महत्व 25
- महाविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केंद्र (यू.ओ.यू.) 26–27
- विद्यार्थियों की रचना : जीवन की परीक्षा 28
- विद्यार्थियों की रचना : मेरी उड़ान 29
- कठोपनिषद् सार 30
- विद्यार्थियों की रचना : जिंदगी को जागरूकता के साथ जीकर देखें 31
- विद्यार्थियों की रचना : वेदांग परिचय 32
- स्वच्छता – एक स्वस्थ जीवन की कुंजी 33
- विद्यार्थियों की रचना : गृहस्थ धर्म 34
- लेखः हर विचार हमारा भविष्य बनाता है 35
- चित्र : कवि सम्मेलन 36
- चित्र : महाविद्यालयी कार्यशालाएँ 37
- माता–पिताः जीवन के आधार स्तंभ और मार्गदर्शक 38
- हिन्दी विभाग की पंचवर्षीय यात्रा (2020–2025) 39–40
- विद्यार्थियों की रचना : हर व्यक्ति का महत्व 41
- लेखः वैदिक संस्कृति की विश्व को देन 42–43
- महाविद्यालय छात्र संघः प्रगति आख्या (2020–2025) 44–45
- चित्र : अभिभावक शिक्षक संघ का गठन 46
- चित्र : महाविद्यालय सेमिनार/कॉन्फ्रेन्स 47
- Department of English 48
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः विकसित भारत का स्वप्नदर्शी पथ 49–51
- राजनीति विज्ञान विभाग की आख्या (2020–2025) 52–53
- विद्यार्थियों की कविताएँ : प्राध्यापक, सपनों की उड़ान, रंगों का खेल 54
- विद्यार्थियों की कविताएँ : जीवन की समझ, देश भक्ति गीत, नारी, मेरी माँ 55
- विद्यार्थियों की कविताएँ : शिक्षक छात्र का रिश्ता ऐसा, माँ, शिक्षक समर्पण, नशा 56
- समाजशास्त्र विभाग (2024–25) 57–58
- डॉ. भीमराव अंबेडकर : भारतीय शिक्षा नीति और राजनीति के शिल्पकार 59–60
- विद्यार्थियों की कविताएँ : पिता, पर्यावरण बचाओ, विजेता की पुकार, गीता का उपदेश 61
- चित्र : महाविद्यालयी गतिविधियाँ 62
- चित्र : अन्य गतिविधियाँ 63
- अर्थशास्त्र विभागः प्रगतिगाथा (2020–2025) 64–65
- मीडिया की नजर से 66–68
- लेख : आस्था और संस्कृति का महाकुम्भ 69–70
- लेख : सांस्कृतिक यात्रा पर विशेष आख्या (2020–2025) 71–72
- Uttarakhand's Regional Literature in English Prose and Rhyme 73
- देवभूमि उद्यमिता योजनाः कार्यक्रम की आख्या 74–76
- SC/ST/OBC/EWC छात्रवृत्ति 77
- मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना आख्या 78
- एन्टी ड्रग सेल आख्या 79
- चित्र : एन्टी ड्रग सेल कार्यक्रम 80
- चित्र : अन्य गतिविधियाँ 81
- एन्टी रैगिंग सेल आख्या 82
- संक्षिप्त परिचय : उत्तराखण्ड छात्रवृत्ति योजना 83–86
- युवा संसद 87
- चित्र : पाठ्येत्तर गतिविधिया 88–89
- विज्ञापन : KITM Group of Institutions 90
- विज्ञापन : आँचल दुग्ध उत्पाद 91

महाविद्यालय : ज्ञान और विकास की पूर्णता की ओर

उत्तराखंड के हृदयस्थल में, हिमालय की दिव्य ऊँचाइयों के सान्निध्य में, बनबसा नगर में राजकीय महाविद्यालय, बनबसा ज्ञान का एक आलोक स्तंभ है। यह महाविद्यालय केवल शिक्षा का मंदिर नहीं, बल्कि इस सीमांत क्षेत्र की पावन चेतना का मूर्त रूप है। हमारी वार्षिक पत्रिका **'श्री पूर्णागिरि दर्पण'** का यह अंक, इसी अलौकिक संबंध की गाथा कहता है, जहाँ पूर्णागिरि की दिव्य उपस्थिति और महाविद्यालय की जान साधना विकास की नई ऊँचाइयों को स्पर्श कर रही हैं।

बनबसा, प्रकृति की अनुपम छटा और आध्यात्मिक ऊर्जा का संगम है, जो माँ पूर्णागिरि के पवित्र धाम के सान्निध्य में पुष्पित–पल्लवित होता है। यह महाविद्यालय युवाओं को ज्ञान और कौशल से आलोकित करने के लिए संकल्पबद्ध है। शारदा नदी, घने वन और आध्यात्मिक वातावरण महाविद्यालय के विकास पथ को एक अद्वितीय दिशा प्रदान करते हैं।

यह क्षेत्र थारू जनजाति की जीवंत परंपराओं का केंद्र है, जहाँ महाविद्यालय उनके सांस्कृतिक संरक्षण और शैक्षिक उत्थान में सक्रिय है। कृषि और व्यापार प्रधान इस आर्थिक परिदृश्य में महाविद्यालय युवाओं को उद्यमिता व कौशल विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रहा है।

राजकीय महाविद्यालय, बनबसा की स्थापना 9 जून, 2014 को प्राथमिक चिकित्सालय के एक अस्थायी भवन में एक छोटे से अंकुर के रूप में हुई। आज यह संस्थान एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है, जिसकी जड़ें क्षेत्र के लोगों की आकांक्षाओं में गहराई से जमीं हैं। यह महाविद्यालय बनबसा के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का एक अभिन्न अंग है।

माँ पूर्णागिरि आस्था और अलौकिक सौंदर्य का संगम : माँ पूर्णागिरि मंदिर, उत्तराखंड के चंपावत जिले में अन्नपूर्णा शिखर पर विराजमान, एक अत्यंत पवित्र सिद्धपीठ है। यह 51 शक्तिपीठों में से एक है। जहाँ देवी सती की नाभि गिरी थी। यहाँ स्थापित माँ पूर्णागिरि की मूर्ति साधारण प्रतिमा न होकर, प्राकृतिक रूप से उभरे हुए एक पिंडी स्वरूप में है. जो माँ की अनादि शक्ति का प्रतीक है।

यह मंदिर वर्ष भर, विशेषकर चैत्र नवरात्र के दौरान, लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है, जहाँ विशाल मेला आयोजित होता है। **'झूठे का मंदिर'** की लोककथा सत्यनिष्ठा और नैतिकता के महत्व को दर्शाती है। मंदिर परिसर से दिखने वाली शारदा नदी, पहाड़ों और घने वनों के मनोहर दृश्य मन को शांति प्रदान करते हैं। शारदा नदी, जिसे महाकाली नदी भी कहते हैं. यहाँ के लोगों के लिए जीवनरेखा है और भारत तथा नेपाल के बीच की सीमा भी बनाती है। पूर्णागिरि दर्शन के उपरांत, कई श्रद्धालु नेपाल के ब्रह्मदेव बाबा (सिद्धनाथ मंदिर) के दर्शन के लिए भी जाते हैं।

महाविद्यालय की पत्रिका का नाम **''श्री पूर्णागिरि दर्पण''** रखना, इस पावन धाम के प्रति हमारी गहरी, श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक है। यह नाम 'पूर्णता' के उस उच्चतम आदर्श को दर्शाता है।

महाविद्यालय स्थापना से वर्तमान तक की यात्रा (2014–2025) : राजकीय महाविद्यालय, बनबसा की स्थापना 2014 में एक अस्थायी भवन से हुई और 15 जुलाई 2014 को कला संकाय के साथ शैक्षणिक कार्य प्रारंभ हुआ। प्रारंभिक चुनौतियाँ थी, परंतु छात्रों और शिक्षकों के दृढ़ संकल्प से शिक्षा जारी रही। 2019 में, प्रोफेसर (डॉ.) आर. सी. पुरोहित के अथक प्रयासों से महाविद्यालय को अपना सुसज्जित, नवनिर्मित स्थायी भवन प्राप्त हुआ, जो एक ऐतिहासिक क्षण था।

प्रेरणादायी नेतृत्व और समर्पित स्टाफ : महाविद्यालय की प्रगति में प्राचार्यों का कुशल नेतृत्व अविस्मरणीय रहा है। जिनमें प्रोफेसर (डॉ.) आर. के. गुप्ता (प्रथम प्राचार्य), प्रोफेसर (डॉ.) आर.सी. पुरोहित (द्वितीय प्राचार्य) प्रोफेसर (डॉ.) आभा शर्मा (तृतीय प्राचार्य) प्रोफेसर (डॉ.) मुकेश कुमार (चतुर्थ प्राचार्य), और वर्तमान में प्रोफेसर (डॉ.) आनंद प्रकाश सिंह (पंचम एवं वर्तमान प्राचार्य) शामिल हैं।

महाविद्यालय की शैक्षिक उत्कृष्टता समर्पित शिक्षण स्टाफ के अथक प्रयासों का प्रतिफल है। पूर्व प्राध्यापकों में डॉ. गुरेंद्र सिंह (राजनीति विज्ञान), डॉ. हरिओम सिंह (राजनीति विज्ञान), श्री रोहित (राजनीति विज्ञान), श्री सोमेश पाटनी (राजनीति विज्ञान), डॉ. रामनारायण पाण्डेय (राजनीति विज्ञान), डॉ. प्रवीण जैन (समाजशास्त्र), डॉ. हिना प्रवीण (समाजशास्त्र), डॉ. शशि प्रकाश सिंह (समाजशास्त्र), डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता (अर्थशास्त्र) और डॉ. सिद्धेश्वर सिंह (हिंदी) ने मजबूत नींव रखी वर्तमान में डॉ. मुकेश कुमार (संस्कृत), डॉ. भूप नारायण दीक्षित (अंग्रेजी), डॉ. राजीव कुमार सक्सेना (समाजशास्त्र), डॉ. सुशीला आर्या (अर्थशास्त्र), डॉ. सुधीर मलिक (राजनीति विज्ञान), और श्री हेम कुमार गहतोड़ी (हिंदी) प्राध्यापक शिक्षा के उच्च मानकों को बनाए हुए हैं।
संस्थान की सुचारु कार्यप्रणाली में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का अमूल्य योगदान है. जिनमें श्री मनोज कुमार, श्री भरत राज ओझा जैसे प्रारंभिक कर्मचारी, और वर्तमान में श्रीमती जयंती देवी (कार्यालय), श्री अमर सिंह, श्री त्रिलोक चंद्र कांडपाल (अनुसेवक), श्री विनोद सिंह (पुस्तकालय), श्री देवकीनंदन जोशी (चौकीदार), और श्री नरसोनू (पर्यावरण मित्र) शामिल हैं। ये सभी महाविद्यालय परिवार के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

समग्र गतिविधियों, सामाजिक भूमिका और भविष्य की दिशा : महाविद्यालय छात्रों के सर्वांगीण विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। सक्रिय छात्र संघ, खेलकूद, रोवर–रेंजर्स, और मुख्यमंत्री छात्र शैक्षिक भारत दर्शन जैसी पहलें छात्रों को सशक्त करती हैं। 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' के तहत कंप्यूटर प्रशिक्षण जैसी पहलें सामाजिक जागरूकता बढ़ाती हैं। महाविद्यालय विभिन्न सामुदायिक जुड़ाव गतिविधियों में सक्रिय है. जैसे रेड क्रॉस सोसाइटी कार्यशालाएँ, महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन (विश्व स्वास्थ्य, विश्व जल संरक्षण), वृक्षारोपण, देवभूमि उद्यमिता विकास कार्यक्रम, मतदाता जागरूकता, और समान नागरिक संहिता **(UCC)**। ये सभी प्रयास **'सर्वभूत हिते रतः'** के सिद्धांत पर आधारित हैं, जिससे महाविद्यालय बनबसा क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय शक्ति बनता जा रहा है।

महाविद्यालय का दृष्टिकोण स्पष्ट है ज्ञान के साथ संस्कार, विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण, और व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामुदायिक कल्याण प्रमुख चुनौतियों में बुनियादी ढांचे का विकास, नए विषयों की आवश्यकता, डिजिटल साक्षरता, और पर्यावरण संरक्षण शामिल हैं। महाविद्यालय छात्रों के सर्वांगीण विकास पर जोर देगा, आत्मनिर्भरता और स्वरोजगार को प्रोत्साहित करेगा, जिससे बनबसा के युवाओं का भविष्य उज्जवल बन सके।

निष्कर्षः ज्ञान, आस्था और विकास की पूर्णता : जुलाई 2014 से अब तक, महाविद्यालय की यात्रा ज्ञान, आस्था और विकास की एक अविस्मरणीय गाथा है। अस्थायी भवन से स्थायी परिसर तक का सफर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय से सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय तक की सम्बद्धता, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभावी क्रियान्वयन ये सभी महाविद्यालय परिवार के अटूट संकल्प और अथक परिश्रम के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

प्राचार्यों, प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों और छात्रों के समर्पित प्रयासों से महाविद्यालय ने शैक्षणिक उत्कृष्टता, खेलकूद, उद्यमिता विकास और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रतिबद्ध, यह संस्थान अपने छात्रों, समुदाय और राष्ट्र को गौरवान्वित करते हुए ज्ञान, आस्था और सेवा का एक अद्वितीय केंद्र बना रहेगा, जिस पर हम सब गर्व कर सकते हैं।

हेम कुमार गहतोड़ी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

शिक्षा में समावेशिता और विषय प्रवृत्तियाँः बनबसा महाविद्यालय के प्रवेश आँकड़ों का अध्ययन–
''ज्ञान का प्रसार, अवसरों का विस्तार''

प्रवेश आँकड़ों का श्रेणीवार आख्यायनात्मक विश्लेषण (2014–2025) : राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत में सत्र 2014–15 से 2024–25 तक के श्रेणीवार नामांकन आँकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि महाविद्यालय ने सामाजिक समावेशिता के सिद्धांतों को अपनाते हुए सभी सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए हैं। यह आँकड़ा न केवल शैक्षणिक प्रवृत्तियों की गहन समझ प्रस्तुत करता हैं, बल्कि इससे यह भी स्पष्ट होता है कि छात्र–छात्राओं की विषय चयन की प्राथमिकताएँ, लैंगिक भागीदारी, तथा सामाजिक विविधता किस प्रकार महाविद्यालय की नीति और वातावरण को प्रभावित कर रही है।

इस कालावधि के आँकड़े यह संकेत देते हैं कि महाविद्यालय शैक्षणिक समावेशन और समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में एक सशक्त उदाहरण बनकर उभरा है। साथ ही, यह विश्लेषण भविष्य में नीति–निर्माण, सुविधा–विकास, और शैक्षणिक योजना के लिए एक उपयोगी दिशा प्रदान कर सकता है।

राजकीय महाविद्यालय बनबसा में वर्ष 2014–15 से लेकर 2024–25 तक के प्रवेश आँकड़ों का विश्लेषण न केवल शैक्षणिक रुझानों की गहराई से समझ प्रदान करता है, बल्कि यह सामाजिक समावेशन, विषय–चयन की प्राथमिकता और लैंगिक सहभागिता के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण दिशा भी दर्शाता है।

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चंपावतः प्रवेश का विश्लेषणात्मक परिदृश्य (2014–15 से 2024–25)

सारणी 1. राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चंपावतः जाति–वर्ग और लिंग के आधार पर वर्षवार प्रवेश डेटा (2014–15 से 2024–25)

YEAR	CLASS	GEN		SC		ST		OBC		OTHERS		TOTAL		NET TOTAL
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	
2014-15	I YEAR	19	8	2	6	1	0	8	13	0	0	30	27	57
2015-16	I YEAR	9	9	7	6	0	0	4	7	0	0	20	22	42
	II YEAR	3	3	0	3	1	0	0	7	0	0	4	13	17
	TOTAL	12	12	7	9	1	0	4	14	0	0	24	35	59
2016-17	I YEAR	5	13	2	6	0	0	4	2	0	0	11	21	32
	II YEAR	5	3	0	3	0	0	2	4	0	0	07	10	17
	III YEAR	1	3	0	3	0	0	0	7	0	0	11	13	14
	TOTAL	11	19	2	12	0	0	6	13	0	0	19	44	63
2017- 18	SEM. I	17	13	13	11	0	0	2	3	3	2	35	29	64
	SEM. III	3	4	2	6	0	0	2	3	3	3	16	10	26
	III YEAR	4	3	0	3	0	0	2	4	0	1	6	11	17
	TOTAL	24	20	15	20	0	0	6	13	0	0	34	58	107
2018- 19	SEM. I	20	26	8	19	0	0	6	13	0	0	14	26	92
	SEM. III	7	12	5	10	0	0	2	3	0	1	6	14	40
	SEM. V	3	8	2	1	0	0	1	4	0	1	6	14	20
	TOTAL	30	46	15	30	0	0	9	20	0	2	54	98	152
2019- 20	SEM. I	27	41	16	17	4	3	4	16	2	10	53	87	140
	SEM. III	18	26	9	18	0	0	5	9	0	5	32	58	90
	SEM. V	10	11	5	10	0	0	2	2	0	2	17	25	42
	TOTAL	55	78	30	45	4	3	11	27	2	17	102	170	272
2020- 21	SEM. I	34	41	16	14	1	3	11	9	0	0	62	67	129
	II YEAR	16	20	6	13	0	2	2	25	0	0	24	60	84
	SEM. V	8	23	6	13	0	0	2	8	0	0	16	44	60
	TOTAL	58	84	28	40	1	5	15	42	0	0	102	171	273
2021- 22	SEM. I	22	36	16	26	1	2	17	7	0	0	56	71	127
	SEM. III	20	32	13	12	2	1	10	17	0	0	45	62	107
	III YEAR	14	18	6	13	0	2	2	25	0	0	22	58	80
	II YEAR	2	4	0	0	0	0	0	0	0	0	2	4	06
	TOTAL	58	90	35	51	3	5	29	49	0	0	125	195	320
2022- 23	SEM. I	32	32	12	29	3	2	9	0	0	56	82	82	138
	SEM. III	22	12	16	23	1	1	13	0	0	52	45	45	97
	III YEAR	1	2	0	0	0	1	0	0	0	1	3	03	04
	SEM. V	17	29	10	13	0	0	7	0	0	34	52	52	86
	TOTAL	72	75	38	65	4	4	29	0	0	143	182	182	325
2023- 24	SEM. I	30	21	18	41	0	1	10	0	0	58	73	73	131
	SEM. III	14	27	7	17	3	1	7	0	0	31	61	61	92
	SEM. V	32	6	8	21	1	2	2	0	0	43	43	43	86
	TOTAL	76	54	33	79	4	4	19	0	0	132	177	177	309
2024- 25	SEM. I	41	50	18	41	0	1	10	0	0	69	102	102	171
	SEM. III	22	22	8	21	1	2	2	0	0	33	59	59	92
	SEM. V	14	22	7	17	3	1	7	0	0	31	56	56	87
	TOTAL	77	94	33	79	4	4	19	0	0	133	217	217	350

*GEN- General, SC-Scheduled Caste, ST-Scheduled Tribe, OBC-Other Backward Class, OTHERS-Others (Minorities, PwD), M- Male, F=Female

राजकीय महाविद्यालय बनबसा में पिछले एक दशक (2014–15 से 2024–25) के दौरान प्रवेश के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर छात्र नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि और बदलती सामाजिक–शैक्षिक प्रवृत्तियों का पता चलता है। प्रस्तुत आंकड़े विभिन्न जाति, वर्गों (सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अन्य) में पुरुष और महिला छात्रों के वर्ष–वार प्रवेश को दर्शाते हैं, जो महाविद्यालय के विकास और शैक्षिक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हैं।

कुल नामांकन की प्रवृत्तिः एक सतत वृद्धिः

महाविद्यालय में छात्रों का कुल नामांकन 2014–15 में मात्र 57 छात्रों से बढ़कर 2024–25 में 350 तक पहुंच गया है। यह लगभग 514% की प्रभावशाली वृद्धि है, जो क्षेत्र में उच्च शिक्षा की बढ़ती मांग और महाविद्यालय की इस मांग को पूरा करने की क्षमता को दर्शाता है।

- **प्रारंभिक वर्ष (2014–17)**: इन वर्षों में नामांकन क्रमशः 57, 59 और 63 रहा, जो एक स्थिर लेकिन धीमी शुरुआत का संकेत है।
- **मध्यम चरण (2017–20)**: 2017–18 में सेमेस्टर प्रणाली की शुरुआत के साथ, नामांकन में एक महत्वपूर्ण उछाल देखा गया और यह 107 तक पहुंच गया। इसके बाद के वर्षों में यह वृद्धि जारी रही, जो 2019–20 में 272 तक पहुंच गई।
- **हाल के वर्ष (2020–25)**: कोविड–19 महामारी के बावजूद, महाविद्यालय ने अपनी विकास गति को बनाए रखा। 2021–22 में नामांकन 320, 2022–23 में 325 और 2024–25 में यह 350 के शिखर पर पहुंच गया। यह दर्शाता है कि महाविद्यालय क्षेत्र के छात्रों के लिए एक पसंदीदा विकल्प बना हुआ है।

वर्ग–वार प्रवेश का विश्लेषणः एक मिश्रित तस्वीरः

विभिन्न सामाजिक वर्गों के प्रवेश के आंकड़ों का विश्लेषण एक मिश्रित प्रवृत्ति को उजागर करता हैः

- **सामान्य वर्ग (GEN)**: सामान्य वर्ग में छात्रों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। 2014–15 में जहां इस वर्ग से 27 छात्र (19) पुरुष, 8 महिला) थे, वहीं 2024–25 में यह संख्या बढ़कर 171 (77 पुरुष, 94 महिला) हो गई है। विशेष रूप से, महिला छात्रों के नामांकन में पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक वृद्धि देखी गई है, जो महिला शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को इंगित करता है।
- **अनुसूचित जाति (SC)**: अनुसूचित जाति के छात्रों का नामांकन भी लगातार बढ़ा है। 2014–15 में 8 छात्रों (2) पुरुष, 6 महिला) से यह संख्या 2024–25 में 112 (33 पुरुष, 79 महिला) हो गई है। इस वर्ग में भी महिला छात्रों का प्रवेश पुरुष छात्रों से कहीं अधिक है, जो शैक्षिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।
- **अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)**: अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों के प्रवेश में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2014–15 में 21 छात्रों (8 पुरुष, 13 महिला) से बढ़कर 2024–25 में यह संख्या 59 (19 पुरुष, 40 महिला) हो गई है। यहाँ भी महिला छात्रों की संख्या पुरुषों से अधिक है।
- **अनुसूचित जनजाति (ST)**: अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन तुलनात्मक रूप से कम रहा है, लेकिन इसमें भी वृद्धि हुई है। 2014–15 में केवल 1 पुरुष छात्र था, जबकि 2024–25 में यह संख्या 8 (4 पुरुष, 4 महिला) हो गई है। इस वर्ग में लैंगिक समानता की स्थिति बेहतर दिखाई देती है।

लैंगिक विश्लेषणः महिला शिक्षा का बढ़ता ग्राफ : दशक भर के आंकड़ों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू महिला छात्रों के नामांकन में असाधारण वृद्धि है।

कुल महिला नामांकनः 2014–15 में कुल 27 महिला छात्रों की तुलना में, 2024–25 में यह आंकड़ा 217 तक पहुंच गया है, जो लगभग 704% की वृद्धि है।

कुल पुरुष नामांकन% इसी अवधि में, पुरुष छात्रों का नामांकन 30 से बढ़कर 133 हो गया है, जो लगभग 343% की वृद्धि है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि महाविद्यालय महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लगभग हर वर्ग में, महिला छात्रों की संख्या पुरुष छात्रों से अधिक है, जो सामाजिक प्रगति और उच्च शिक्षा तक महिलाओं की बेहतर पहुंच का प्रमाण है।

निष्कर्ष : राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चंपावत ने पिछले दशक में शैक्षिक पहुंच का विस्तार करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। कुल नामांकन में लगातार वृद्धि, विशेषकर महिला छात्रों और आरक्षित वर्गों के छात्रों के प्रवेश में बढ़ोतरी, महाविद्यालय की सफलता और क्षेत्र पर इसके सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करती है। यह विश्लेषण न केवल महाविद्यालय की विकास गाथा को प्रस्तुत करता है, बल्कि भविष्य की शैक्षिक नीतियों और योजनाओं के लिए एक महत्वपूर्ण आधार भी प्रदान करता है ताकि समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को और मजबूत किया जा सके।

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत
'वर्षवार कुल प्रवेश आँकड़े'

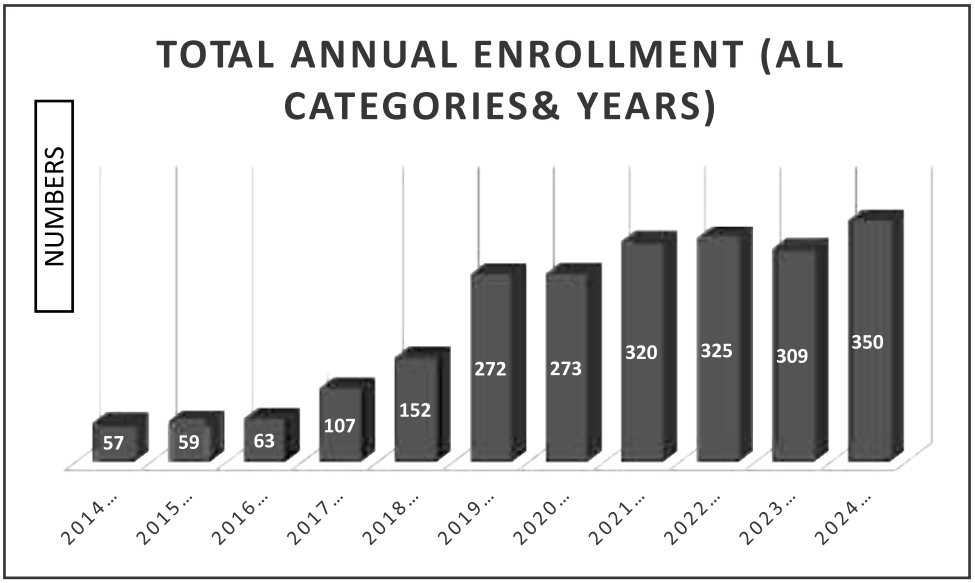

सारणी 2. राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चंपावतः जाति वर्ग के आधार पर वर्षवार प्रवेश आँकड़ा (2014–15 से 2024–25) (कुल नामांकन प्रतिशत पर)

YEARS	GEN (%)	SC (%)	ST (%)	OBC (%)	OTHERS (%)
2014-15	47.4	14.0	1.8	36.8	0.0
2015-16	40.7	27.1	1.7	30.5	0.0
2016-17	47.6	22.2	0.0	30.2	0.0
2017-18	41.1	32.7	0.0	15.0	5.6
2018-19	50.0	29.6	2.0	19.1	1.3
2019-20	48.9	27.6	2.6	14.0	6.2
2020-21	52.0	24.9	2.2	20.9	0.0
2021-22	46.2	26.9	2.5	24.4	0.0
2022-23	45.2	31.7	2.5	20.6	0.0
2023-24	42.1	36.2	2.6	19.1	0.0
2024-25	48.9	32.0	2.3	16.9	0.0

जाति वर्ग आधारित प्रतिशत नामांकन प्रवृत्तियों का विश्लेषण (2014–2025)

इस अध्ययन में 2014–15 से 2024 25 तक महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के नामांकन का जातिवार विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। पाँच प्रमुख वर्गों – सामान्य (GEN), अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), तथा अन्य (OTHERS) – के प्रतिशत नामांकन के आधार पर वर्षवार प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

1. सामान्य वर्ग (GEN) – प्रवेश रुझानः

सामान्य वर्ग के छात्रों की भागीदारी पूरे दशक में प्रमुख रही है।

- 2014–15 में 47.4% नामांकन सामान्य वर्ग से था।
- 2020–21 (52%) और 2015–16 (40.7%) के बीच उतार–चढ़ाव देखा गया।

हाल के वर्षों (2022–23 से 2024–25) में यह लगभग 45% से 49% के बीच स्थिर है।

विश्लेषणः यह बताता है कि सामान्य वर्ग अभी भी कॉलेज में प्रवेश लेने वाले छात्रों का बड़ा हिस्सा बना हुआ है, जो क्षेत्र की सामाजिक संरचना में उनकी सघनता को भी दर्शाता है।

2. अनुसूचित जाति (SC)– प्रवेश रुझानः

SC वर्ग का प्रतिशत पिछले वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है।

- 2014–15 में 14% नामांकन था, जो 2023–24 में 36.2% तक पहुंच गया।
- 2018–19 (29.6%), 2020–21 (24.9%), 2022–23 (31.7%), और 2024–25 (32%) में भी अच्छी भागीदारी रही।

विश्लेषणः यह रुझान बताता है कि ै वर्ग के छात्र शिक्षा के प्रति अधिक जागरुक हुए हैं और सरकारी योजनाओं (जैसे छात्रवृत्ति, आरक्षण) का लाभ उठाकर उच्च शिक्षा में आगीदारी बढ़ा रहे हैं।

3. अनुसूचित जनजाति (ST)– प्रवेश रुझानः

ST वर्ग की भागीदारी सीमित रही है।

- अधिकतम भागीदारी 2020–21 और 2021–22 में (5%) तक रही।
- 2014–15 में केवल 1.8% और 2023–24 व 2024–25 में 2.3%– 2.6% के बीच रही।

विश्लेषणः क्षेत्र में जनजातीय आबादी अपेक्षाकृत कम है या शिक्षा के प्रति रुझान में अभी भी कमी है। इस वर्ग के लिए विशेष प्रेरणादायक कार्यक्रमों और शैक्षिक सहायता की आवश्यकता

4. अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) – प्रवेश रुझानः

OBC वर्ग की हिस्सेदारी 2014–15 में 36.8% थी, जो धीरे–धीरे घटती गईः

- 2018–19 में 19.1%,
- 2020–21 में 20.9%,
- और 2024–25 में 16.9% रही।

विश्लेषणः OBC वर्ग की भागीदारी में गिरावट का कारण ग्रामीण युवाओं का रोजगार की ओर झुकाव या अन्य संस्थानों की ओर रुझान हो सकता है। इसमें स्थायित्व लाने के लिए जागरूकता और परामर्श की आवश्यकता है।

5. अन्य (OTHERS) – प्रवेश रुझानः

'Others' वर्ग में किसी भी वर्ष में नामांकन नगण्य रहा है।

- अधिकांश वर्षों में 0%, केवल 2017–18 और 2018–19 में 1–2% तक नामांकन हुआ।

डॉ. सुशीला आर्या
सहायक प्राध्यापिका
अर्थशास्त्र विभाग

पर्वतीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की समस्या एवं संभावना –एक परिदृश्य (अवधारणात्मक विवेचना)

मानव जाति का इतिहास वैचारिक विकास यात्रा का इतिहास रहा है। सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि विचार विषय– वस्तु है, विचार बौद्धिक क्रिया, स्मृति और कल्पना की उत्पत्ति है। उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षाविदों की राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। चिंतनशीलता मानव की विशेषता है, विचारों का तार्किक संरूपण एवं अंतः क्रियात्मक संप्रेषण मानव– समाज तथा उसकी सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के निर्माण एवं विकास की आधारभूत प्रक्रिया है। शिक्षा मानव विकास का प्रमुख अभियंत्र है, किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति के गुण एवं संभावनाओं को विकसित करने की सतत प्रक्रिया है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के जीवन यापन का साधन है वरन भावी जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करती है। शिक्षा ऊर्ध्व सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने में मदद भी करती है।

भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का संवर्धन उन्नयन तीव्र गति से हुआ है। पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित राज्यों में उत्तराखंड नवोदित राज्य है, राज्य निर्माण के 24 वर्षों के दौरान उच्च शिक्षा की एक मूलभूत संरचना तैयार हो रही है। विकास एवं प्रगति के लिए ज्ञान एवं कौशल व्यापक जनसंचार के माध्यम से मानव संसाधनों का सशक्तिकरण परम आवश्यक है। शिक्षा ज्ञान एवं कौशल के द्वारा व्यक्तियों को सक्षम बनाकर उन्हें उत्पादन, रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए योग्य बनाती है, इस कारण शिक्षा में होने वाला व्यय वियोग (Investment) के सापेक्ष समझा जाता है।

आज दुनिया एक नए दौर से गुजर रही है। उदारीकरण, मुक्त बाजार व्यवस्था ,वैश्वीकरण, विश्व– प्रौद्योगिकी का एकीकरण आदि प्रक्रियाएं वैश्विक समाज को नई दिशा की ओर मोड़ रहे हैं। आज स्थानीय ,राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर सामंजस्य स्थापित करने की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। आज का समय सूचना और अर्थ प्रधान है, जिसके पास सूचना है, ज्ञान है, उसी के पास सृजन के स्रोत है, सूचना और ज्ञान की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। अब इंटरनेट की अपनी दुनिया बन चुकी है। यह युग सूचना–उद्योग, सूचना क्रांति और सूचना– साम्राज्य का युग है। सूचना तंत्र, कंप्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अनदेखी कर हम आगे नहीं बढ़ सकते। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मुद्दों पर मानवीय संवेदनाओं को जागृत कर मानवता को प्रबोधित कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का अवसर उपलब्ध कराने वाली उच्च शिक्षा वैश्वीकरण एवं उदारीकरण से ओत–प्रोत वर्तमान तीव्र परिवर्तनशील परिवेश में नवीन अवसरों एवं चुनौतियों (Opportunities and Challenges) के ऐसे दौर से गुजर रही है, जिसमें एक ओर उच्च शिक्षा के प्रति बढ़ती जन –चेतनाओं एवं आकांक्षाओं से वर्तमान संरचना पर बढ़ते दबाव का सामना करना है तो वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा एवं गुणवत्ता की विश्व व्यापी वातावरण में ज्ञान सृजन के द्वारा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ एवं क्षमताएं अर्जित करने के अवसरों को प्राप्त करना भी आवश्यक हो गया है। विगत पंचवर्षीय योजनाओं में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है किंतु साथ ही उच्च शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था, उच्च शिक्षा की पहुंच (Access), समता (Equity), प्रासंगिकता (Relevance), सुशासन (Good Governance) जैसे तत्वों पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दे रही है।

प्रो. (डॉ.) आनन्द प्रकाश सिंह
प्राचार्य

जीव–जगत और मानव

ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। यह सर्वत्र, सर्वदा और सर्वजन सुलभ है। हमारी त्रुटियाँ भी हमें चिरंतन बोध प्रदान करती हैं। वस्तुतः, गुरु, ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान अर्जन की एक चिरंतन परंपरा है। भारतीय ज्ञान–विमर्श में सृष्टि के प्रत्येक अवयव को एक आध्यात्मिक आयाम प्रदान किया गया है। जीव–जंतु केवल भौतिक सत्ताएँ नहीं हैं, अपितु वे ब्रह्मांडीय चेतना के प्रतीक हैं।

भारतीय ज्ञान–परंपरा में सृष्टि के प्रत्येक घटक, यथा वृक्ष–वनस्पति, फल–पुष्प, जीव–जंतु, नभ–जल आदि का समावेश है। हमारी संस्कृति में देवों के साथ भी जीव–जंतुओं का उल्लेख मिलता है। मानव भी जीव–जंतुओं के साथ सह–अस्तित्व में रहते हैं, और वे सभी इस धरा पर एक–दूसरे के सहभागी हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है **'मम माया संभव संसारा, जीव चराचर विविध प्रकारा'** अर्थात् भगवान कहते हैं कि मैंने इस सृष्टि पर विविध प्रकार के जीव उत्पन्न किए हैं, और वे सब मुझे प्रिय हैं। यह इस तथ्य का द्योतक है कि यह समग्र सृष्टि एक दिव्य नाटक का रंगमंच है, जिसमें प्रत्येक जीव एक पात्र है। यह दृष्टिकोण भारतीय दर्शन के पंचतत्व सिद्धांत से भी साम्य रखता है, जिसके अंतर्गत जीव–जंतुओं को पंचमहाभूतों के संयोग से उद्भूत माना गया है।

रामचरितमानस की एक कथा के अनुसार, भगवान गरुड़ रामकथा श्रवण हेतु भगवान काकभुशंडी के समीप जाते हैं। गरुड़ जी कहते हैं कि हे पक्षिराज, हरि–भजन के बिना अंतःकरण का कलेश दूर नहीं हो सकता। महर्षि वाल्मीकि ने भी रामायण कथा का प्रारंभ क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े को निहारते हुए ही किया था। यदि विचार करें, तो विहंगों ने भी हरि अर्थात् भगवान की कथाएँ सुनी हैं, और इन कथाओं का श्रवण कर वे भवसागर से पार हो गए, आवागमन के चक्र से मुक्त हो गए। श्रीमद्भागवत कथा में भी एक शुक भगवान शंकर द्वारा कथित अमरकथा को सुनकर अमर हो जाता है। कथा श्रवण कर जीव–जंतु, पशु–पक्षी अमर तो हुए ही, साथ ही वे भगवान के साथ भी रहते हैं, उनके परिवार का अभिन्न अंग हैं।

भगवान शंकर के परिवार में भी मूषक, मयूर, सर्प और नंदी सभी विद्यमान हैं। श्रीराम वन में गमन करते समय वानर, भालू, गिलहरी, गिद्धराज जटायु आदि अनेक जीव–जंतुओं से मिलते हैं और उनका उद्धार करते हैं। ये सभी जीव श्रीराम के जीवन और रामकथा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र में भी ग्वाल–बालों संग गोचारण और बाललीला का वर्णन मिलता है। उन्होंने मयूर–पंख से मंडित मयूर–मुकुट अपने मस्तक पर धारण किया है।

धर्मराज युधिष्ठिर की बात करें, तो मोक्ष–मार्ग पर अंतिम समय में उनके साथ एक श्वान जाता है। श्वान को बड़े–बुजुर्ग **''बिन झोली का फकीर''** भी कहते हैं। माता शेरावाली का वाहन सिंह है, और माँ लक्ष्मी का वाहन उल्लू है।

पौराणिक कथाओं में एक गज की कथा भी वर्णित है। गज के पैर को मगरमच्छ पकड़ लेता है, और गज भगवान हरि अर्थात् विष्णु को पुकारता है। भगवान विष्णु अपने सुदर्शन चक्र से उस मगर का वध करते हैं, और कथा पूर्ण होती है। विचार करें, तो भगवान जीव–रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। कहा भी गया है, ''ईश्वर के सब अंश हैं, कीरी कुंजर दोय। अर्थात् चींटी से लेकर हाथी तक, सृष्टि में सभी ईश्वर की रचना के भाग हैं। हमें ईश्वर की संरचना को खंडित नहीं करना है, अपितु ईश्वर की इस रचना में सभी के साथ सौहार्दपूर्ण सह–अस्तित्व बनाए रखना है, अपनी रक्षा के साथ–साथ इन सभी की रक्षा करनी है।

निष्कर्ष : समस्त जीवों के प्रति आदर और करुणा रखना ही सच्ची धर्मनिष्ठा है। हमें सभी जीवों को समान अधिकार देना चाहिए और उनके साथ प्रेम एवं सहकार से रहना चाहिए। सभी जीव, चाहे वे मानव हों या पशु–पक्षी, एक ही सृष्टि के भाग हैं। सभी जीवों में एक आध्यात्मिक मूल है, और वे सभी एक–दूसरे से अंतरसंबंधित हैं।

हेम कुमार गहतोड़ी

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि ''यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई देश हैं जिसे हम पुण्यभूमि कह सकते हैं यदि कोई ऐसा स्थान है जहाँ पृथ्वी के सब जीवों को अपना कर्मफल भोगने को आना पड़ता हैं जहाँ भगवान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखनेवाले जीवमात्र को आना होगा और यदि कोई देश हैं जहाँ मानव– जाति के भीतर क्षमा, धृति, दया, शुद्धता, आदि सद्‌वृत्तियों का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ हो तो मैं निश्चित रूप से कहूँगा कि वह हमारी मातृभूमि भारतवर्ष ही हैं।''

हमारे देश का नामकरण : हमारे देश का नाम भारत या भारतवर्ष हैं पहले इसका नाम आर्यावर्त था कहा जाता हैं कि महाराजा दुष्यंत और शकुंतला के न्यायप्रिय पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम ''भारत'' प्रसिद्ध हुआ। भारत देश हमारे, लिए स्वर्ग के समान सुंदर हैं। इसने हमें जन्म दिया हैं इसकी गोद में पलकर हम बड़े हुए हैं इसके अन्न – जल से हमारा पालन – पोषण हुआ हैं, इसीलिए हमारा कर्तव्य हैं कि हम इसे प्यार करें, इसे अपना समझे।

आधुनिक भारत उत्तर में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ हैं उत्तर में भारत माता के सिर पर हिममुकुट के समान हिमालय सुशोभित हैं, दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरणों को निरंतर धोता रहता हैं। मेरा प्यारा भारत संसार के बड़े राष्ट्रों में से एक है यह संसार का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक राष्ट्र है, जनसंख्या की दृष्टि से इसका विश्व में प्रथम स्थान है यहाँ पर सभी धर्मों के लोग मिल जुलकर रहते हैं। मुसलमान, ईसाई, पारसी, बौद्ध, जैन आदि भी इसी देश के निवासी हैं और उन्हें न केवल समान अधिकार प्राप्त हैं, बल्कि सरकार द्वारा उन्हें विशेष संरक्षण भी प्रदान किया जाता हैं यहाँ सभी धर्मों के मानने वालों को यहाँ अपने व्यवसाय, उपासना पद्धति को अपनाने की पूरी स्वतंत्रता है।

यहाँ सभी अपनी सामाजिक व्यवस्था के अनुसार अपना जीवन – निर्वाह करते हैं। इसे समस्त धर्मों का संगम स्थल भी कह सकते हैं, भारत में प्रकृति – सुंदरी ने अनुपम रूप प्रदर्शित किया है। चारों ओर फैली हुई प्राकृतिक सुंदरता यहाँ बाहर से आनेवालो को मोहित करती रही है, यहाँ हिमालय पर्वतीय प्रदेश हैं, गंगा–यमुन का समतल मैदान हैं और इसके साथ ही राजस्थान का रेगिस्तान भी हैं यह वह देश जहाँ पर छहों ऋतुएं अपने – अपने समय पर आती हैं फल–फूल से भरपूर अनाज देती हैं, नदियाँ वन हरे–भरे मैदान रेगिस्तान एवं समुद्र तट इस देश की शोभा के अंग हैं। एक ओर कश्मीर में धरती का स्वर्ग दिखाई देता हैं। यहाँ अनेक नदियाँ हैं जिनमें गंगा, यमुना, कावेरी, कृष्णा, नर्मदा, रावी, व्यास आदि प्रसिद्ध हैं ये नदियाँ वर्षभर इस देश की धरती को सींचती हैं उसे हरा–भरा बनाती हैं और अन्न उत्पादन में निरंतर सहयोग करती हैं। भारत अत्यंत प्राचीन देश है यहाँ ऐसे महापुरुषों का जन्म हुआ है जिन्होंने मानव को संस्कृति और सभ्यता का पाठ पढ़ाया, यहाँ पर अनेक ऋषि–मुनियों ने जन्म लिया जिन्होंने वेदों का गान किया तथा उपनिषद, पुराणों की रचना की यहाँ पर राम जन्में उन्होंने न्यायपूर्ण शासन का आदर्श स्थापित किया, श्री कृष्ण ने गीता का ज्ञान देकर कर्म का पाठ पढ़ाया, यहाँ पर बुद्ध और महावीर ने अवतार लिया, मानव को अहिंसा की शिक्षा दी, विक्रमादित्य, चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, अकबर आदि का नाम सारे संसार में प्रसिद्ध हैं आधुनिक काल में गरीबों के मसीहा महात्मा गांधी, विश्व मानवता के प्रचारक रवींद्रनाथ टैगोर तथा शांतिदूत पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्म भी इसी महान देश में हुआ है

भारत त्याग और तपस्या की भूमि है हमारी भारतभूमि धन्य है, भारत भला किसको प्रिय न होगा। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण महान शायर इकबाल ने कहा था

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसके, यह गुलिस्तां हमारा

मानसी
B.A. III Sem.

महिला सशक्तिकरणः एक नया सवेरा

प्रस्तावना : महिला सशक्तिकरण यह केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक व्यापक अवधारणा है जो समाज के हर पहलू को प्रभावित करती है। यह महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से इतना सशक्त बनाने की प्रक्रिया है कि वे पुरुषों के समान अवसरों, अधिकारों और स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकें और अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण कर सकें। यह केवल महिलाओं के उत्थान का विषय नहीं, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने का अवसर मिलता है।

नारीः सम्मान और शक्ति का प्रतीक : सदियों से भारतीय संस्कृति में नारी को पूजनीय माना गया है। माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में उसका सम्मान होता रहा है। हमारे शास्त्रों में भी नारी को शक्ति के विभिन्न रूपों में देखा गया हैः–

नारी तुम हो श्रद्धा, नारी तुम हो शक्ति, तुमसे ही है सृष्टि, तुमसे ही है भक्ति।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि बदलते समय के साथ, महिलाओं को अक्सर कमजोर समझा जाने लगा और उन्हें मिलने वाला महत्व कम कर दिया गया। यह चिंताजनक स्थिति है कि हम अपनी जननी और प्रथम गुरु को वह सम्मान नहीं दे पाए जिसकी वे वास्तव में हकदार हैं। जैसा कि कहा गया हैः **''माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती की चाहे कितनी भी पूजा कर लें या फिर दिन का उपवास रख लें, लेकिन अगर नारी की इज्जत करना ही नहीं सीखोगे तो सब बेकार है।''**

राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका : कोई भी देश तब तक प्रगति के शिखर पर नहीं पहुँच सकता जब तक उसकी महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर न चलें। आज की नारी केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है। वह पढ़–लिखकर स्वतंत्र है. अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, और स्वयं अपने निर्णय लेने में सक्षम है। महिलाएँ अब महत्वपूर्ण कार्यों में योगदान दे रही हैं और हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर रही हैं। विभिन्न परीक्षाओं में, चाहे वह पुलिस हो या शिक्षक, ज्यादातर लड़कियाँ ही बाजी मार रही हैं। खेल के मैदान से लेकर अंतरिक्ष तक, महिलाएँ हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं और नए इतिहास रच रही हैं।

उड़ान भर रही है नारी, छू रही है आकाश, हर क्षेत्र में कर रही है, अपने सपनों को साकार।

महिलाएँ राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं और उनके योगदान के बिना किसी भी राष्ट्र का पूर्ण विकास संभव नहीं है। जब महिलाएँ सशक्त होती हैं, तो वे न केवल अपने लिए बल्कि अपने परिवार और समाज के लिए भी बेहतर भविष्य का निर्माण करती हैं। सशक्तिकरण के माध्यम से ही महिलाएँ बंधनों से मुक्त होकर अपनी निजी स्वतंत्रता और निर्णयों पर अधिकार प्राप्त कर सकती हैं। यह हम सबकी पुकार है कि नारी को शिक्षा का अधिकार मिले। और केवल शिक्षा ही नहीं, उनका सम्मान भी होना चाहिए।

हजारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए, हजारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए,
पर एक स्त्री चाहिए घर को स्वर्ग बनाने के लिए।

सकारात्मक बदलाव और भविष्य की राह : महिला सशक्तिकरण के कारण समाज में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं। महिलाएँ अपनी जिंदगी से जुड़े फैसले खुद कर रही हैं. और पुरुष भी महिलाओं को समझने लगे हैं। हमें महिलाओं को कमजोर समझने की बजाय उनकी मेहनत और प्रतिभा का सदैव सम्मान करना चाहिए। महिलाओं को सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं. चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या विवाह का। हमें बाल विवाह जैसी प्रथाओं को रोकने का अधिकार भी है और उनका सम्मान करना चाहिए।

जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है।

महिला सशक्तिकरण केवल एक अवधारणा नहीं है. बल्कि एक आवश्यकता है। यह एक ऐसा मार्ग है जो हमें एक ऐसे समाज की ओर ले जाएगा जहाँ लैंगिक समानता होगी और सभी को सम्मान और अवसर मिलेंगे। महिलाओं का सम्मान करना और उन्हें सशक्त बनाना ही एक प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र की पहचान है। महिलाएँ ही ईश्वर का रूप होती हैं और उन्हें सम्मान से बढ़कर कुछ नहीं चाहिए होता है।

निष्कर्ष : आज के आधुनिक युग की नारी पढ़–लिखकर स्वतंत्र है, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, और स्वयं निर्णय लेती है। अब वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष और महत्वपूर्ण कार्य करती है। महिला सशक्तिकरण के अभाव में समाज में नारी को वह स्थान नहीं मिल सकता जिसकी वह हमेशा हकदार रही है। आइए हम सब मिलकर इस नए सवेरे का स्वागत करें, जहाँ हर नारी सशक्त हो, स्वतंत्र हो, और अपने सपनों को पूरा कर सके।

सोनी
B.A. II Year

बेरोजगारीः सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ

बेरोजगारी किसी भी राष्ट्र के लिए एक गंभीर चुनौती है, जो न केवल व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था पर भी गहरा नकारात्मक प्रभाव डालती है। यह एक ऐसी स्थिति है जब कोई व्यक्ति काम करने का इच्छुक और सक्षम होने के बावजूद रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता। इसके बहुआयामी प्रभावों को समझना अत्यंत आवश्यक है।

1. व्यक्तिगत एवं आर्थिक प्रभावः बेरोजगारी का सबसे तात्कालिक और प्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्ति और उसके परिवार पर पड़ता है।

- **आर्थिक संकटः** रोजगार न होने पर व्यक्ति आय से वंचित रह जाता है, जिससे परिवार के लिए भोजन, वस्त्र, आवास. शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कठिन हो जाती है। यह परिवार को गरीबी की ओर धकेलता है और जीवन स्तर में भारी गिरावट आती है।
- **मानसिक तनावः** आय की अनिश्चितता और भविष्य की चिंताएँ व्यक्ति में गहन मानसिक तनाव, चिंता, निराशा और अवसाद का कारण बनती हैं। यह आत्म–सम्मान में कमी लाता है और व्यक्ति खुद को समाज पर बोझ समझने लगता है।

2. सामाजिक प्रभावः बेरोजगारी केवल व्यक्तिगत समस्या न होकर एक व्यापक सामाजिक समस्या भी है।

- **सामाजिक अशांतिः** बड़े पैमाने पर बेरोजगारी से समाज में असंतोष, हताशा और अशांति बढ़ती है। यह सामाजिक वैमनस्य और विघटन को जन्म दे सकती है।
- **अपराध में वृद्धिः** आर्थिक तंगी और निराशा के कारण कुछ लोग अनैतिक या आपराधिक गतिविधियों में लिप्त हो सकते हैं. जिससे समाज में अपराध दर में वृद्धि हो सकती है।
- **कौशल का अपव्ययः** जब शिक्षित और कुशल व्यक्ति बेरोजगार रहते हैं, तो उनकी क्षमताओं और ज्ञान का उपयोग नहीं हो पाता, जो देश के मानव संसाधन का एक बड़ा अपव्यय है।

3. राष्ट्रीय एवं आर्थिक विकास पर प्रभावः बेरोजगारी का सीधा असर देश के आर्थिक विकास और प्रगति पर पड़ता है।

- उत्पादन में कमीः कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा निष्क्रिय रहने से राष्ट्रीय उत्पादन और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कमी आती है।
- **राजस्व में गिरावटः** लोगों के पास आय न होने से सरकार को करों से प्राप्त होने वाले राजस्व में कमी आती है. जिससे विकास कार्यों के लिए धन की उपलब्धता प्रभावित होती है।
- **मानव पूंजी का क्षरणः** दीर्घकालिक बेरोजगारी से व्यक्ति के कौशल में जंग लग जाती है. जिससे मानव पूंजी का क्षरण होता है।
- **समाधान की दिशाः** बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए सरकार और निजी क्षेत्र दोनों को मिलकर समन्वित प्रयास करने होंगे।
- **कौशल विकासः** युवाओं को उद्योग की जरूरतों के अनुरूप कौशल प्रदान करना।
- **उद्यमिता को बढ़ावाः** स्वरोजगार और नए व्यवसायों को शुरू करने के लिए अनुकूल माहौल बनाना।
- **निवेश को प्रोत्साहनः** नए उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देना जिससे रोजगार के नए अवसर सृजित हों।
- **शिक्षा प्रणाली में सुधारः** शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और रोजगारोन्मुखी बनाना।

संक्षेप में, बेरोजगारी एक बहुआयामी चुनौती है जिसके समाधान के लिए समग्र दृष्टिकोण और दीर्घकालिक रणनीतियों की आवश्यकता है ताकि एक समृद्ध और स्थिर समाज का निर्माण हो सके।

पूनम
B.A. I Sem.

संस्कृत विभाग – परिचयः एक साहित्यिक दृष्टि

उत्तराखण्ड की रमणीय उपत्यकाओं के मध्य, चम्पावत जनपद के हृदय में स्थित, राजकीय महाविद्यालय बनबसा का संस्कृत विभाग, ज्ञान की सनातन धरोहर का एक प्रदीप्त प्रकाश स्तम्भ है। 4 मार्च 2014 को संस्थापित यह विभाग, वर्तमान में स्नातक स्तर पर जिज्ञासु अध्येताओं को संस्कृत वाङ्मय के विविध गौरवशाली आयामों से सम्यक् रूपेण परिचित करा रहा है। विभाग के कुशल नेतृत्व का दायित्व प्रो० (डॉ०) मुकेश कुमार ने एल०एस०एम० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़ से स्थानान्तरित होकर सुशोभित किया है।

यह विभाग न केवल विद्यार्थियों को देववाणी संस्कृत की अप्रतिम माधुरी, साहित्य की असीम गरिमा, व्याकरण की गहन सूक्ष्मता एवं भारतीय संस्कृति की शाश्वत उदात्तता व गहनता का सम्यक बोध कराता है, अपितु उन्हें इन कालातीत जीवन–मूल्यों को आत्मसात् कर, समाज में उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भी निरन्तर अभिप्रेरित करने के प्रति कृतसंकल्प है। संस्कृत साहित्य में संचित ज्ञान–विज्ञान की अक्षय निधि के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से अनुप्राणित एक आदर्श समाज के निर्माण के प्रति पूर्णतः कटिबद्ध, यह संस्कृत विभाग भाषा एवं संस्कृति के सतत उत्कर्ष हेतु अनवरत साधना में संलग्न है। विद्यार्थियों के हृदय–पटल पर देववाणी संस्कृत के प्रति अकृत्रिम अनुराग अंकित करना तथा उन्हें वैदिक, लौकिक एवं समकालीन संस्कृत साहित्य की अमृतमयी त्रिवेणी से सम्बद्ध कर उनकी प्रज्ञा को परिष्कृत करना ही विभाग का केन्द्रीय ध्येय एवं अभीष्ट है।

दूरगामी दृष्टिकोण एवं व्यापक लक्ष्य : उत्तराखण्ड राज्य की द्वितीय राजभाषा के उच्चासन पर प्रतिष्ठित, विश्व की प्राचीनतम जीवन्त भाषा संस्कृत में निहित ज्ञान–विज्ञान के अगाध रत्नाकर का संरक्षण एवं संवर्धन तथा इस देवभाषा के गौरवमयी उदात्त जीवन–मूल्यों को नवीन पीढ़ी के मानस पटल पर स्थायी रूप से प्रतिष्ठित कर उन्हें समकालीन आवश्यकताओं एवं वैश्विक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में सार्थकतापूर्वक प्रस्तुत करना ही संस्कृत विभाग का दूरगामी एवं व्यापक दृष्टिकोण है। इसी परिप्रेक्ष्य में, विभाग छात्रों को दैनन्दिन व्यवहार में अधिकाधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करता है, जिससे यह दिव्य भाषा उनके जीवन का सहज अंग बन सके । संस्कृत साहित्य के विविध कालजयी शास्त्रों एवं काव्य–धाराओं के गहन अनुशीलन से निःसृत सार्वभौमिक ज्ञान को समाजोपयोगी बनाना विभाग का महनीय लक्ष्य रहा है। इसके माध्यम से मानवीय संवेदनाओं का उन्नयन, उदात्त विचारों का संचार, सामाजिक समरसता का दृढ़ीकरण, तथा शाश्वत मानव मूल्यों का संरक्षण सुनिश्चित करने का अनवरत प्रयास किया जाता है। इस विभाग से स्नातक विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्ययन से उद्भूत धर्म, दर्शन, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद एवं प्राचीन भारतीय इतिहास की महनीय गरिमा से गहनतापूर्वक परिचित होते हैं, और भारतीय संस्कृति की अतुलनीय महत्ता का अनुभव कर उसे अपने जीवन–दर्शन में श्रद्धापूर्वक समाहित करते हैं। परिणामस्वरूप, वे भौतिकता के मध्य भी मानवता के शाश्वत मूल्यों से आलोकित पथ पर आत्मविश्वास पूर्वक अग्रसर हो रहे हैं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ एवं अकादमिक उपलब्धियाँ : विभाग में वैदिक साहित्य की ऋचाओं, संस्कृत नाट्यशास्त्र की जीवन्त अभिनय–परम्परा, एवं संस्कृत काव्य की रसमयी रसधारा सरीखे गहन विषयों का तलस्पर्शी अध्ययन–अध्यापन तो होता ही है, साथ ही नियमित परीक्षाओं एवं वस्तुनिष्ठ आन्तरिक मूल्यांकनों के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक प्रगति का सूक्ष्म आकलन भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति नैसर्गिक अनुराग एवं प्रभावी सम्भाषण कौशल विकसित करने के पुनीत उद्देश्य से समय–समय पर संस्कृत–सम्भाषण–शिविरों, शुद्ध एवं लयबद्ध

श्लोकोच्चारण सत्रों तथा सारगर्भित मौलिक निबन्ध–लेखन प्रतियोगिताओं का भी सफलतापूर्वक आयोजन किया जाता रहा है. जो उनकी प्रतिभा को पुष्पित एवं पल्लवित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

विभाग की शोध–प्रतिभा एवं अकादमिक उत्कृष्टता उल्लेखनीय है। आचार्य (डॉ०) मुकेश कुमार के प्रबुद्ध एवं कुशल निर्देशन में शोधार्थी कुमारी नीमा जोशी ने महाकवि भास विरचित रूपकों में नारी–विमर्श जैसे समकालीन एवं महत्वपूर्ण विषय पर गहन, मौलिक एवं प्रशंसनीय अनुसंधान सम्पन्न कर 22 अक्टूबर 2018 को डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी०एच०डी०) की प्रतिष्ठित शोध–उपाधि अर्जित की। इससे पूर्व भी 03 शोधार्थी इस प्रतिष्ठित शोध–उपाधि से सम्मानित हो चुके हैं. जिनमें से दो उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड के अन्तर्गत राजकीय महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर के पदों पर कार्यरत हैं। यह उपलब्धि विभाग की अकादमिक गंभीरता एवं शोध–संस्कृति के प्रति समर्पण का ज्वलन्त उदाहरण है।

मान्यता एवं सामुदायिक सहभागिता विभाग के गौरव–कलश में एक और मणि जड़ित हुई जब विभागाध्यक्ष **आचार्य (डॉ०) मुकेश कुमार को उत्तराखण्ड शासन द्वारा 4 अगस्त 2023 को उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी, हरिद्वार की प्रतिष्ठित सामान्य समिति के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।** यह मनोनयन उनकी अप्रतिम विद्वत्ता, प्रशासनिक कुशलता एवं संस्कृत–भाषा तथा साहित्य सेवा के प्रति उनके अनन्य समर्पण का प्रत्यक्ष प्रमाण एवं सम्मान है।

गत छः वर्षों में विभाग में स्नातक स्तर पर प्रविष्ट छात्र–छात्राओं की उत्साहवर्धक संख्यात्मक प्रवृत्तियाँ और उत्तीर्ण प्रतिशतता संस्कृत भाषा के प्रति युवा पीढ़ी के वर्धमान, अनुराग एवं आकर्षण को स्पष्टतः प्रतिबिम्बित करती हैं। निम्नलिखित सारणी में गत छः वर्षों के प्रविष्ट छात्र–छात्राओं का विवरण इस प्रकार है।

क्रम सं०	सत्र	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
1	2019–20	23	08	02	33
2	2020–21	12	23	05	40
3	2021–22	17	09	23	49
4	2022–23	14	14	08	36
5	2023–24	12	10	11	33
6	2024–25	10	12	05	27

राष्ट्र की प्राणवान युवा शक्ति को अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक, समृद्ध नैतिक एवं महनीय राष्ट्रीय निधियों से सुदृद्ध रूपेण सम्बद्ध करने के पवित्र उद्देश्य की पूर्ति हेतु, विभाग ने अखिल भारतीय विश्व गायत्री परिवार शान्तिकुंज, हरिद्वार के गरिमामय संरक्षण में 22 नवम्बर 2023 को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का सफलतापूर्वक आयोजन करवाया। इस ज्ञानवर्धक परीक्षा में 13 मेधावी छात्राओं ने अतीव उत्साहपूर्वक अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर न केवल अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया अपितु प्रमाण–पत्रों से भी अलंकृत हुई।

भविष्य की योजनाएँ एवं परम समर्पण : विद्यार्थियों निकट भविष्य में, यह संस्कृत विभाग विद्यार्थियों के बहुआयामी कौशल तथा भाषा–नैपुण्य के संवर्धन हेतु नूतन कार्यक्रमों का क्रियान्वयन कर उनके सर्वांगीण विकास के प्रति दृढ़प्रतिज्ञ है। देववाणी संस्कृत भाषा उसके विपुल वाङ्मय, व्याकरण, दर्शन एवं भारतीय संस्कृति के उदात्त तत्वों के अध्ययन–अध्यापन, अनुसंधान व संरक्षण–संवर्धन हेतु समर्पित यह विभाग, अध्येताओं में संस्कृत के प्रति नैसर्गिक प्रीति उत्पन्न कर उन्हें सनातन

ज्ञान–परम्परा से जोड़ना चाहता है। शिक्षण, सांस्कृतिक प्रबोधन एवं बौद्धिक विमर्श में निरंतर सक्रिय योगदान देते हुए, यह विभाग भविष्य में भारतीय संस्कृति की जड़ों को सुदृढ़ कर भावी पीढ़ियों को संस्कार–समन्वित एवं मूल्य–आधारित ज्ञान प्रदान करने के अपने पुनीत संकल्प पर अडिग रहेगा।

संस्कृत विभागीय परिषद् सत्र–2024–25

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा उत्तराखण्ड राज्य की द्वितीय राजभाषा संस्कृत के उन्नयन एवं विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरूचि एवं जागृति हेतु समय–समय पर संस्कृत भाषा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विकास हेतु संस्कृत विभाग में निबन्ध, वाद–विवाद, श्लोकोच्चारण, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, प्राचीन ज्ञान– विज्ञान, तथा अन्य विभागीय गतिविधियों के सुचारु रूप से सम्पन्न कराने के लिए दिनांक 04.02.2025 को संस्कृत विभागीय परिषद् का गठन किया। जिसमें निम्न विद्यार्थियों को सर्वसम्मति से निम्न पदों पर नामित किया गया।

संस्कृत विभागीय परिषद् विवरण

क्रम सं०	नाम	पद	कक्षा
1	कु० रीतु रानी	अध्यक्ष	पंचम सत्रार्द्ध
2	आदित्य राज ओझा	उपाध्यक्ष	पंचम सत्रार्द्ध
3	कु० दीक्षा उनियाल	सचिव	तृतीय सत्रार्द्ध
4	कु० मोहिनी	सहसचिव	पंचम सत्रार्द्ध
5	कु० सपना चन्द	कोषाध्यक्ष	प्रथम सत्रार्द्ध

प्रो. (डॉ.) मुकेश कुमार
विभागाध्यक्ष – संस्कृत

"विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्म ततः सुखम्।।"

पर्यावरण

इस धरती पर रहने वाले सभी जीव पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं, चाहे वे जमीन पर रहते हों या पानी पर वे पर्यावरण का हिस्सा हैं पर्यावरण में हवा, पानी, सूरज की रोशनी, पौधे, जानवर आदि भी शामिल हैं, इसके अलावा पृथ्वी को ब्रह्मांड में एकमात्र ऐसा ग्रह माना जाता है जो जीवन का समर्थन करता है, पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से परि और आवरण से मिलकर बना है जिसमें परि का मतलब है हमारे आसपास अर्थात जो हमारे चारो ओर है और आवरण जो हमें चारो ओर से घेरे हुए है पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनैतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस

पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण की वास्तविकता को बनाए रखना होगा, पूरे ब्रह्मांड में बस पृथ्वी पर ही जीवन है वर्षों से प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए दुनिया भर में मनाया जाता है। पर्यावरण दिवस समारोह के विषय को जानने के लिए, हमारे पर्यावरण को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाये तथा हमारी सभी बुरी आदतों के बारे मे जानने के लिए जिससे पर्यावरण को हानि पहुंचती है हम सभी को इस मुहिम का हिस्सा बनना चाहिए।

पर्यावरण सुरक्षा के उपाय

धरती पर रहने वाले सभी व्यक्तियों द्वारा, उठाये गए छोटे कदमों के माध्यम से हम बहुत ही आसान तरीके से पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते है हमें अपशिष्ट पदार्थ को वहीं फेंकना चाहिए, जहाँ उसका स्थान है प्लास्टिक बैग का उपयोग नहीं करना चाहिए तथा कुछ पुरानी चीजों को फेंकने के बजाय नये तरीके से उनका उपयोग करना चाहिए

पर्यावरण को दूषित होने से बचाने के उपाय

हम सभी को बिना देर किए अपने पर्यावरण को संरक्षित करना होगा, वृक्ष कार्बन–डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं जिससे वायु शुद्ध रहती है हमें जल संसाधनों का संरक्षण करके पानी की बर्बादी को रोकना चाहिए प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करके रिसाइक्लिंग को बढ़ावा देना चाहिए

पर्यावरण के फायदे

- पर्यावरण से, हमें साफ हवा, साफ पानी, भोजन, दवाइयाँ मिलती हैं
- पर्यावरण से रासायनिक और ध्वनि प्रदूषण कम होता है,
- पर्यावरण से बाढ़ का पानी धीमा होता है और सड़कें ठंडी रहती हैं
- पर्यावरण से प्रकृति आधारित पर्यटन को बढ़ावा मिलता है
- पर्यावरण की रक्षा करने से अस्थमा और ब्रोंकाइटिस के मामले कम होते है,
- पर्यावरण संरक्षण से पृथ्वी पर मौजूद सभी जीवित चीजों का विकास होता है
- पर्यावरण संरक्षण से जंगल, घास के मैदान, नदियाँ, झीलें और समुद्र जैसे प्राकृतिक संसाधन मिलते है
- पर्यावरण शिक्षा से छात्रों का शैक्षिक प्रशिक्षण सुधरता है
- पर्यावरण शिक्षा से छात्रों को वास्तविक दुनिया की स्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलती है

गौरव चौहान
B.A. III Sem.

पेड़ पौधों का इन्टरनेट

आज सुबह मेरी छह साल की बेटी हमारे शयन कक्ष में आई और एक किताब से कहानी पढ़ने लगी। वह एक–एक शब्द पढ़ते हुए पूरा वाक्य बना रही थी। कभी–कभी वह अटक जाती थी और कुछ मजेदार शब्दों को समझने के लिए मदद मांगती थी, लेकिन किताब खत्म करने के बाद उसने हमें बर्फ में फंसे एक भालू की कहानी सुनाई। मुझे बातचीत करना अच्छा लगता है, चाहे वह किसी बच्चे के साथ हो, बुजुर्ग के साथ हो, किसी अपने के साथ हो या फिर अजनबी के साथ। मुझे लगता है कि मनुष्य एक प्रजाति के तौर पर इसलिए ही कामयाब हो सका, क्योंकि वह बातचीत कर सकता है। खतरा आने पर वह बोलकर चेतावनी दे सकता है और जटिल सूचनाओं का भी आदान–प्रदान कर सकता है। जानवर भी ये काम करते हैं। भले ही हम उनकी बोली न समझ पाए, लेकिन उनके समूह के दूसरे जीव उस आवाज को समझ लेते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि मनुष्यों और जानवरों की तरह पेड़–पौधे भी, जो भले ही निष्क्रिय लगते हो, बातचीत करते हैं। यह विचार कोई नया नहीं है।

कुछ वर्ष पहले आई हॉलीवुड की फिल्म में भी पेड़ पौधों की यही शक्तियां प्रेरणा बनी थीं, लेकिन विज्ञान कहता है कि वनस्पतियों के बीच होने वाली यह बातचीत हमारी कल्पना से भी जटिल हो सकती है। दरअसल, ये पर्यावरणीय संवाद – बेहद संवेदनशील और संतुलित होते हैं। कल्पना करें कि अगर वैश्विक नेटवर्क सिस्टम अचानक टूट जाए, तो हमारी दुनिया कितनी अस्त–व्यस्त हो जाएगी। यही बात पौधों के मामले में भी लागू होती है। यह समझने के लिए कि जो जीव बोल नहीं सकते, वे एक–दूसरे को सूचना कैसे देते हैं, यह समझना महत्वपूर्ण है कि मनुष्यों में एक मूक संचार प्रणाली भी होती है। इसमें हमारी दृष्टि, गंध, श्रवण, स्वाद और स्पर्श की भावना शामिल है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक गैस कंपनियां गैस में मरकैप्टन नामक रसायन मिलाती हैं। जिससे उसमें से 'सड़े अंडे' जैसी गंध आती है, जो हमें रिसाव के बारे में चेतावनी देती हैं, यह भी सोचें कि हमने सांकेतिक भाषा कैसे विकसित की जबकि कई लोग होंठों की भाषा भी समझ लेते हैं। इन इंद्रियों के अलावा, हमारे पास संतुलन और शरीर की मुद्रा बनाए रखने की क्षमता, शरीर के अंगों की सापेक्ष स्थिति और ताकत का बोध तापमान में बदलाव का बोध और दर्द को महसूस करने की क्षमता भी है।

पौधे सूचना प्रसार के लिए अपनी इंद्रियों का उपयोग अपने तरीके से करते हैं। हममें से ज्यादातर लोग ताजा कटी घास की गंध से परिचित है घास के पौधों द्वारा छोड़े जाने वाले वाष्पशील या रासायनिक पदार्थ, जिन्हें हम उस गंध से जोड़ते हैं, एक तरीका है, जिससे वे आसपास के दूसरे पौधों को बताते हैं कि कोई शिकारी (लॉनमोवर) मौजूद है, जिससे पौधे अपनी सुरक्षा के लिए जरूरी बदलाव करते हैं। श्रवण संकेतों का उपयोग करने के बजाय पौधे रसायन–प्रेरित संचार का उपयोग करते हैं। हालांकि, पौधों का संचार वाष्पशील पदार्थों तक ही सीमित नहीं होता है। हाल ही में, वैज्ञानिकों ने पाया कि पौधे आपस में कितने बेहतर तरीकों से जुड़े हुए हैं और वे अपनी जड़ों, विद्युत संकेतों, भूमिगत कवक और मिट्टी के सूक्ष्मजीवों के नेटवर्क के माध्यम से अपने साथियों को बेहद कुशलता से संदेश भेज सकते हैं।
उदाहरण के लिए, इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी एक अपेक्षाकृत नया वैज्ञानिक अनुशासन है, जो अध्ययन करता है कि पौधों में और उनके साथियों के बीच विद्युत संकेतों का संचार कैसे किया जाता है।

प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की प्रगति के साथ हमने पिछले कुछ वर्षों में, अनुसंधान के इस क्षेत्र में त्वरित विकास का अनुभव किया है। वैज्ञानिक उल्लेखनीय खोजों के कगार पर हैं। क्योंकि हाल ही में हुई प्रगति के कारण आधुनिक ग्रीनहाउसों में पौधों के भीतर और उनके बीच विद्युत संकेत संचार को एकीकृत किया जा सका है, जिससे फसलों की सिंचाई पर निगरानी और नियंत्रण किया जा सकेगा या पोषण संबंधी कमियों का पता लगाया जा सकेगा। वैज्ञानिक एक्यूपंक्चर सुईयों के समान छोटे विद्युतीय जांच उपकरणों को डालकर यह जांच करते हैं कि विद्युतीय संकेतों में परिवर्तन, पौधों के प्रदर्शन से किस प्रकार जुड़े हैं, जैसे कि जल, पोषक तत्वों का परिवहन और प्रकाश को महत्वपूर्ण

ऊर्जा में परिवर्तित करना।

शोधकर्ताओं ने मोबाइल फोन से विद्युत संकेत भेजकर पौधों के व्यवहार को भी प्रभावित किया है, जिससे वे वीनस फ्लाईट्रैप में पत्तियों को खोलने या बंद करने जैसी बुनियादी प्रतिक्रियाएं करने लगते हैं। जल्द ही हम अपनी फसलों की भाषा को पूरी तरह समझने में सक्षम हो जाएगे। पौधों के बीच बहुत ज्यादा संचार जमीन के नीचे होता है, जिसे 'वुड वाइड वेब' नामक बड़े कवक नेटवर्क द्वारा सुगम बनाया जाता है। कवक का यह नेटवर्क पेड़–पौधों को जमीन के नीचे जोड़ता है। जिससे वे पानी, पोषक तत्व और सूचना जैसे संसाधन साझा करते हैं। इस प्रणाली के जरिये पुराने पेड़ छोटे पेड़ों को बढ़ने में मदद कर सकते हैं। और कीटों जैसे खतरों के बारे में एक–दूसरे को चेतावनी दे सकते हैं। यह पेड़–पौधों के लिए एक भूमिगत इंटरनेट की तरह है। जो उन्हें एक दूसरे का समर्थन करने और एक–दूसरे से संवाद करने में मदद करता है। यह नेटवर्क व्यापक है, माना जाता है कि 80 फीसदी से अधिक पौधे आपस में जुड़े हुए है, जो इसे दुनिया की सबसे पुरानी संचार प्रणालियों में से एक बनाता है।

इंटरनेट की तरह ही कवक नेटवर्क पौधों को पर्यावरणीय परिवर्तनों के लिए तैयार होने की खातिर सहजीवी कवक का उपयोग करने की अनुमति देता है। हालांकि, मिट्टी में रसायनों की मिलावट, वनों की कटाई या जलवायु परिवर्तन के चलते इन नेटवर्कों में पानी और पोषक तत्वों के चक्र प्रभावित होने के कारण संचार बाधित हो सकते है, जिससे पौधे कम जानकारी प्राप्त कर पाते हैं और आपस में कम जुड़े रहते हैं। इन नेटवर्क को बाधित करने के प्रभावों पर अभी तक बहुत अधिक शोध नहीं हुआ है। लेकिन संचार में बाधा उन्हें अधिक असुरक्षित बना सकती है, जिससे दुनिया भर में पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा और उसे बहाल करना ज्यादा कठिन हो सकता है। बच्चों की मदद करना महत्वपूर्ण है, ताकि वे अपने आसपास की दुनियाँ को समझ सकें। यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि यह सुनिश्चित करना कि हम पौधों के बीच संचार को बाधित न करें। आखिरकार, हम अपनी भलाई और अस्तित्व के लिए पौधों पर ही निर्भर हैं।

दीक्षा उनियाल
B.A. III Sem.

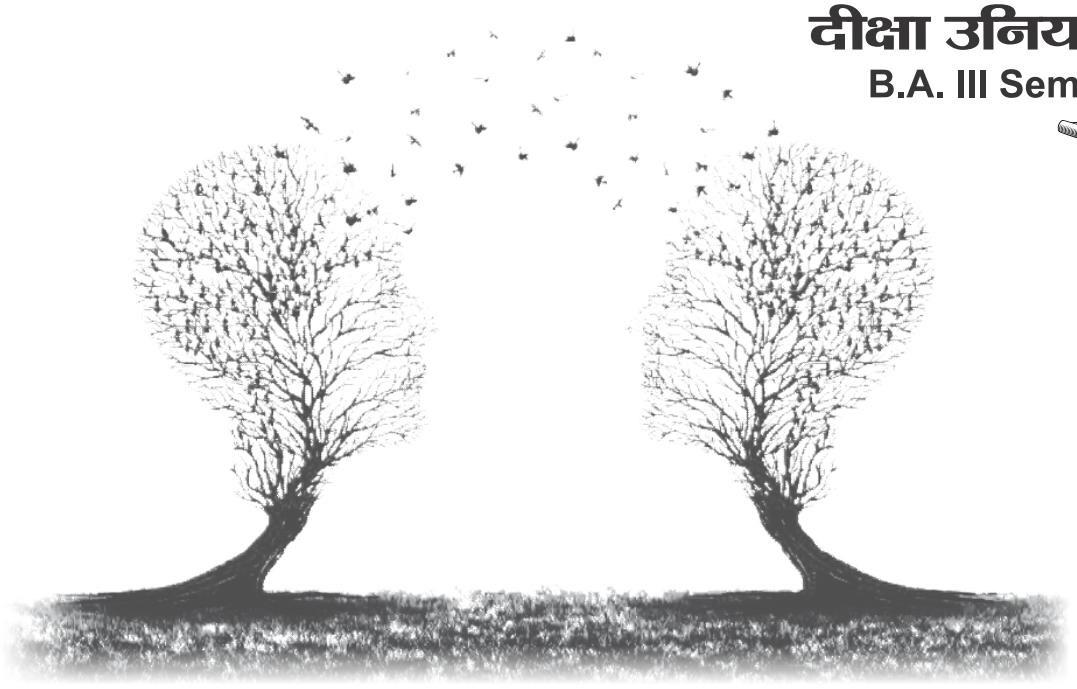

"जो अपने सपनो को पूरा करने का साहस करता है
वह हर मुश्किल को पार कर सकता है"

ग्राफोलॉजीः हस्तलेखन विश्लेषण की कला

ग्राफोलॉजी, जिसे हस्तलेखन विश्लेषण के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसा विज्ञान है जो किसी व्यक्ति के हस्तलेखन का विश्लेषण करके उसके व्यक्तित्व, स्वभाव, और मानसिक स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह एक आकर्षक क्षेत्र है जो हस्तलेखन के सूक्ष्म विवरणों, जैसे अक्षरों का आकार, झुकाव, दबाव, और रिक्त स्थान, का अध्ययन करके व्यक्ति के बारे में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

ग्राफोलॉजी का इतिहास : मानव सभ्यता के विकास में लेखन कला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लिपि का उद्भव भाषा के विकास के बाद हुआ, जब मानव को अपनी भाषा को संग्रहित करने की आवश्यकता महसूस हुई। लिपि ही वह माध्यम है जो हमारी प्राचीन उपलब्धियों को सुरक्षित रखता है और भाषा को समय और स्थान की सीमा से मुक्त करता है।

भारत में लेखन कला की प्राचीनता के बारे में कई मत हैं। यूरोपीय विद्वान लिपि की प्राचीनता 1000 ईसा पूर्व या उससे भी पहले मानते हैं, जबकि भारतीय और विदेशी अनुश्रुतियाँ इसे चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक ले जाती हैं। बौद्ध ग्रंथों से ज्ञात होता है कि भारत में ईसा पूर्व चौथी और छठी शताब्दी के मध्य लेखन कला से लोग परिचित थे।

ग्राफोलॉजी का उपयोग ग्राफोलॉजी का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है जैसेः

- **व्यक्तित्व विकास** : ग्राफोलॉजी व्यक्ति की ताकत और कमजोरियों को पहचानने में मदद करता है, जिससे वे आत्म–सुधार कर सकते हैं। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ हस्तलेखन के विभिन्न पहलुओं, जैसे अक्षरों का आकार, झुकाव, और दबाव, का विश्लेषण करके व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, बड़े अक्षर आत्मविश्वास और बहिर्मुखता का संकेत हो सकते हैं, जबकि छोटे अक्षर अंतर्मुखता और विनम्रता का संकेत हो सकते हैं। ग्राफोलॉजी व्यक्ति को अपनी ताकत और कमजोरी को समझने में मदद करता है, जिससे वे आत्म–सुधार कर सकते हैं और अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।
- **कैरियर मार्गदर्शन** : ग्राफोलॉजी किसी व्यक्ति के कौशल और रुचियों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है, जिससे उन्हें सही कैरियर चुनने में मदद मिलती है। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ हस्तलेखन का विश्लेषण करके यह बता सकते हैं कि व्यक्ति में किस प्रकार की नौकरी के लिए आवश्यक कौशल और क्षमताएं हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपयोगी हो सकता है जो अपने कैरियर के विकल्पों के बारे में अनिश्चित हैं या फिर जिन लोगों को यह नहीं पता होता है कि वे किस क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं। ग्राफोलॉजी उन्हें उनकी रुचि और क्षमताओं के अनुसार सही दिशा दिखाने में मदद कर सकता है।
- **संबंध परामर्श** : ग्राफोलॉजी रिश्तों में संगतता और संभावित समस्याओं को समझने में मदद कर सकता है। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ दो लोगों के हस्तलेखन का विश्लेषण करके यह बता सकते हैं कि उनके व्यक्तित्व में कितनी समानताएं और अंतर हैं। यह जानकारी रिश्तों को मजबूत बनाने और संभावित समस्याओं को दूर करने में मदद कर सकती है। ग्राफोलॉजी रिश्तों में आने वाली चुनौतियों को समझने और उन्हें बेहतर बनाने के लिए एक उपयोगी उपकरण हो सकता है।
- **फोरेंसिक विज्ञान** : ग्राफोलॉजी का उपयोग कभी–कभी दस्तावेजों की प्रामाणिकता की जांच करने और अपराधों को सुलझाने में किया जाता है। फोरेंसिक ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ हस्तलेखन का विश्लेषण करके यह बता सकते हैं कि क्या कोई दस्तावेज जाली है या नहीं। वे हस्तलेखन के नमूनों की तुलना करके यह भी बता सकते हैं कि क्या कोई विशेष व्यक्ति ने कोई दस्तावेज लिखा है या नहीं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि फोरेंसिक विज्ञान में ग्राफोलॉजी का उपयोग विवादास्पद है और इसे हमेशा विश्वसनीय नहीं माना जाता है।
- **जीवन को बेहतर बनाने वाला हस्त लेखन** : केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन को बेहतर बनाने का एक सशक्त उपकरण भी है। जब हम लिखते हैं तो हम अपने विचारों, भावनाओं, और अनुभवों को एक नया रूप देते हैं। यह प्रक्रिया हमें आत्म–जागरूकता बढ़ाने, समस्याओं को सुलझाने, और रचनात्मकता को विकसित करने में मदद करती है।

जीवनोपयोगी लेखन शैलियाँ :

- **वर्णनात्मक लेखन** : किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, या घटना का विस्तृत वर्णन प्रदान करता है, जिससे पाठक के मन में एक स्पष्ट चित्र बनता है।
- **व्याख्यात्मक लेखन** : किसी विषय के बारे में जानकारी प्रदान करता है, तथ्यों को प्रस्तुत करता है, और अवधारणाओं को स्पष्ट करता है।
- **कथात्मक लेखन** : कहानियाँ सुनाता है, पात्रों का विकास करता है, और घटनाओं का वर्णन करता है।
- **प्रभावशाली लेखन** : पाठक को किसी विशेष दृष्टिकोण से सहमत करने का प्रयास करता है।

लेखन के माध्यम से आत्म–सुधार :

- **डायरी लेखन** : अपनी भावनाओं, विचारों, और अनुभवों को लिखकर, हम उन्हें बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं।
- **लक्ष्य निर्धारण** : अपने लक्ष्यों को लिखने से, हम उन्हें प्राप्त करने के लिए अधिक प्रतिबद्ध होते हैं।
- **आभार व्यक्त करना** : उन चीजों के लिए आभार व्यक्त करने से, जिनके लिए हम आभारी हैं, हम सकारात्मकता और खुशी को बढ़ावा देते हैं।

हस्तलेखन में सुधार के उपाय : हस्तलेखन में सुधार करने के लिए, निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं:

- **सही पकड़** : पेन या पेंसिल को सही ढंग से पकड़ना महत्वपूर्ण है।
- **आरामदायक मुद्रा** : लिखते समय आरामदायक मुद्रा बनाए रखें।
- **नियमित अभ्यास** : नियमित रूप से लिखने का अभ्यास करें।
- **सुलेखन का अभ्यास** : सुलेखन का अभ्यास करने से हस्तलेखन में सुधार होता है।
- **विभिन्न लेखन शैलियों का प्रयोग** : विभिन्न लेखन शैलियों का प्रयोग करके हस्तलेखन को रोचक बनाएं।

ग्राफोलॉजी और रोजगार के अवसर

ग्राफोलॉजी का ज्ञान विभिन्न प्रकार के रोजगार के अवसर प्रदान कर सकता है। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ विभिन्न क्षेत्रों में काम कर सकते हैं, जैसे :

- **हस्तलेखन विश्लेषक** : कंपनियां अक्सर ग्राफोलॉजी विशेषज्ञों को नियुक्त करती हैं ताकि वे नौकरी के उम्मीदवारों के हस्तलेखन का विश्लेषण करके उनके व्यक्तित्व और कार्यशैली का आकलन कर सकें। यह विशेष रूप से उन पदों के लिए महत्वपूर्ण होता है जहाँ व्यक्ति का व्यक्तित्व और स्वभाव कार्य के लिए महत्वपूर्ण होता है, जैसे कि सेल्स, मार्केटिंग, या ग्राहक सेवा। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ उम्मीदवारों के हस्तलेखन का विश्लेषण करके यह बता सकते हैं कि वे कितने आत्मविश्वासी, मेहनती, और टीम वर्क करने वाले हैं।
- **फोरेंसिक दस्तावेज परीक्षक** : ग्राफोलॉजी का उपयोग फोरेंसिक विज्ञान में दस्तावेजों की प्रामाणिकता की जांच करने और हस्ताक्षरों की तुलना करने के लिए किया जाता है। फोरेंसिक दस्तावेज परीक्षक अदालतों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहाँ वे दस्तावेजों की सत्यता को प्रमाणित करने में मदद करते हैं। वे हस्तलेखन का विश्लेषण करके यह बता सकते हैं कि क्या कोई दस्तावेज जाली है या नहीं, और क्या कोई विशेष व्यक्ति ने कोई दस्तावेज लिखा है या नहीं।
- **व्यक्तित्व विकास सलाहकार** : ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ व्यक्तिगत सलाहकार के रूप में काम कर सकते हैं और लोगों को उनके हस्तलेखन के माध्यम से आत्म–सुधार करने में मदद कर सकते हैं। वे लोगों को उनकी लिखावट में छिपे संकेतों को समझने और उनमें सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करते हैं। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ लोगों को उनकी लिखावट के आधार पर सलाह दे सकते हैं कि वे अपने आत्मविश्वास, संचार कौशल, और नेतृत्व क्षमता को कैसे बेहतर बना सकते हैं।
- **शिक्षक/प्रशिक्षक** : ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ ग्राफोलॉजी के पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर सकते हैं और दूसरों को यह कला सिखा सकते हैं। वे स्कूलों, कॉलेजों, या निजी संस्थानों में ग्राफोलॉजी पढ़ा सकते हैं और लोगों को इस क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए तैयार कर सकते हैं। ग्राफोलॉजी विशेषज्ञ लोगों को हस्तलेखन विश्लेषण के विभिन्न पहलुओं, जैसे अक्षरों का आकार, झुकाव, दबाव, और रिक्त स्थान, के बारे में सिखा सकते हैं।

ग्राफोलॉजी में हस्ताक्षर के लाभ

हस्ताक्षर किसी व्यक्ति की पहचान का प्रतीक होते हैं और ग्राफोलॉजी के अनुसार, वे व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में भी बहुत कुछ बता सकते हैं। एक अच्छे हस्ताक्षर के कई लाभ हो सकते हैं, जैसे :

- **आत्मविश्वास** : एक स्पष्ट और सुंदर हस्ताक्षर आत्मविश्वास को दर्शाता है। यह दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और व्यक्ति के व्यक्तित्व को मजबूत बनाता है।
- **पहचान** : एक अद्वितीय हस्ताक्षर आपकी पहचान को मजबूत बनाता है। यह आपको दूसरों से अलग करता है और आपकी व्यक्तिगत पहचान को स्थापित करने में मदद करता है।
- **प्रभाव** : एक प्रभावशाली हस्ताक्षर आपके व्यक्तित्व को उभारता है। यह आपके बारे में एक सकारात्मक छवि बनाता है और लोगों को आपकी ओर आकर्षित करता है।
- **सुरक्षा** : एक जटिल हस्ताक्षर आपके दस्तावेजों को जालसाजी से बचाने में मदद करता है। यह आपके हस्ताक्षर की नकल करना मुश्किल बनाता है और आपके दस्तावेजों को सुरक्षित रखता है।

ग्राफोलॉजी की सीमाएँ

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ग्राफोलॉजी एक पूर्ण विज्ञान नहीं है। इसकी कुछ सीमाएँ हैं, जैसे :

- **व्यक्तिपरकता** : हस्तलेखन का विश्लेषण कुछ हद तक व्यक्तिपरक हो सकता है। अलग–अलग ग्राफोलॉजिस्ट एक ही हस्तलेखन की अलग–अलग व्याख्या कर सकते हैं।
- **सीमित जानकारी** : ग्राफोलॉजी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में पूरी जानकारी नहीं दे सकता है। यह केवल कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालता है।
- **सांस्कृतिक अंतर** : विभिन्न संस्कृतियों में हस्तलेखन शैलियाँ अलग–अलग होती हैं, जिससे ग्राफोलॉजी का विश्लेषण जटिल हो सकता है।

निष्कर्ष

ग्राफोलॉजी एक आकर्षक विज्ञान है जो हस्तलेखन के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करता है। यह विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी हो सकता है, लेकिन इसकी सीमाओं को भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। ग्राफोलॉजी का उपयोग करते समय सावधानी और विवेक का ध्यान रखना चाहिए।

हेम कुमार गहतोड़ी

"सकारात्मक सोच हमेशा
सफलता की ओर ले जाती है"

पिता जीवन का सार है

पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान हैं, पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है।
पिता अप्रदर्शित अनंत प्यार हैं पिता है तो बच्चों को इंतजार हैं।
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।
पिता से परिवार में प्रतिपल राग हैं, पिता से ही मां की बिंदी और सुहाग है।

लक्ष्मी सक्सेना
B.A. II Year

आवाज़

आवाज सिर्फ मुख से निकली एक ध्वनि नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व का एक अमूल्य और मूलभूत अंग है। यह हमारी पहचान, हमारी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति है, और समाज में परिवर्तन लाने की सबसे शक्तिशाली कुंजी है। आवाज हमें मौन को तोड़ने की शक्ति देती है। एक बच्चे की मासूम पुकार से लेकर एक लेखक की कलम तक, हर आवाज एक कहानी कहती है, एक संघर्ष, एक खुशी और एक उम्मीद को दर्शाती है।

यह हमारे व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा है, जो हमारी सोच और हमारे मूल्यों को प्रकट करता है। समाज में, आवाज का महत्व व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से कहीं अधिक है। जब यह अन्याय या असमानता के खिलाफ उठती है, तो यह सामूहिक चेतना को जगाती है और उन लोगों को शक्ति देती है जो अक्सर चुप करा दिए जाते हैं। इतिहास गवाह है कि कई महान आंदोलन एक साधारण आवाज से शुरू हुए, जिसने लाखों लोगों को एक साथ जोड़ा।

आवाज हमारे कर्मों, हमारी मेहनत और यहाँ तक कि हमारी खामोशी में भी गूँजती है। यह हमें न केवल अपनी बात कहने में सक्षम बनाती है, बल्कि हमें दूसरों को सुनने और समझने की क्षमता भी देती है।

अंत में, आवाज एक वरदान है। इसका उपयोग बुद्धिमानी से करना और उन लोगों की आवाज बनना हमारी जिम्मेदारी है जो अपनी बात कहने में असमर्थ हैं। क्योंकि आवाज ही वह शक्ति है जो हमें एक–दूसरे से जोड़ती है और एक बेहतर भविष्य का निर्माण करती है।

सीमा जोशी
B.A. VI Sem.

महाविद्यालय परीक्षा

वनबसा कॉलेज में सम सेमेस्टर की परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई

अमर उजाला 15.05.2025

बनबसा (चंपावत)। बनबसा डिग्री कॉलेज में बुधवार से एसएसजे विश्वविद्यालय अल्मोड़ा की सम सेमेस्टर परीक्षाएं शुरू हो गई हैं। पहले दिन अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य विषयों की परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। परीक्षा प्रभारी डॉ. भूप नारायण दीक्षित ने बताया कि संस्कृत में 10 और अंग्रेजी विषय में 62 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी।

परीक्षाएं 23 जून तक होंगी। परीक्षा प्रभारी ने बताया कि परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से 30 मिनट पूर्व महाविद्यालय में प्रवेश पत्र और आईडी कार्ड के साथ उपस्थित होने के लिए कहा गया है।

परीक्षा संचालन में प्रभारी प्राचार्य डॉ. मुकेश कुमार, प्राध्यापक डॉ. राजीव कुमार, डॉ. सुशीला आर्य, डॉ. सुधीर मलिक, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, विनोद कापड़ी, अमर सिंह, विनोद कुमार आदि ने सहयोग किया।

दैनिक जागरण 24.05.2025

पर्यवेक्षक ने किया परीक्षा केंद्र का निरीक्षण

संवाद सहयोगी, जागरण • बनबसा : विश्वविद्यालय से नामित बाह्य पर्यवेक्षक डा. हेम चंद्र पांडेय ने बनबसा डिग्री कालेज में चल रही बीए द्वितीय, चतुर्थ व षष्ठ सेमेस्टर की परीक्षा का औचक निरीक्षण किया।

पर्यवेक्षक ने महाविद्यालय में संचालित परीक्षा व्यवस्था पर संतोष व्यक्त करते हुए पूर्व में संचालित व्यवस्था को सुधारने के लिए सुझाव दिए। प्राचार्य डा. आनंद प्रकाश सिंह के मार्गदर्शन व परीक्षा प्रभारी डा. भूप नारायण दीक्षित के नेतृत्व के साथ प्राध्यापक डा. मुकेश कुमार, डा. सुशीला आर्य, डा. सुधीर मलिक, डा. हेम कुमार गहतोड़ी आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला 24.05.2025

परीक्षा संचालन में व्यवस्था सुधार के लिए दिए सुझाव

बनबसा (चंपावत)। शुक्रवार को बनबसा स्थित राजकीय महाविद्यालय में चल रही परीक्षाओं का सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा के सचल दल ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पर्यवेक्षक दल ने महाविद्यालय में चल रही परीक्षा व्यवस्थाओं पर संतोष जताया। महाविद्यालय में बीए द्वितीय, चतुर्थ और षष्ठम सेमेस्टर की परीक्षाएं चल रही हैं, इसमें ...08 परीक्षार्थी शामिल रहे। सचल निरीक्षण दल का नेतृत्व एलएसएम पी... निदेशक डॉ. हेम चंद्र पांडेय ने किया। यहां प्राचार्य डॉ. आनंद प्रकाश सिं... परीक्षा प्रभारी डॉ. भूप नारायण दीक्षित, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. सुशीला आ... सुधीर मलिक, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, कर्मी अमर सिंह रहे। संवाद

खेल कूद प्रतियोगिता

ज्योति ने सबसे दूर फेंका गोला

100 मीटर दौड़ में लता प्रथम

गोला फेंक में प्रियांशु अव्वल

समय का महत्व

समय कहता. "मैं चलता ही जाऊँ. न थकता हूँ. न कभी रुकता हूँ।
जीवन की हर सांस में शामिल, हर पल नया रूप में धरता हूँ।"
कभी लाता सुख की सुनहरी किरणें, कभी दुख का गहरा अँधेरा।
मेरी धुन पर ही नाचे ये दुनिया, कोई न मुझ पर लगा पाया पहरा।
हर घड़ी, हर पल मेरा अनमोल, अगर ये बात तुम समझ जाओगे।
अपने हर सपने को छू सकोगे तुम, हर मुश्किल से तुम निकल पाओगे।
मैं न रुकूं किसी चाह पर भी, न किसी के इंतजार में ठहरूँ।
जो मुझसे दोस्ती कर ले मन से, सफलता की राहें उसी पर बिखेरूँ।
तो आओ मेरे मोल को जानो, हर पल का करो तुम सम्मान।
आज जो मिला है ये सुनहरा मौका, करो कर्म, ऊँचा करो नाम।
समय कहता, "मैं हूँ सदा तुम्हारे साथ, अगर तुम मेरे साथ कदम बढ़ाओ।"

आरती चतुर्वेदी
B.A. IV Sem.

जीवनः एक अनमोल उपहार

कुछ बहता, कुछ बदलता, जीवन एक अनमोल धारा है।
कभी रूप नया है लेता, कभी रंग नया सँवारा है।
इस दुनिया में जीव हैं कितने, हर एक की अलग कहानी है।
पर मानव जीवन है अद्‌भुत, इसमें शक्ति बड़ी पुरानी है।
हम छू सकते हैं सबका मन, ला सकते हैं उजाला प्यारा।
जीवन की असली सुंदरता, जो मिलती हमें, वो नहीं है।
ये तो तब ही खिलती है, जब दूसरो के काम आती है।
जो हाथ बढ़ें मदद को, उनमें ही चमक सारी है।
जो पल हमने दिए औरों को, वही सबसे कीमती होते हैं।
स्वार्थ में बिताए दिन फीके, सेवा में फूल खिलते हैं।
खुशियाँ बाँटो, प्यार बढ़ाओ, यही सच्चा मोल हमारा है।
आओ हम सब मिलकर, जीवन को सुंदर बनाएं।
देखभाल करें, मदद करें, यही सच्चा पाठ पढ़ाएं।

महक कुमारी
B.A. III Sem.

"जीवन एक आईना है यह वही दिखाता है जो आप देखते हैं"

मनुस्मृति का महत्व

समस्त स्मृतियों में मनुस्मृति का महत्व अद्वितीय है। इसका मूल कारण है कि यह वेदों के अत्यन्त समीप है। कहा गया है – **'वेदार्थोपनिबद्धत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम्'** अपने विशाल विषय–फलक, विचार और विवेचना की सूक्ष्मता तथा व्यावहारिक उपयोगिता के कारण भारतीय धर्म, दर्शन और समाज में यह अत्यन्त प्राचीन काल से अत्यधिक समादृत रहीं है। इस ओर इंगित करते हुए प्रो. ए०बी० कीथ ने कहा है– **'मनुस्मृति'** का महत्व केवल एक धर्मशास्त्र की पुस्तक के रूप में नहीं है, प्रत्युत उसकी निश्चित रूप से तुलना ल्यूक्रेसियस के महान काव्य से करनी चाहिए। जिसके साथ जीवन के दर्शन की अभिव्यक्ति के रूप में इसका स्थान है। मनुस्मृति में एक जाति या राष्ट्र के एक बड़े विभाग की अन्तरात्मा (चेतना) प्रतिफलित है। इस ग्रंथ में वैयक्तिकता का अभाव है इसमें माना गया है कि देवी शक्ति द्वारा सृजित इस संसार में सब कुछ पूर्णतया व्यवस्थित है। मनुस्मृति सिद्धान्त प्रसन्न अभिव्यक्तियों से सुसमृद्ध है।

भारत की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के ऐतिहासिक विकास में मनुस्मृति का सर्वाधिक महत्व है। वर्तमान में हिन्दुओं की विधि की आधारशिला यह मनुस्मृति ही है। मानव धर्मशास्त्र का ज्ञान तो स्वयं ब्रह्मा ने ही मनु को दिया था।

'इद शास्त्रं तु कृत्वाऽसौ मामेव स्वयमादितः।
विधिवद ग्राहयमास मरीच्यादींस्त्वहं मुनीन्।।
समस्त ज्ञान और परम्परा मनु में ही विद्यमान है
'त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य विधानस्य स्वयम्भुवः।
अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्वार्थवित्प्रभोः।।'

प्राचीन भारत के राजनीतिक विचार और सम्पूर्ण संस्थाओं का विस्तृत वर्णन मनुस्मृति के क्षत्रियों के वर्णन के प्रसंग में हुआ है। अतः राजनीतिक ज्ञान की दृष्टि से भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संक्षेप में सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, समाज, राजनीति और धर्म के पूर्ण ज्ञान का एक मात्र स्रोत मनुस्मृति ही है।

सेजल राना
B.A. IV Sem.

''कोई वस्तु देने से घटती नहीं है।''

महाविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केंद्र

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यू.ओ.यू.)

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चंपावत में स्थित उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यू.ओ.यू.) अध्ययन केन्द्र (कोड 16101), सीमांत क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का प्रकाश स्तंभ है। 2014 में स्थापित यह महाविद्यालय, भारत–नेपाल सीमा और छावनी क्षेत्र के निकट 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य को साकार कर रहा है।

यू.ओ.यू. और बनबसा अध्ययन केंद्र

2005 में स्थापित यूओयू, नैक द्वारा 'बी$^{++}$ ग्रेड प्राप्त है और 110 से अधिक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है, जिनसे 90 हजार से अधिक विद्यार्थी जुड़े हैं, राजकीय महाविद्यालय बनबसा का यू.ओ.यू. अध्ययन केंद्र विश्वविद्यालय के इन्हीं उद्देश्यों के प्रति समर्पित है। डॉ. बी. एन, दीक्षित, डॉ. आर. एन. पाण्डेय, डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, श्री हेम कुमार गहतोड़ी और वर्तमान में डॉ. राजीव कुमार जैसे समन्वयकों के अथक प्रयासों से यह केंद्र सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। यह केंद्र स्थानीय युवाओं, रक्षा कर्मियों, घरेलू महिलाओं और सेवारत व्यक्तियों सहित समाज के हर वर्ग के लिए ज्ञान के द्वार खोलता है। यू.ओ.यू. की मानवीय पहल के तहत, बलिदानियों के परिजनों को 100%, दिव्यांगों को 50% और कैदियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है।

सुविधाएँ और गतिविधियाँ

महाविद्यालय ने यू.ओ.यू. अध्ययन केंद्र के सुचारु संचालन के लिए एक पृथक, सुसज्जित कक्ष आवंटित किया है। जिसमें आधुनिक कंप्यूटर और उपकरण उपलब्ध हैं, 05 अप्रैल 2025 को यू.ओ.यू. के माननीय कुलसचिव डॉ. खेमराज भट्ट जी ने इन सुविधाओं का उद्घाटन किया और केंद्र की उत्कृष्ट व्यवस्थाओं पर प्रसन्नता व्यक्त की। केंद्र में एक नोटिस बोर्ड और फोटो डिस्प्ले भी है। नए विद्यार्थियों के लिए हर साल दीक्षारंभ और 'प्रेरणा प्रोग्राम' जैसे स्वागत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। मई 2024 में साइबर क्राइम एवं सुरक्षा पर एक महत्वपूर्ण जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया. जिसमें यू.ओ.यू. के विशेषज्ञों ने छात्रों को साइबर सुरक्षा के बारे में जानकारी दी। नैक प्रत्यायन संबंधी कार्यशालाएँ भी नियमित रूप से आयोजित होती रहती है।

संचालित पाठ्यक्रम और नामांकन

अध्ययन केंद्र क्षेत्र की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न प्रकार के स्नातक (बी.ए., बी.कॉम.). स्नातकोत्तर (एम.ए. विभिन्न विषयों में, एम.एस.डब्ल्यू.), प्रमाणपत्र (सूचना का अधिकार), एवं डिप्लोमा (क्षेत्रीय भाषा कुमाऊँनी व लोक साहित्य) कार्यक्रम संचालित करता है। पाठ्यक्रम नियमित रूप से अद्यतन किए जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से केंद्र में विद्यार्थियों का नामांकन उत्साहजनक रहा है। जनवरी 2021 से जनवरी 2025 तक स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है, जो केंद्र की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है सितंबर 2022 में सर्वाधिक 146 विद्यार्थी नामांकित हुए थे। सभी परीक्षाएँ पारदर्शिता के साथ संचालित की जाती है और विश्वविद्यालय से अध्ययन सामग्री (पुस्तके) नियमित रूप से प्राप्त होती है, जिन्हें छात्रों को वितरित किया जाता है। ई–पुस्तकें और अन्य डिजिटल संसाधन भी यू.ओ.यू. की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं, और महाविद्यालय का अपना पुस्तकालय भी छात्रों के लिए उपयोगी है।

छात्र सहायता और विशिष्ट उपलब्धियाँ

दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सर्वोपरि है। यह केंद्र छात्रों को प्रवेश प्रक्रिया से लेकर प्रशासनिक कार्यों तक हर कदम पर सहयोग करता है। विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कार्यालयों से भी केंद्र को निरंतर सहायता मिलती है। महाविद्यालय के प्राध्यापक यू.ओ.यू. द्वारा आयोजित अकादमिक परामर्श सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। केंद्र छात्रों को कौशल विकास कार्यक्रमों और रोजगारपरक योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करता है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

केंद्र के विद्यार्थियों ने असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की हैं:

सुश्री वंदना नयाल ने एम.ए. (समाजशास्त्र) में स्वर्ण पदक जीता।

कुमारी दीक्षा उनियाल को उत्तराखंड राज्य के लिए **'बाल विधायक'** चुना गया जो उनकी नेतृत्व क्षमता का प्रमाण है।

पूर्व छात्रा **कुमारी नमिता जोशी** एक सफल यूट्यूबर हैं। जिनके 6.36 लाख से अधिक सब्सक्राइबर्स हैं, जो अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

चुनौतियाँ और भावी दिशा

केंद्र के समक्ष कुछ चुनौतियाँ हैं, जैसे अध्ययन सामग्री का समय पर वितरण और दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी। इनके समाधान के लिए प्रयास जारी हैं। भविष्य में, केंद्र रोजगारोन्मुखी अल्पकालिक पाठ्यक्रम, कौशल विकास सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स शुरू करने की योजना बना रहा है। साथ ही विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु विशेष कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित करने पर भी विचार किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धान्तों के अनुरूप, यह केंद्र बनबसा क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

यह केंद्र इस सीमांत क्षेत्र में उच्च शिक्षा की ज्योति को निरंतर प्रज्वलित रखने में अपनी सराहनीय भूमिका का निर्वहन कर रहा है जिससे अनगिनत शिक्षार्थियों को लाभ मिल रहा है

हेम कुमार गहतोड़ी

जीवन की परीक्षा

यह कहानी एक गांव में रहने वाली बेटी की है जिसका नाम महिमा है, महिमा के दो छोटे भाई भी हैं। एक एक का नाम चंदन और दूसरे का नाम मनीष है। उसके पिता किसान हैं और उसकी माता साधारण गृहिणी है। महिमा होनहार लड़की थी, जो पढ़ाई के प्रति काफी रुचि रखती थी वह दिन भर किताबों में खोई रहती थी, उसकी 11वीं और 12वीं की पढ़ाई मुफ्त में हुई क्योंकि उसने 10 वीं में अच्छे नंबरों से पास हो कर अच्छी स्कॉलरशिप पायी थी, स्कूल के प्रिंसिपल ने महिमा के पिता को बुलाया और कहा कि इसकी कला को विकसित होने दीजिएगा, महिमा पढ़ाई में काफी अच्छी है, लेकिन उसके पिताजी ने कहा हम ज्यादा बेहतर जानते है हमारी लड़की के लिए क्या सही है। महिमा का सपना था एक कलेक्टर बनने का लेकिन उसके पिता को दिन भर उसका किताबों में खोये रहना बिल्कुल पसंद नहीं था, वह बस उसके हाथ पीले करना चाहते थे, महिमा आगे पढ़ना चाहती थी लेकिन पिताजी मना करते थे, कुछ समय तक ऐसा ही चलता गया रिश्ते आते गए लेकिन महिमा हर रिश्ता इंकार कर देती, एक बार उसके पिता के दोस्त महिमा के लिए रिश्ता लेकर आते हैं, रिश्ता काफी अच्छा था, लड़का टीचर था उसका नाम सुरेश था, महिमा के पिता ने सुरेश से उसकी शादी करा दी। शादी के बाद महिमा चुप–चुप रहती थी। एक दिन सुरेश ने उससे पूछा कि तुम कुछ बोलती नहीं हो बस चुप–चुप सी रहती हो, तो उसने उत्तर दिया कुछ नहीं बस ऐसे ही, क्योंकि माता–पिता ने सिखाया था ससुराल में ज्यादा मत बोलना इसी में इज्जत है। कुछ समय बाद फिर उसके पति ने उसको पूछा क्या हुआ कोई बात है जिसकी वजह से तुम परेशान हो, तो मुझे बताओ मुझे अपना दोस्त समझ कर बता दो तो महिमा ने उसे सब बता दिया कि उसका सपना था कलेक्टर बनने का लेकिन पिताजी को उसका पढ़ना लिखना बिल्कुल पसंद नहीं था, लेकिन सुरेश की समझ ठीक होना महिमा के जीवन को नई दृष्टि दे गया। उसने महिमा को कहा कि मैं तुम्हारे सपने को पूरा करने में साथ खड़ा हूँ, हम मिलकर चलेंगे, उसने महिमा को किताबे खरीद कर दीं उसकी उसकी जरूरतों के सारे सामान उसको लाकर दिये। महिमा अपनी तैयारी करने लगी, दिन–रात मेहनत करने लगी, महिमा का इस तरह पढ़ाई करना उसके सास– ससुर को भी पसंद नहीं आता लेकिन सुरेश उसको बढ़ावा देता था। शादी के बाद महिमा के मायके की हालत कुछ सही नहीं थी, उसका एक भाई चंदन जो शराब पीकर बहुत बीमार हो गया और उसके दूसरे भाई मनीष ने शादी के बाद अपनी पत्नी शोभा के कहने पर अपने माता–पिता को घर से निकाल दिया, मेहनत करके एक दिन ऐसा आया जब महिमा ने कलेक्टर की परीक्षा पास की और कलेक्टर बन गई, जब उसको पता चला कि उसके भाई ने उसके माता–पिता को घर से निकाल दिया तब वह और सुरेश उन्हें अपने घर ले आए उन्होंने बहुत मना किया लेकिन आखिर में रोते–रोते आ गए उसके पिता को महिमा से ज्यादा अपने बेटों से उम्मीदें थीं। आखिर में उनके बेटों ने ही उनकी उम्मीदें तोड़ दी, महिमा को क्लेक्टर बना देख उसके माता–पिता बहुत खुश हुए और उन्होंने अपनी बेटी से माफी मांगी कि उन्होंने उसकी पढ़ाई रूकवा दी लेकिन महिमा ने उनको गले लगा लिया और कहा आप माफी मत मांगिये। अगर सुरेश जैसा पति, भाई या बेटा हर किसी का हो तो हर लड़की का सपना शादी के बाद भी पूरा हो सकता है।

''प्रेम का साथ पंख जैसा होना चाहिए,
जो आपको उड़ान दे''

गायत्री
B.A. III Sem.

मेरी उड़ान

छोटी सी गांव की लड़की जिसका नाम नेहा है। वह एक साधारण परिवार में जन्मी थी जहां ज्यादातर लोग सोचते थे कि लड़कियाँ, केवल घर के काम के लिए होती हैं लेकिन नेहा के सपने अलग थे वह आसमान की तरफ देखती और सोचती कि एक दिन वह भी ऊंचाई पर जाएगी उसका बचपन बेहद मासूम था लेकिन चुनौतियो से भरा था स्कूल में लड़के उसे चिढ़ाते और कहते **''लड़कियाँ क्या कर सकती हैं?''** नेहा की माँ उसे हर रात प्रेरणा देती थी कि तुम कुछ भी कर सकती हो बस खुद पर विश्वास रखो पर नेहा का सफर आसान नहीं था किशोरावस्था में उसे कई तरह के संघर्षों का सामना करना पड़ा।

शिक्षा का संघर्ष : गांव के स्कूल में संसाधनों की कमी थी लेकिन नेहा ने हार नही मानी, खुद से पढ़ाई करने की आदत डाली

परिवार का दबाव : पिता चाहते थे, कि नेहा जल्दी शादी कर ले, लेकिन उसकी माँ ने उसका हमेशा साथ दिया।

सामाजिक बाधाएँ : समाज कहता लंड़कियों को ज्यादा पढ़ाने की जरूरत नहीं। इन सबके बावजूद नेहा ने अपने सपनों को जिंदा रखा उसने अपने गांव की पहली लड़की के तौर पर 12 वीं में टॉप किया। कॉलेज जाने का सपना नेहा के लिए असंभव था लेकिन उसने अपने आत्मविश्वास से यह कर दिखाया।

शहर में पढ़ाई : नेहा ने छात्रवृत्ति (Scholarship) से पढ़ाई की यहां उसे पहली बार एहसास हुआ कि दुनिया कितनी बड़ी है और वह भी इसमें अपनी पहचान बना सकती है।

संहर्ष और सफलता : उसने कई बार असफलताओं का सामना किया, लेकिन कभी हार नही मानी। एक घटना जिसने उसकी सोच बदल दी वह थी कॉलेज के एक भाषण प्रतियोगिता में उसे सभी ने नीचा दिखाया लेकिन उसने अपनी मेहनत से साबित किया कि वह किसी से कम नहीं।

आज नेहा एक प्रेरणा है वह एक सफल प्रोफेसर है, उसने न केवल अपने परिवार बल्कि समाज को भी दिखाया, कि लड़कियाँ कमजोर नहीं होतीं। उसने अपने गांव में एक स्कूल खोला है, वह अन्य लड़कियों को सशक्त बनाना चाहती है। नेहा की कहानी यह साबित करती है कि अगर इच्छाशक्ति हो तो हर चुनौती को पार किया जा सकता है।

- **लड़कियों को सपने देखने का और उन्हें पूरा करने का अधिकार है।**
- **परिस्थितियाँ चाहे जितनी कठिन क्यों न हों मेहनत और आत्मविश्वास से सबकुछ संभव है।**
- **शिक्षा सबसे बड़ा हथियार हैं।**

खुशी चन्द्र
B.A. V Sem.

कठोपनिषद् सार

कठोपनिषद् कथा की यह विशिष्टता है कि इसमें कर्तव्य, यज्ञ तथा ब्रह्म विद्या इन तीनो का पारस्परिक समन्वय स्थापित करते हुए यह दर्शाया गया है कि ये तीनों परस्पराश्रित, अन्योन्याश्रित तथा एक दूसरे के पूरक हैं। ब्रह्म रूपी मंजिल तक पहुंचने के लिए प्रथम दो (कर्तव्य तथा यज्ञा–यज्ञ) सोपान चढ़ना परमावश्यक है।

कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित है। इसमें यम और नचिकेता के संवाद के माध्यम से नैतिकता, नचिकेता अग्नि और उससे प्राप्त होने वाले फल तथा ब्रह्म विद्या का विवेचन अत्यन्त सुबोध, सरल, सरस भाषा में किया गया है।

कठोपनिषद में सांस्कृतिक मूल्यों की भी चर्चा की गयी है कथा के अनुसार वाजश्रवा के पुत्र वाजश्रवस् ने यज्ञ किया, वाजश्रवस् का एक पुत्र था नचिकेता, जो अभी बालक था। इस विश्वजीत नामक यज्ञ में उन्होंने अपना सब कुछ दान में दे दिया किन्तु लोभवश उत्तम गायों को रोक लिया और उसके बदले में बूढ़ी गायो को दान में दे दिया। यह देखकर नचिकेता ने सोचा कि पिता अदेय वस्तु का दान कर रहे हैं, जो ठीक नहीं हैं। उसने पिता से पूछा, कस्मै मां दास्यसीति' (आप मुझे किसको दोगे?) पिता के उत्तर न देने पर उसने यह प्रश्न तीन बार पूछा। तब पिता ने कहा, मृत्यवे त्वा ददामीति' (मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूँ) कहने के बाद पिता को अपने वचनों पर दुख हुआ परंतु नचिकेता ने पिता को अपनी बात पर दृढ रहने को कहा आज्ञा का पालन करने के लिए वह यमराज के घर पहुंच गया। जिस समय वह यमराज के घर पहुंचा, वे घर पर नहीं थे। उसने तीन रात्रियों तक यमराज की प्रतीक्षा की। जब यमराज घर लौटे तो उन्हें यह सूचना दी गयी कि आपके घर पर तीन दिन से एक अतिथि बिना खाये – पिये बैठा है। यमराज ने नचिकेता की सेवा की और कहा, आपने तीन रात्रियों तक मेरी प्रतीक्षा की है, अतः उसके बदले में तीन वर माँग लो।

नचिकेता ने प्रथम वर मांगा कि मेरे पिता की चिन्ता दूर हो जाए, वे मेरे प्रति क्रोध रहित हो जायें और मेरे लौटने पर मुझे पहचान कर मेरा स्वागत करें। यम ने उसका यह वर स्वीकार कर लिया। नचिकेता ने दूसरे वर के द्वारा स्वर्ग को दिलाने वाली अग्नि अर्थात यज्ञ के बारे में जानना चाहा। यम ने नचिकेता को सारी जानकारी दी जिसको नचिकेता ने याद करके सुना भी दिया। प्रसन्न होकर यम ने कहा कि लोग आज से इस अग्नि को नचिकेता के नाम से ही जानेगे। इसके बाद यमराज ने तीसरा वर माँगने को कहा, नचिकेता ने पूछा, मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है? कुछ कहते हैं कि वह रहता है और कुछ कहते है कि वह नहीं रहता है यह मैं आप से–जान सकूँ यही मेरा तीसरा वर है। यमराज ने नचिकेता को समझाया कि यह एक सूक्ष्म विषय है। इसको तो देवता भी नहीं जानते है, अतः कुछ और माँग लो। यमराज ने नचिकेता को अनेक प्रलोभन दिए, किन्तु वह अपनी बात पर अड़िग रहा। उसकी सच्ची जिज्ञासा से संतुष्ट होकर यमराज ने उसे आत्मज्ञान का उपदेश दिया, जो इस उपनिषद का मुख्य विषय हैं।

इस कथा से हम भारतीय संस्कृति के चार पुरुषार्थो को संक्षेप में समझ सकते हैं। नचिकेता का प्रथम वर पिता की प्रसन्नता से जुड़ा हुआ है, जो यह बताता है कि मनुष्य का धर्म है कि वह अपने माता–पिता और अन्य गुरुजनों का आदर करे, उनके आदेश का पालन करे। दूसरा वर स्वर्ग की प्राप्ति की चर्चा करता है। भारतीय संस्कृति पर बल दिया गया है कि मनुष्य को अच्छे कर्म करने चाहिए, क्योंकि उसी आधार पर अगला जन्म मिलता हैं। तीसरा वर आत्मज्ञान से संबंधित है। इसका उपदेश देने से पहले यमराज ने नचिकेता को संसार के अनेक भोगों का प्रलोभन दिया जैसे राज्य, धन, भूमि, आयु, वाहन, स्त्री, गीत–नृत्य आदि। नचिकेता ने इन सब को स्वीकार नहीं किया, पर साथ ही यह भी कहा कि जितना धन और आयु चाहिए वह तो आपके दर्शन से मिल ही जायेगी। वरदान मे तो मुझे ज्ञान ही चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि उपनिषद सांसारिक सुखो को ठुकराने की बात नहीं कर रहा है। अर्थ और काम भी जीवन के लिए महत्वपूर्ण पुरुषार्थ हैं। मोक्ष मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है और आत्मज्ञान मोक्ष का आधार है इसलिए नचिकेता ने उसी की जिज्ञासा की। गुरु और शिष्य के मधुर सम्बन्ध और जीवन में बुद्धि की महत्ता भी इस कथा में दिखायी गयी है।

रीतू रानी
B.A. VI Sem.

ज़िन्दगी को जागरूकता के साथ जीकर देखें

बाहर से आप जिसे भी बदलें, जितना भी बदलें वह असली परिवर्तन नहीं होगा। ज़िन्दगी को जागरूकता के साथ जीकर देखें तो हर पल आप जोश के साथ रहेंगें। एक क्षण भी पुराना नहीं रहेगा।

रोज़ रोज़ वही दफ्तर, वही लोग, वही परिवार, कभी आपने महसूस किया होगा कि बिना किसी परिवर्तन के यह घिसी–पिटी ज़िन्दगी एक बोरियत है। कहीं कोई बदलाव नहीं है, ऐसा महसूस करना आपके मन का खेल है। कार्यालय बदल दें, तो घर बदलने की इच्छा होगी। घर बदलने पर परिवार बदलने का मन करेगा। यह एक अंतहीन समस्या है। दरअसल यहाँ परिवर्तन के बिना कुछ भी नहीं चलता। कल जिस सूरज को देखा था, आज का सूरज उससे अलग ही है। यह जो क्षण है बिल्कुल नया है। ऐसी कोई न कोई बात इस क्षण में घटती है, जो पिछले क्षण में नहीं थी। कहीं कोई पत्ता झड़ा होगा, कहीं कोई बीज अंकुरित हुआ होगा। इस क्षण में आप पिछले साल, कल या अभी बीते क्षण की तरह अनुभूति को महसूस नहीं कर सकते। उत्साह हो या अवसाद वह आपके मन की उपज है। आप मन के सहारे जी रहे हैं। आप पर ऐसी भावना हावी हो रही है कि आप कल के ही काम को आज भी दोहरा रहे हैं।

आसमान ने यह याद नहीं रखा है कि कल बादल कहाँ कहाँ थे ? समुद्र ने इसका लेखा–जोखा नहीं रखा है कि कल कितनी लहरों को लेकर तट से खेला था। विश्व में जहाँ भी देखें घटनाएँ भले ही कुछ खास निशानियाँ छोड़ी गई हों, बोझ बनकर स्मृतियों को नहीं दबोचती। प्रकृति में कोई भी चीज पुरानी नहीं है। हर चीज नई–नवेली है, विज्ञान भी यही कहता है। एक चटटान तक अपने स्पंदनों को प्रकट करते हुए हर पल खुद को नया बनाती रहती है। ज़िन्दगी कभी भी उकसाने वाली नहीं है। आप जिस पृथ्वी पर खड़े है वह भी एक जगह स्थिर न रहकर निरंतर घूमती रहती है। जिस किसी भी क्षण आप मुँह उठाकर देखते हैं तब आसमान के एक नये हिस्से को ही देखते हैं लेकिन आपका मन ही है जो उस पर ध्यान देने में असमर्थ होकर परेशान रहता है यदि आप उसे वश में रखने की कला न जानकर बंधन मुक्त कर दें, तो मन अलग तरह से काम करना नहीं जानता।

आप अपने मन के गुलाम हो गए, यही उसका कारण है मन का उपयोग कैसे करना चाहिये। यह कला चूँकि आपको नहीं आती, इसलिए वह आपका उपयोग कर रहा है। एक मुकाम पर आकर वह आपको निगलकर एकदम निकम्मा बना देंगें। इससे छूटने का एक मार्ग है जो भी काम करे उसमे खुद को सम्पूर्णता के साथ डुबो दें। जब आप अपना काम खुशी से करेंगें तो आप सम्पूर्ण रूप से क्रियाशील रह सकेंगें। मजबूरी के कारण काम करने पर रक्तचाप, हृदयरोग और दूसरे सारे मनोरोग बिना बुलाए आपके अन्दर घर कर लेंगे।

डॉ. राजीव कुमार सक्सेना

वेदांग परिचय

वेदांग : वेद हमारे भारतीय धर्म का प्रधान पीठ है तथा अतिशय आदर सम्मान एवं पवित्रता की दृष्टि से देखा जाता है यह बात उसके उदयकाल के कुछ ही पीछे सम्पन्न हो गई वेद का अक्षर–अक्षर पवित्र माना जाने लगा, तथा उसका परिवर्तन तथा स्वरूपता महान अनर्थ का कारण समझी जाती थी। वेद के स्वरूप तथा अर्थ के संरक्षण के सिमित ही वेदांग साहित्य का उदय हुआ, इसे सहायक साहित्य कहा गया था क्योंकि छः वेदांगो के नाम तथा क्रम का वर्णन मुण्डकोपनिषद् में हमें सबसे पहले मिलता है अपरा विद्या के अन्तर्गत चतुष्ट्य के अनन्तर वेद के षड़ अंगो का नामोल्लेख किया गया है।

वेदांग का अर्थ तथा महत्व

अंग शब्द का व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ है उपकारक अंग्यन्ते ज्ञायन्ते अमीभिरिति अंगानि अर्थात् जिनके द्वारा किसी वस्तु के स्वरूप को जानने में सहायता प्राप्त होती है उन्हे अंग कहते है। वेद स्वयं एक दुरूह विषय ठहरा भाषा तथा भाव दोनों की दृष्टि से। वेद का अर्थ जानने में उसके कर्मकाण्ड के प्रतिपादन में तथा इस प्रकार की सहायता देने में, जो सहयोग देने में उपयोगी शास्त्र है उन्हे वेदांग के नाम से पुकारते हैं वेद के यथार्थ ज्ञान के लिए छः विषयों को जानने की नितान्त आवश्यकता है। शब्दमय मन्त्रो के यथार्थ उच्चारण को सर्वप्रथम महत्व दिया गया है इस उच्चारण के निमित्त प्रवर्तमान वेदांग शिक्षा कहलाता है, वेद का मुख्य प्रयोजन वैदिक कर्मकाण्ड यज्ञ का यथार्थ अनुष्ठान है।

वेद में स्वरों की प्रधानता का एक मुख्य कारण भी है और वह है अर्थनियामकता अर्थात् शब्द के एक होने पर भी स्वर भेद से उसका अर्थ भेद हो जाया करता है स्वरों में एक साधारण भी त्रुटि हो जाने पर अर्थ का अनर्थ हो जाया करता है यज्ञ का यथावत निर्वाह इसलिए कठिन व्यापार है।

इस विषय में एक अत्यन्त प्राचीन आख्यायिका प्रचतिल है कि वह अपने शत्रु के विनाश के लिए एक वृहद यज्ञ का आयोजन किया उसमें लोगों की संख्या भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थी होम का प्रधान मंत्र इन्द्रशत्रु वर्धस्व था, जिसका अर्थ है कि इन्द्र का शत्रु घातक विजय प्राप्त करे इस प्रकार इन्द्रशत्रु शब्द में इन्द्रस्य शत्रु यह षष्ठी तत्पुरूष समास अभीप्सित था परन्तु यह अर्थ तभी सिद्ध हो सकता था जब इन्द्रशत्रु अन्तोदात्त हो लेकिन ऋत्विजों की असावधानता के स्थान पर आदि उदात्त (इन्द्र शब्द में इस प्रकार) का उच्चारण किया गया इस स्वर परिवर्तन से यह शब्द समास तत्पुरूष से बहुब्रीहिं बन गया और इसका अर्थ हो गया इन्द्र शत्रु यस्य अर्थात इन्द्र जिसका घातक शत्रु है इस प्रकार यज्ञ यजमान के लिए ठीक उल्टा ही सिद्ध हुआ जो यज्ञ यजमान की फलसिद्धि के लिए किया था वहीं उसके लिए घातक सिद्ध हुआ।

शोभा कुमारी
B.A. VI Sem.

स्वच्छता – एक स्वस्थ जीवन की कुंजी

प्रस्तावना : स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है यह न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है बल्कि यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य और समाज के लिए भी महत्वपूर्ण है स्वच्छता का अर्थ है साफ–सफाई । यह हमारे आस–पास के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखने की प्रक्रिया है स्वच्छता के बिना हमारे आस पास का वातावरण गंदा और अस्वच्छ हो जाता है जिससे हमारे स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। स्वच्छता हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती है। क्योकि यह हमें बीमारियों से बचाती है स्वच्छता हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती है क्योंकि यह हमें तनाव और चिंता से मुक्त करती है स्वच्छता हमारे समाज को भी बेहतर बनाती है क्योंकि यह हमें स्वच्छ और सुन्दर वातावरण प्रदान करती है हमें स्वच्छता को बनाये रखने के लिए नियमित रूप से प्रयास करते रहना चाहिए है ताकि हम एक स्वस्थ और स्वच्छ जीवन जी सकें।

स्वच्छता के फायदे

बीमारियों से बचाव : स्वच्छता हमें बीमारियों से बचाती है जैसे– कि डायरिया, टाइफाइड और अन्य जलजनित बीमारियाँ,

शारीरिक स्वास्थ्य : स्वच्छता स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है जैसे कि तनाव और चिंता से मुक्ति

मानसिक स्वास्थ्य : स्वच्छता हमारे मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है

सामाजिक स्वच्छता : स्वच्छता हमारे समाज को बेहतर बनाती हैं जैसे कि सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता और समुदाय की स्वच्छता ।

स्वच्छता के तरीके

स्वच्छता को बनाये रखने लिए हमें कई कदम उठाने होते है हमे अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ रखना होता है हमें अपने हाथों को नियमित रूप से धोना होता है खासकर खाने से पहले, शौचालय जाने के बाद

निष्कर्ष : स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है और हमारे समाज को एक सुंदर और स्वच्छ वातावरण प्रदान करती है।

दीप्ति गड़कोटी
B.A. III Year

गृहस्थ धर्म

याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णित गृहस्थधर्म : भारतीय धर्मशास्त्रों में मानव जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया गया है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास । इन चारों में सबसे अधिक महत्व गृहस्थाश्रम को प्रदान किया गया है, क्योंकि यह समाज और धर्म दोनों की धुरी हैं। याज्ञवल्क्यस्मृति, जो कि एक प्रमुख धर्मशास्त्र ग्रंथ है, गृहस्थधर्म को परिभाषित करती है और इसमे गृहस्थ की जिम्मेदारियों, कर्तव्यों तथा उसके जीवन की मर्यादाओ का वर्णन मिलता है।

गृहस्थ धर्म की महत्ता : गृहस्थाश्रम केवल पारिवारिक जीवन का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि का माध्यम भी है। गृहस्थ को धर्म का मूल कहा गया है, क्योकि वही सभी आश्रमो को धारण करता है और उत्तम धर्म का पालन करता है। याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार गृहस्थ ही वह आश्रम है, जो अन्य तीन आश्रमों का पालन पोषण करता है।

''तस्मात्सर्वाश्रमाणां तु यथावद्भरणं गृही। कर्तव्यं नियमेनैव धर्ममूलं हि स स्मृतः।''

अर्थात् गृहस्थ को सभी आश्रमों का पालन–पोषण नियमपूर्वक करना चाहिए,
क्योकि वही धर्म का मूल है। अतः इसे आश्रमों का आधार कहा गया हैं।

(गृहस्थ के प्रमुख कर्तव्य)

1. **पंचमहायज्ञों का पालन** :–
   (क) ब्रह्मयज्ञ (वेदपाठ, स्वाध्याय, संध्या) (ख) देवयज्ञ (देवताओं की पूजा)
   (ग) पितृयज्ञ (पितरों का तर्पण) (घ) भूतयज्ञ (पशु–पक्षियों आदि की सेवा)
   (ङ) नृयज्ञ (अतिथियों का सत्कार)
   ये यज्ञ गृहस्थ को प्रतिदिन करने चाहिए, जिससे वह अपने कर्तव्य को पूर्ण कर सके।
2. **धार्मिक और सामाजिक उत्तरदायित्व** :– याज्ञवल्क्य गृहस्थ के उपार्जन में धर्म का पालन करने की बात करते हैं वह यह स्पष्ट करते है कि धन का अर्जन न्यायपूर्ण और समाजोपयोगी होना चाहिए।
3. **अतिथि सत्कारः**– ''अतिथिदेवो भवः'' की भावना याज्ञवल्क्य में विशेष महत्व दिया गया है। गृहस्थ का कर्तव्य है कि वह अतिथि का स्वागत खुले हृदय से करे। यह न केवल सामाजिक बल्कि धार्मिक दायित्व भी है। यदि गृहस्थ के घर मे कोई अतिथि न आए तो वह घर अग्निहीन माना जाता है।
4. **दान एवं धर्मकर्म** :– याज्ञवल्क्य दान को विशेष महत्व देते हैं। गृहस्थ को अपनी आय का एक भाग दान, यज्ञ तथा पुण्य कार्यों में लगाना चाहिए। विशेष रूप से ब्राह्मणों, विद्वानों, दरिद्र और रोगियों की सहायता का उल्लेख किया गया है
5. **नैतिक मर्यादा और संयम** : गृहस्थ को अपने जीवन में संयम, सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा जैसे गुणों को अपनाना चाहिए। याज्ञवल्क्यस्मृति कहती है कि गृहस्थ जीवन भोग का नहीं, उत्तरदायित्व और संतुलन का जीवन है। वासनाओं और अनाचार से दूर रहकर ही गृहस्थधर्म का पालन कर सकते हैं।

इस प्रकार, गृहस्थ केवल एक सामाजिक पद नहीं, अपितु एक महान धार्मिक उत्तरदायित्व है। याज्ञवल्क्यस्मृति में वर्णित गृहस्थधर्म केवल पारिवारिक जीवन की सीमाओं तक सीमित नहीं है, अपितु वह समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावनाओं से ओत–प्रोत है। यदि गृहस्थ अपने कर्तव्यों का पालन धर्मपूर्वक करे तो न केवल उसका जीवन सफल होता है, अपितु वह समाज और राष्ट्र के लिए भी आदर्श बनता है।

आदित्य राज ओझा
B.A. VI Sem.

हर विचार हमारा भविष्य बनाता है

''बचपन में ही हमारी आस्थाएं स्थापित होती है और फिर उन्हीं आस्थाओं का अनुभव करते हुए हम जीवन में आगे बढ़ते हैं''

हम जो कुछ भी अपने विषय में सोचते हैं वह हमारे लिए सच हो जाता है। मैं अपने जीवन में हर अच्छी या बुरी चीज के लिए स्वयं जिम्मेदार हूँ। हमारे मस्तिष्क में आने वाला हर विचार हमारा भविष्य बनाता है। हममे से हर व्यक्ति अपने विचारों और अपनी भावनाओं द्वारा अपने अनुभवों को जन्म देता है। हम खुद परिस्थितियों को जन्म देते हैं और फिर अपनी कुण्ठा के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को दोषी ठहराते हुए अपनी ऊर्जा नष्ट करते हैं। कोई व्यक्ति, कोई स्थान और कोई चीज हमसे अधिक शक्तिशाली नहीं है, क्योकि अपने मस्तिष्क में केवल हम ही सोचते हैं।

जब हम अपने मस्तिष्क में शान्ति, तालमेल और सन्तुलन बना लेते हैं तो वह सब हमारे जीवन में भी आ जाता है। हम जो भी स्वीकार करते हैं हमारा अवचेतन मन उसे स्वीकार कर लेता है। हमारे पास सोचने के लिए असीमित विकल्प होते हैं। हम अपने साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा हमारे माता–पिता हमारे साथ करते हैं।

हम में से हर कोई इस धरती पर एक सुनिश्चित समय और स्थान पर जन्म लेता है। हम यहाँ एक विशेष पाठ पढ़ने के लिए आए हैं, जो हमें आध्यात्मिक विकास के पथ पर आगे बढ़ाएगा। हमारे बचपन में ही हमारी आस्थाएं स्थापित होती हैं और फिर उन्हीं आस्थाओं का अनुभव करते हुए जीवन में आगे बढ़ते हैं। अपने जीवन में पीछे की ओर देखिए और ध्यान दीजिए कि कितनी बार आप उस अनुभव से गुजरे हैं। आपने उन अनुभवों को एक के बाद एक स्वयं बनाया, क्योंकि वे आपके अपने विश्वास को प्रतिबिंबित कर रहे थे। यह मायने नहीं रखता कि हमें कितने लम्बे समय से कोई समस्या थी या वह कितनी बड़ी है, या वह हमारे जीवन के लिए कितनी घातक है।

डॉ. राजीव कुमार सक्सेना

''समय से पहले और भाग्य से ज्यादा न कभी मिला है, न मिलेगा''

कवि सम्मेलन

भारत और नेपाल के कवियों ने बांधा समां

मंजू जोशी के काव्य संग्रह का विमोचन

हल्द्वानी। हल्द्वानी निवासी लेखिका मंजू जोशी के काव्य संग्रह का बीते दिवस बनबसा राजकीय महाविद्यालय में विमोचन किया गया। बुलंदी साहित्यिक सेवा समिति एवं राजकीय महाविद्यालय बनबसा चंपावत हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में अध्यक्ष डा. नागेंद्र द्विवेदी, डा. आभा शर्मा, डा. राजविंदर कौर व बादल बाजपुरी की उपस्थिति में परछाई पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में नेपाल मूल से आये साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाएं प्रस्तुत की। हल्द्वानी निवासी साहित्यकार मंजू जोशी मनु की काव्य संग्रह मेरी परछाई का सभी अतिथियों ने सराहना की। मंजू जोशी पूर्व में एक निजी विद्यालय की शिक्षिका रही है और वर्तमान में पंजाब नेशनल बैंक पंतनगर में कार्यरत हैं।

डॉ. अरुण प्रताप सिंह भदौरिया उत्तराखण्ड में साहित्य शिरोमणि सम्मान से सम्मानित

महाविद्यालयी कार्यशालाएँ

विकसित भारत, नई आशाएं और संभावनाएं पुस्तक का विमोचन

बनबसा कॉलेज में हुई नैक मान्यता कार्यशाला

अमर उजाला 06.04.3025

बनबसा (चंपावत)। बनबसा स्थित राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. आनंद प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में नैक प्रत्यायन पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें नैक प्रत्यायन के प्रमुख बिंदुओं पर प्रजेंटेशन दिया गया।

मुख्य अतिथि यूओयू हल्द्वानी से आए कुल सचिव डॉ. खेमराज भट्ट ने महाविद्यालय को विश्वविद्यालय प्रदत्त कंप्यूटर और विभिन्न उपकरणों शुभारंभ किया। नैक नोडल डॉ. बीएन दीक्षित ने नैक प्रत्यायन की प्रगति पर आख्या प्रस्तुत की। मुख्य वक्ता डॉ. योगेश शर्मा, डॉ. बीके सिंह, डॉ. एलपी वर्मा, डॉ. अनिता दीक्षित और डॉ. शर्मिला सक्सेना ने विचार प्रकट किए।

वहां नैक संयोजक डॉ. डीके गुप्ता, डॉ. वाईके शर्मा, डॉ. अनिता दीक्षित, डॉ. आनंद प्रकाश सिंह, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. सुधीर मलिक, डॉ. राजीव सक्सेना मौजूद रहे। संवाद

माता–पिताः जीवन के आधार स्तंभ और मार्गदर्शक

माता–पिता का स्थान हमारे जीवन में सर्वोपरि है। वे केवल हमारे जन्मदाता ही नहीं। बल्कि हमारे अस्तित्व के आधार स्तंभ और हर कदम पर प्रेरणास्रोत होते हैं। उनके बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव है, क्योंकि वे ही हमें इस दुनिया में लाते हैं और हमारे विकास की नींव रखते हैं।

जन्म से लेकर वयस्कता तक, और उसके बाद भी माता–पिता की भूमिका हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहती है। वे न केवल हमें शारीरिक और भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि हमें निस्वार्थ प्रेम, अटूट सहारा और नैतिक मूल्यों की गहरी समझ भी देते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि सही–गलत क्या है, जीवन के संघर्षों का सामना कैसे करना है और विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे अडिग रहना है। उनकी दी गई शिक्षाएँ और संस्कार ही हमें एक बेहतर इंसान बनने में मदद करते हैं। वे हमें अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं और हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करते हैं।

माता–पिता का प्यार और सहारा हमें जीवन की हर डगर पर शक्ति देता है। उनके अनुभवों और ज्ञान से हमें जीवन की गहरी सीख मिलती है. जो हमें सही दिशा में आगे बढ़ाने में सहायक होती है। वे हमारे सपनों को पूरा करने में हमारा मार्गदर्शन करते हैं और हमारी क्षमताओं पर विश्वास करने के लिए हमें प्रोत्साहित करते हैं। उनके साथ बिताया गया हर पल, चाहे वह हँसी–खुशी का हो या किसी मुश्किल को सुलझाने का, हमेशा आनंद और सीख से भरा होता है। वे जीवन की जटिलताओं को सरल बनाने में मदद करते हैं और हमें हर परिस्थिति में आत्मविश्वास से खड़े रहना सिखाते हैं।

अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने माता–पिता के प्रति हमेशा कृतज्ञता व्यक्त करें। उनका त्याग, निस्वार्थ प्रेम, धैर्य और अटूट समर्थन ही हमें वह बनाता है जो हम है। वे हमारे जीवन के सच्चे निर्माता, संरक्षक और सबसे पहले गुरु हैं। उनके प्रति सम्मान, प्रेम और सेवा का भाव रखना ही उनके अपार योगदान का सबसे उचित प्रतिदान है। माता–पिता का आशीर्वाद ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है, जो हमें हर क्षेत्र में सफलता और संतुष्टि दिलाता है।

लक्ष्मी वर्मा
B.A. III Sem.

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत
हिन्दी विभाग की पंचवर्षीय यात्रा 2020–2025

वाङ्मयं हि सुधा लोके, ज्ञानचक्षुः सनातनम्। हिन्दीभाषा प्रदीपेन, देदीप्यतेऽधुना हि तत्॥

प्रस्तावना राजकीय महाविद्यालय बनबसा का हिन्दी विभाग, भारत की राजभाषा हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, ज्ञान–प्रसार और साहित्यिक–सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन हेतु समर्पित है। भारत–नेपाल सीमा पर स्थित यह विभाग एकमात्र संकाय सदस्य के अथक प्रयासों से संचालित है, जिसका लक्ष्य इस सीमावर्ती क्षेत्र में सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करना है। महाविद्यालय की साहित्यिक पत्रिका श्री पूर्णागिरि दर्पण के प्रकाशन का विभाग स्वागत करता है।

संकाय–परिचय : हिन्दी विभाग का संचालन **अतिथि सहायक प्रोफेसर श्री हेम कुमार गहतोड़ी** कर रहे हैं। जिनकी हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति गहन निष्ठा विभाग के अकादमिक स्तर को उन्नत करती है। उनका ध्येय 'हिंदी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में सेवा प्रदान करते हुए स्वयं को शैक्षणिक एवं व्यावसायिक उन्नति के नवोन्मेषी आयामों को स्पर्श करने हेतु निरंतर प्रेरित रखना' है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से **एम.ए. तथा बी.ए. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं, एवं यू.जी.सी. नेट (हिन्दी) भी उत्तीर्ण किया है।** श्री गहतोड़ी के शोध–प्रयास (२०२०–२०२५) उनके निरंतर अध्ययन को दर्शाते हैं। उनके प्रमुख प्रकाशनों और शोध–प्रस्तुतियों में भारतीय साहित्य एवं ज्ञान परंपरा में मानवाधिकार, राम विषयक साहित्यिक अवदान, भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी का विकास, पर्यावरणीय चिंतन (सभी विद्या मिश्र के संदर्भ में, २०२५–२०२४) तथा विविधता में एकता डॉक्टर विद्यानिवास मिश्र का भारतीय सांस्कृतिक दर्शन (२०२४) शामिल हैं। अकादमिक उन्नयन हेतु, उन्होंने २०२०–२०२५ के दौरान केंद्रीय हिंदी निदेशालय, यूजीसी व अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वेबिनारों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं में सक्रिय प्रतिभागिता की है, जो विभाग के जीवंत अकादमिक परिवेश के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

हिन्दी विभाग की पंचवर्षीय गतिविधियाँः एक विश्लेषणात्मक सिंहावलोकन (२०२१–२०२५) : विभाग द्वारा श्री हेम कुमार गहतोड़ी के प्रयासों से, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और साहित्यिक–सांस्कृतिक जागरुकता हेतु अनेक गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया है। इन आयोजनों ने महाविद्यालयमें एक सृजनात्मक वातावरण का निर्माण किया है और विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का मंच दिया है।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पर्व : विभाग प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, हिन्दी दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस तथा प्रमुख साहित्यकारों की जयंतियों को उत्साह से मनाता है। इन अवसरों पर निबंध लेखन, काव्य–पाठ, कहानी–लेखन, तात्कालिक भाषण, साहित्यिक प्रश्नोत्तरी, पोस्टर–निर्माण एवं रंगोली जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। जैसेः सत्र २०२०–२१ में किरनचंद (तृतीय वर्ष) ने काव्य पाठ में प्रथम स्थान प्राप्त किया, और सत्र २०२१–२२ में कुमारी गुड़िया (प्रथम वर्ष) ने निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्जित किया। **कोविड–19 महामारी के दौरान रचनात्मक अनुकूलन (2020–2021)** : महामारी के संकटकाल में भी विभाग ने शिक्षण की निरंतरता बनाए रखी।

टेलीग्राम, फेसबुक पेज तथा 'हिन्दी ज्ञान' यूट्यूब चैनल जैसे डिजिटल मंचों का उपयोग कर पाठ्यक्रम सामग्री और ऑनलाइन साहित्यिक गतिविधियाँ जारी रखी गई। 'कोरोना महामारीः चुनौतियों और मानवीय संवेदनाएं विषय पर आयोजित ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता में अमित कुमार (बी.ए. द्वितीय वर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ऑनलाइन शिक्षक दिवस और आजादी का अमृत महोत्सव के तहत ऑनलाइन रंगोली प्रतियोगिता में कमल जोशी (प्रथम वर्ष) विजेता रहे. जो विषम परिस्थितियों में भी विभाग के समर्पण का प्रमाण है। **गतिविधियों का बहुआयामी विस्तार (२०२१–२०२५)** : कोविड–उपरांत विभाग ने अपनी गतिविधियों का विस्तार किया। हिन्दी सप्ताह, अनुवाद कार्यशालाएँ, अकादमिक संगोष्ठियों नियमित रूप से आयोजित की गई। कैरियर कार्यशालाओं (२६ मई २०२३) और ए.आई. व डिजिटल तकनीकों पर परिचर्चाओं (१३ अगस्त २०२४) ने विद्यार्थियों को नवीन संभावनाओं की दिशा दी। अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों (२३ जुलाई २०२३) ने क्षेत्रीय प्रतिभाओं को व्यापक मंच प्रदान किया। सामाजिक सरोकारों (जैसे नशा मुक्त भारत अभियान) और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरुकता बढ़ाने वाले कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। सत्र २०२४–२५ में 'हिन्दी और रोजगार के अवसर' निबंध प्रतियोगिता में कुमारी गुंजन (द्वितीय वर्ष) और 'साहित्यिक प्रतीक रंगोली कार्यक्रम में कुमारी भावना (प्रथम वर्ष) की विजय विद्यार्थियों की व्यापक सहभागिता दर्शाती है।

विभागीय परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम (तिथि के अनुसार)

14 सितंबर 2024 : **हिंदी दिवस निबंध प्रतियोगिताः** हिंदी और रोजगार के अवसर विषय पर गुंजन (द्वितीय वर्ष) विजेता।

23 सितंबर 2024 : **अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस प्रतियोगिता/प्रश्नोतरीः** महिला सशक्तिकरण/दहेज प्रथा पर पूजा रावत द्वित्तीय वर्ष) विजेता

20 अक्टूबर 2024 : **निबंध प्रतियोगिताः** 'भविष्य का भारत' विषय पर भावना (प्रथम वर्ष) विजेता।

10 नवंबर 2024 : **काव्य पाठ प्रतियोगिताः** आशा का संचार विषय पर योगेश मिश्रा (प्रथम वर्ष) विजेता ।

5 दिसंबर 2024 : **कहानी लेखन प्रतियोगिताः** एक प्रेरणादायक किस्सा विषय पर रिया कुमारी (प्रथम वर्ष) विजेता द्वितीय

10 जनवरी 2025 : **अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस निबंध प्रतियोगिताः** 'विश्व में हिंदी का बढ़ता प्रभाव विषय पर पूजा (द्वितीय वर्ष) विजेता।

21 फरवरी 2025 : **मातृभाषा दिवस निबंध प्रतियोगिताः** 'हमारी पहचानः हमारी मातृभाषा विषय पर रेणुका (द्वित्तीय वर्ष) विजेता।

20 मार्च 2025 : **पोस्टर प्रतियोगिताः** 'पर्यावरण बचाओ, जीवन बचाओ' विषय पर रिया (प्रथम वर्ष) विजेता।

5 अप्रैल 2025 : **रंगोली कार्यक्रमः** 'साहित्यिक प्रतीक' विषय पर भावना (प्रथम वर्ष) विजेता।

18 अप्रैल 2025 : **रंगोली प्रतियोगिताः** 'भारतीय त्योहार' विषय पर साक्षी (प्रथम वर्ष) विजेता।

सत्र 2024–25 के लिए हिन्दी विभागीय छात्र परिषद के पदाधिकारीः

अध्यक्षः प्रिया सक्सेना (तृतीय वर्ष), **उपाध्यक्षः** रेणुका (द्वितीय वर्ष) द्वितीप , **सचिवः** डोली (द्वितीय वर्ष) द्वितीय **सह–सचिवः** अनुष्का (प्रथम वर्ष), **कोषाध्यक्षः** दिया (प्रथम वर्ष), **विद्यार्थी नामांकनः** हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय बनबसा के हिन्दी विभाग में विगत पाँच शैक्षणिक सत्रों (२०२०–२०२५) में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या विभाग के प्रति उनके आकर्षण को दर्शाती है।

सत्र	प्रथम वर्ष/सेमेस्टर	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	कुल विद्यार्थी
2020–21	72	35	34	141
2021–22	66	64	35	165
2022–23	73	44	50	167
2023–24	80	58	32	170
2024–25	114	55	29	198

नामांकन के आँकडे (२०२०–२५) दर्शाते हैं कि विभाग, हिन्दी साहित्य के प्रति विद्यार्थियों का आकर्षण बनाए रखने में सफल रहा है, उत्साहजनक संख्या विभाग की निरंतर सक्रियता और सकारात्मकता छात्र–प्रतिक्रिया का परिचायक है।

हेम कुमार गहतोड़ी

हर व्यक्ति का महत्व

एक बार एक विद्यालय में परीक्षा चल रही थी। सभी बच्चे अपनी तरफ से पूरी तैयारी करके आये थे। कक्षा का सबसे ज्यादा पढ़ने वाला होशियार लड़का अपने पेपर की तैयारी को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त था। उसको सभी प्रश्नों के उत्तर आते थे। लेकिन जब उसने अंतिम प्रश्न देखा तो वह चिन्तित हो गया। सबसे अंतिम प्रश्न में पूछा गया था कि ''विद्यालय में ऐसा कौन व्यक्ति है, जो हमेशा सबसे पहले आता है। वह जो भी है, उसका नाम बताइए'' परीक्षा दे रहे सभी बच्चों के ध्यान में एक महिला आ रही थी। वही महिला जो सबसे पहले स्कूल में आकर स्कूल की साफ सफाई करती। पतली, सावलें रंग की और लम्बे कद की उस महिला की उम्र करीब 50 वर्ष के आसपास थी। ये चेहरा वहाँ परीक्षा दे रहे सभी बच्चों के आगे घूम रहा था। लेकिन उस महिला का नाम कोई नहीं जानता था। इस सवाल के जवाब के रूप में कुछ बच्चों ने उसका रंग–रूप लिखा तो कुछ ने सवाल ही छोड़ दिया। परीक्षा समाप्त हुई और सभी बच्चों ने अपने अध्यापक से सवाल किया कि ''इस महिला का हमारी पढ़ाई से क्या सम्बंध है। इस सवाल का अध्यापक जी ने बहुत ही सुंदर जवाब दिया ''ये सवाल हमने इसलिए पूंछा था कि आपको यह अहसास हो जाये कि आपके आसपास ऐसे कई लोग हैं, जो महत्वपूर्ण कामों में लगे हुए है और आप इन्हें जानते तक नहीं।

शिक्षा : हमारे आस पास की हर चीज व्यक्ति का विशेष महत्व होता है वह खास होता है। किसी को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

आरती चतुर्वेदी
B.A. V Sem.

**कोई भी जन्म से बुद्धिमान नहीं होता है,
ज्ञान अपने प्रयासों से ही प्राप्त होता है**

वैदिक संस्कृति की विश्व को देन

प्रस्तावना : भारतीय सनातन परंपरा में वेद संस्कृति के आधारस्तंभ हैं, जिनसे उदात्त आदर्शों का ज्ञान मिलता है। वैदिक संस्कृति ने विश्व की सभ्यता को पल्लवित किया। जब अन्य देश अज्ञान में थे, भारतीय जन सभी कलाओं में पारंगत और सभ्य जीवन जीते थे। यजुर्वेद इसे विश्वव्यापी बताता है। लगभग दो सौ करोड़ वर्ष पुरानी यह संस्कृति, संयम और संस्कारों के कारण विश्व की श्रेष्ठतम सार्वभौमिक वैज्ञानिक संस्कृति है। वैदिक संस्कृति मानव समाज के परिष्कृत मूल्यों की गौरवमयी सम्पदा है, जो मानव जाति को विकास पथ पर अग्रसर करती है। इसे विश्व की संस्कृतियों की जननी का गौरव प्राप्त है। जहाँ अन्य संस्कृतियाँ काल के गर्भ में समाहित हो गई, वहीं वैदिक संस्कृति आज भी अपने मूल तत्वों से अभिमंडित है।

संस्कृति का अर्थ : 'संस्कृति' शब्द 'सम्' उपसर्ग, 'कृ' धातु और 'क्तिन्' प्रत्यय से निष्पन्न होता है: **'संस्क्रियतेऽनया सा संस्कृति'** : अर्थात्, वह जीवन पद्धति जिससे आत्मा सुसंस्कृत, परिष्कृत होकर सद्गुणसम्पन्न एवं, प्रकाशमय हो, वही संस्कृति है। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार, यह समाज के सम्भेदों को संघटित करने का सेतु है। यह जीवन की उन अवस्थाओं का नाम है जो मनुष्य में व्यवहार, ज्ञान और विवेक पैदा करती है, साहित्य और भाषा बनाती है, जीवन तथा आदर्श को प्रकाश देती है।

वैदिक संस्कृति के चिरंतन तत्व : विश्व की संस्कृतियों में प्राचीनतम वैदिक संस्कृति के तत्व प्राचीन काल से ही रत्नों की भांति स्वयं प्रकाशमान होकर समस्त मानव जाति के लिए पथप्रदर्शक का कार्य करते रहे हैं। प्रमुख तत्व हैं: आध्यात्मिकता, समानता, कर्मनिष्ठा, धर्मपरायणता एवं त्यागभावना, विश्वबन्धुत्वभावना, वर्णाश्रम, संस्कार, और पुरुषार्थचतुष्टय। यह मानव जीवन के आध्यात्मिक, पारलौकिक और भौतिक जीवन को आनंदमय, शांतिपूर्ण तथा समृद्ध बनाती है।

आध्यात्मिकता : वैदिक संस्कृति में अध्यात्म–भावना सबसे महत्त्वपूर्ण है। भारतीय जीवन पद्धति में कार्य से पूर्व ईश्वर में श्रद्धा और धर्म में आस्था ही आध्यात्मिकता है। सृष्टि–उत्पत्ति, आत्मा–परमात्मा संबंध जैसे प्रश्नों का समाधान वैदिक साहित्य से प्राप्त होता है। ऋग्वेद का पुरुष सूक्त परमात्मा के विराट् स्वरूप तथा नासदीय सूक्तं सृष्टि की आदिम अवस्था का वर्णन करता है, और ब्रह्म की सर्वव्यापकता को सर्वोपरि स्वीकार किया गया है। मोक्ष एवं पूर्णता की अवधारणा तथा इसका साधना–पथ मात्र इसी संस्कृति में निहित है, जहाँ प्रत्येक जीव में शिवत्व तथा नर में नारायणत्व के चिन्तन की अनुभूति है।

समानता : वैदिक संस्कृति की धारा में समानता का भाव पग–पग पर दृष्टिगोचर होता है। सम्पूर्ण जगत् को परिवार के रूप में देखा गया है: 'वसुधैव कुटुम्बकम्'। 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' और 'सह नाववतु' 'सह नौ भुनक्तु' जैसी पंक्तियाँ भारतीयों की समानता की भावना को प्रदर्शित करती हैं।

कर्मनिष्ठा : प्राचीन शास्त्रकारों ने कर्म को मानव जीवन की सफलता की कुंजी कहा है। **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'** यह यजुर्वेद का उद्घोष है। वैदिक समाज में महिलाओं को भी उच्च स्थान प्राप्त था। वे वेदों के अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। गार्गी, वात्सी, घोषा और विश्ववारा आदि ऋषिकाओं का उल्लेख वैदिक साहित्य में अनेकत्र मिलता है।

धर्मपरायणता और त्याग : वैदिक संस्कृति का प्रमुख उद्देश्य धर्म और आध्यात्मिकता का पालन करना था। धर्म का अर्थ न्याय, सत्य, अहिंसा और समाज के प्रति कर्तव्य का पालन है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं। वैदिक ऋषियों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में त्याग–भावना को अत्यधिक महत्त्व दिया है। **'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्''** (यजुर्वेद) तथा **'इदम् न मम'** का भाव निहित है। स्वार्थवश अकेला उपभोग करने वाले को पाप का भागी माना है।

विश्वबन्धुत्व : 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की इस विश्वबन्धुत्व एवं विश्वकल्याण की उदात्त भावना के साथ वैदिक साहित्य में ऋषियों ने समस्त प्राणी जगत् की सुख–समृद्धि तथा आरोग्य की कामना की है। भारतीय संस्कृति व्यक्तिगत सुख को त्यागकर सदैव विश्वकल्याण भावना की पक्षधर रही हैः **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'**। **'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'** अर्थात् सम्पूर्ण विश्व एक परिवारसूत्र में निबद्ध हो जाये।

वर्णाश्रम व्यवस्था : सामाजिक व्यवस्था के संचालन में वर्णाश्रम व्यवस्था की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। वेदकालीन सामाजिक व्यवस्था में चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को महत्व दिया गया है। ऋग्वेद में इन चार वर्णों का उल्लेख है। ब्राह्मण धार्मिक कार्यों और शिक्षा से संबन्धित थे, क्षत्रिय समाज की रक्षा करते थे, वैश्य आर्थिक प्रगति के लिए उत्तरदायी थे, और शूद्र श्रमिक वर्ग था।

षोडश संस्कार : प्राचीन काल में संस्कारों के अनुष्ठान को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा पण्डित भीमसेन शर्मा ने सोलह संस्कारों को ही लोकप्रिय तथा आवश्यक माना है। इनका उद्देश्य शरीर, मन, आत्मा और मस्तिष्क की शुद्धि है, जिससे मनुष्य समाज में अपनी आदर्श भूमिका का निर्वहन कर सके। यजुर्वेद में कहा गया है कि संस्कार के बिना मनुष्य आत्मशान्ति तथा आनन्द से वंचित रहता है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सोलह संस्कारों का विधान है। संस्कार वह है, जिसके द्वारा कोई पदार्थ किसी कार्य विशेष के योग्य हो जाता है।

निष्कर्ष : वैदिक संस्कृति का मानव जीवन के कल्याण में अत्यधिक योगदान रहा है, जो सर्वांगीण विकास तथा उन्नति में सहायक मानी गयी है। वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध में लिप्त युवावर्ग को वैदिक संस्कृति ही सन्मार्ग पर ले जा सकती हैः 'नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'। यह केवल भारतीय नहीं, अपितु विश्व संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। भारतीय धर्म, दर्शन, योग और वर्णाश्रम की परम्पराएँ जो वैदिक काल में आरम्भ हुई, वे आज भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रचलित हैं। इसने भारतीय समाज को समानता, सहजता, सरलता, स्थिरता, और समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन किया है।

अन्त में यह ही कहा जा सकता है किः

''धन्यं हि भारतवर्षं धन्या भारतसंस्कृतिः।
भारतीयाः जनाः धन्याः धन्यास्माकं परम्परा''

डॉ0 मुकेश कुमार

महाविद्यालय छात्र संघः प्रगति आख्या एवं योगदान (वर्ष 2020–2025)

भूमिकाः उत्तराखंड शासन द्वारा वर्ष 2014 में स्थापित, राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित है। यह महाविद्यालय सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा से संबद्ध है। इस संस्थान में छात्र संघ, छात्र समुदाय की सक्रिय भागीदारी एवं उनके हितों के प्रतिनिधित्व का एक महत्वपूर्ण मंच है।

1. संवैधानिक आधारः छात्र संघ का कार्य संचालन लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप गठित छात्र संघ, माननीय सर्वोच्च न्यायालय के दिशा–निर्देशों, लिंगदोह समिति की अनुशंसाओं के अनुरूप एवं सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा की छात्र संघ नियमावली के अनुपालन में होता है। यह प्रक्रिया पारदर्शिता एवं निष्पक्षता सुनिश्चित करती है।

2. छात्रसंघ गठनः राजकीय महाविद्यालय बनबसा में प्रथम बार छात्र संघ का विधिवत् गठन सत्र 2016–17 में किया गया था। इससे पहले महाविद्यालय में छात्र गतिविधियाँ अवश्य होती रही होंगी, लेकिन एक औपचारिक छात्र संघ का गठन इसी सत्र में हुआ।

इस प्रथम छात्र संघ के गठन ने महाविद्यालय के छात्र समुदाय को अपनी आवाज उठाने, अपने हितों का प्रतिनिधित्व करने और महाविद्यालय के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए एक संगठित मंच प्रदान किया। यह महाविद्यालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने छात्रों की भागीदारी और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा दिया।

महाविद्यालय बनबसा के छात्र संघ के प्रभारी के रूप में प्रोफेसर (डॉ.) मुकेश कुमार ने वर्ष 2020 से 2025 तक छात्र संघ के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने छात्र संघ के गठन, चुनाव प्रक्रिया और विभिन्न गतिविधियों के आयोजन में सक्रिय मार्गदर्शन प्रदान किया। उनके नेतृत्व में छात्र संघ ने छात्रों के हितों और कल्याण के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

प्रोफेसर डॉ. मुकेश कुमार ने छात्र संघ और महाविद्यालय प्रशासन के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य किया। उन्होंने छात्रों की समस्याओं और मांगों को प्रशासन तक पहुँचाने और उनके समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके मार्गदर्शन में छात्र संघ ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जिससे छात्रों के व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा मिला।

उनकी भूमिका छात्र संघ के लिए एक संरक्षक और मार्गदर्शक की रही। उन्होंने छात्रों को लोकतांत्रिक मूल्यों और नेतृत्व कौशल का महत्व समझाया और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। उनके समर्पण और मार्गदर्शन के कारण, राजकीय महाविद्यालय बनबसा का छात्र संघ छात्रों के बीच एक सक्रिय और प्रभावी निकाय के रूप में उभरा।

3. छात्र संघः छात्र शक्ति का प्रतिनिधित्वः अध्यक्ष से लेकर विश्वविद्यालय प्रतिनिधि तक, छात्र संघ की सुदृढ़ संरचना छात्र समुदाय के हितों एवं आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इस संघ ने शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने, सामुदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने तथा छात्रों के अधिकारों एवं कल्याण के लिए प्रभावी रूप से कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। छात्र संघ ने छात्रों को अपनी रचनात्मकता एवं विचारों को व्यक्त करने तथा महाविद्यालय प्रशासन के समक्ष उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है।

4. निर्वाचन क्रम (वर्षानुसार वर्ष 2020 से 2025 की अवधि) : सत्र 2020–21 व 2021–22 वैश्विक महामारी कोरोना की चुनौतियों के बावजूद, छात्र संघ ने डिजिटल माध्यमों से छात्रों के साथ संवाद स्थापित रखा तथा उनकी शैक्षणिक एवं अन्य समस्याओं को सुना।

सत्र 2022–23 में छात्र संघ अध्यक्ष श्री हरीश सिंह बिष्ट के सक्षम नेतृत्व में छात्र संघ ने छात्रों की विभिन्न समस्याओं को प्राथमिकता दी और उनके समाधान हेतु महाविद्यालय प्रशासन के साथ सहयोगात्मक रूप से कार्य किया। श्री मुन्ना सलमानी एवं सुश्री अंजली माहरा ने उपाध्यक्ष के रूप में छात्र समुदाय के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित किया। सुश्री खुशी ने सचिव तथा श्री इंद्रजीत सिंह ने कोषाध्यक्ष के दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। श्री हिमांशु विश्वविद्यालय प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

सत्र 2023–24 में श्री विशाल अध्यक्ष, सुश्री खुशी उपाध्यक्ष, सुश्री लक्ष्मी सचिव, श्री रोहित मण्डल संयुक्त सचिव एवं सुश्री अंजली विश्वविद्यालय प्रतिनिधि तथा अंशु चन्द सांस्कृतिक सचिव के रूप में चुने गए।

सत्र 2024–2025 में अपरिहार्य कारणों से उत्तराखण्ड के विश्वविद्यालय तथा राजकीय महाविद्यालयों में छात्र संघ चुनाव नहीं हुए। इस शैक्षणिक सत्र में विद्यार्थियों ने शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए अध्ययन के साथ–साथ महाविद्यालय के विकास में सक्रिय योगदान देने तथा छात्र कल्याण को सर्वोपरि रखने का संकल्प लिया है।

5. प्रमुख गतिविधियाँ एवं उनका प्रभावः छात्र संघ ने 'देवभूमि उद्यमिता योजना' के माध्यम से अनेक छात्रों को स्व–रोजगार के लिए आवश्यक मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान की। एंटी–ड्रग्स एवं नशा मुक्ति अभियानों के द्वारा छात्रों को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने हेतु जागरूक किया गया। छात्र संघ ने सफलतापूर्वक विभिन्न सांस्कृ तिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिससे छात्रों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने एवं ज्ञानवर्धन का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने महाविद्यालय प्रशासन के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर छात्रों से संबंधित विभिन्न समस्याओं का समाधान किया।

6. छात्र संघ की उपलब्धियाँः श्री हरीश सिंह बिष्ट के नेतृत्व में छात्र संघ ने छात्रों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाया तथा उनके समाधान हेतु महाविद्यालय प्रशासन के साथ मिलकर सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए। श्री विशाल के नेतृत्व में छात्र संघ ने छात्रों को उद्यमशीलता के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। छात्र संघ द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं एवं सेमिनारों से छात्रों के कौशल विकास छात को प्रोत्साहन मिला। छात्र संघ ने महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं सामाजिक वातावरण को सुदृढ़ करने में सक्रिय योगदान दिया।

7. भविष्योन्मुखी दृष्टिकोणः छात्र संघ भविष्य में छात्रों के कौशल विकास, शैक्षणिक उन्नयन एवं छात्र कल्याण से जुड़े मुद्दों पर और अधिक सक्रियता से कार्य करने की योजना बनाता रहेगा

8. निष्कर्षः वर्ष 2020 से 2025 तक, राजकीय महाविद्यालय बनबसा के छात्र संघ ने छात्र समुदाय के हितों की रक्षा करने, उनकी प्रतिभा को पोषित करने एवं महाविद्यालय के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। अपने सुसंगठित प्रयासों एवं रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से, छात्र संघ ने महाविद्यालय परिवार में एक अभिन्न एवं महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है।

डॉ0 मुकेश कुमार

अभिभावक शिक्षक संघ का गठन

अभिभावक शिक्षक संघ के अन्तर्गत वर्ष 2024 तक महाविद्यालय मे अभिभावक शिक्षक संघ का गठन किया गया, जिसमे वर्ष 2024–25 में श्रीमती पार्वती देवी को अध्यक्ष, श्री रूपलाल को उपाध्यक्ष तथा श्री प्रमोद रत्नाकर को कोषाध्यक्ष चयनित किया गया। अभिभावक शिक्षक संघ के पदाधिकारियों एवं प्राचार्य प्रो० (डॉ०) आनन्द प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में दिनांकः 22.02.2025 में एक बैठक आहूत की गयी, जिसमे निम्नांकित निर्णय लिये गये–

- शिक्षण अध्ययन हेतु छात्र–छात्राओं को प्रेरित किया जाय तथा अधिक से अधिक छात्र–छात्राऐं कक्षाओं मे उपस्थित हो।
- महाविद्यालय में इको पार्क एवं औषधीय पौधो को लगाया जाये।
- यदि शासन द्वारा छात्र–छात्राओं के आने–जाने के लिए यात्रा किराया मिल सके तो दिया जाये।
- महाविद्यालय मे छात्र–छात्रओ के हित मे 03 नये विषय इतिहास, गृह विज्ञान, भूगोल को खोला जाये।
- निरन्तर अभिभावको के साथ संवाद किये जाये ।

अभिभावक शिक्षक संघ कार्यकारिणी

- संरक्षक – प्रो० (डॉ०) आनन्द प्रकाश सिंह
- अध्यक्ष श्रीमती पार्वती देवी
- उपाध्यक्ष श्री रूपलाल
- सचिव – डॉ० राजीव कुमार सक्सेना
- कोषाध्यक्ष – श्री प्रमोद रत्नाकर
- सदस्य महाविद्यालय प्राध्यापक एवं अभिभावक

महाविद्यालय सेमीनार/कॉन्फ्रेन्स

Rajkiya Mahavidyalaya Banbasa (Champawat)

Department of English

The Department of English at Rajkiya Mahavidyalaya Banbasa Champawat has been running an undergraduate program in English Literature since 2014. At present, **Dr. Bhoop Narain Dixit** is the **Head of The Department** in concerned. The academic activities, and numerous other initiatives are undertaken by the Department aimed at fostering intellectual growth, cultural awareness, and critical thinking among students. To encourage active participation and creativity, the department council organizes various co- curricular activities. The details are as follows.

Session 2021-22

President- Himmat Chand, B.A. 3rd Year.
Vice president- Deepika Joshi, B.A. 3rd Year.
Secretary- Sejal Agarwal, B.A. 2nd Year.
Jt. Secretary- Kunal Kapri, B.A. 2nd Year.
Treasurer- Ajay Chand, B.A. 1st Sem.

Session 2022-23

President- Mansi Bam, B.A. 3rd Year.
Vice president- Esha Vishwakarma, B.A. 3rd Year.
Secretary- Deepa Pandey, B.A. 3rdSem.
Jt. Secretary- Prema Garkoti, B.A. 3rdSem
Treasurer- Abhay Chand, B.A. 1st Sem.

Session 2023-24

President- Ajay Joshi, B.A. 4th Sem
Vice president- Nitin Joshi,B.A. 3rd Sem.
Secretary- Mehak Arya, B.A. 3rd Sem.
Jt. Secretary- Geeta Samant, B.A. 1st Sem.
Treasurer- Anshu Parki, B.A. 1st Sem.

Session 2024-25

President- Dinesh Singh, B.A. 5th Sem.
Vice president- Piyush Pandey,B.A. 5th Sem.
Secretary- Divyanshi Goswami, B.A. 3rdSem.
Jt. Secretary- Diya, B.A. 1st Sem
Treasurer- Vijay Joshi, B.A. 1st Sem.

YEAR	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
I SEM	80	80	80	159	155
III SEM	-	-	62	70	57
V SEM	49	-	55	55	32
II YEAR	49	03	-	-	-
III YEAR	-	41	-	-	-

Activities

1.Online Quiz Competition, 8th March, 2024
1st Position- Pawan Singh Rainswal, BA. I Sem
2nd Position- Surabhi, B.A. 1st Sem
3rd Position Mamta Bhatt, B.A. 3rd Sem

2- Essay writing Competition, 27th September, 2024
Topic:- How does social media change relationship between parents and Children?
1st Position- Bhupendra Singh Bisht, B.A.1st Sem.
2nd Position- Neeraj Singh Bhandari, B.A.1st Sem.
3rd Position- Mamta, B.A. 1st Sem

3- On 2nd October 2024 a cleanliness drive was organized by the
Department of English under the green Campus Campaign.

4- Poster Competition 12th October, 2024
1st Position- Sayra Bano, B.A. 5th Sem
2nd Position- Tulsi Kumar, B.A. 5th Sem
3rd Position- Neeraj Kumar, B.A. 5th Sem

5- "Skilling of Women and Youth of Uttarakhand in BFSI Sector"
Program organized on -09/12/2024.
6- A workshop has been conducted on 05/04/2025
Regarding NAAC under IQAC

Dr. Bhoop Narayan Dixit

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः विकसित भारत का स्वप्नदर्शी पथ

परिचयः एक नए युग का सूत्रपात

भारत, अपनी युवा आबादी और असीम संभावनाओं के साथ. आज एक अभूतपूर्व तकनीकी क्रांति के मुहाने पर खड़ा है। इस रोमांचक परिवर्तन की धुरी पर है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) – एक ऐसी तकनीक, जिसमें न केवल देश की आर्थिक प्रगति को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की क्षमता है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, उद्योग और प्रशासन जैसे मूलभूत क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाने का भी सामर्थ्य रखती है। यह लेख AI की असीमित संभावनाओं और एक नए भारत के निर्माण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का गहन विश्लेषण करने का एक विनम्र प्रयास है। भारत सरकार द्वारा शुरू की गई दूरदर्शी पहलें, जैसे 'डिजिटल इंडिया', ''स्टार्टअप इंडिया'' और 'आत्मनिर्भर भारत', AI के विकास को एक शक्तिशाली गति प्रदान कर रही हैं। AI डेटा विश्लेषण, मशीन लर्निंग, ऑटोमेशन और रोबोटिक्स जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करके, निर्णय लेने की प्रक्रिया को तीव्र गति से आगे बढ़ाने और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह तकनीक न केवल शहरी भारत के विकास को गति प्रदान कर रही है. बल्कि ग्रामीण भारत के उत्थान में भी एक महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखती है। AI के माध्यम से. हम न केवल उत्पादन क्षमता और दक्षता में भारी वृद्धि की उम्मीद कर सकते हैं, बल्कि रोजगार के नए और रोमांचक अवसरों का सृजन भी कर सकते हैं। हालांकि, इस प्रगति के साथ–साथ, हमें डेटा सुरक्षा, साइबर खतरों और नैतिक विचारों जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा, जिनका समाधान खोजना अनिवार्य है।

शिक्षा में AI ज्ञान का एक नया क्षितिज : शिक्षा, किसी भी समाज की आधारशिला होती है और AI इसमें एक अभूतपूर्व परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

हर छात्र पर व्यक्तिगत ध्यानः AI प्रत्येक छात्र की अद्वितीय आवश्यकताओं, सीखने की गति और क्षमताओं के अनुसार अध्ययन सामग्री को अनुकूलित करता है। अनुकूली शिक्षण प्रणाली (Adaptive Learning System), छात्रों की प्रगति का विश्लेषण करके उन्हें सबसे उपयुक्त पाठ्यक्रम और अभ्यास सामग्री प्रदान करती है, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी, आकर्षक और व्यक्तिगत हो जाती है।

स्मार्ट कंटेंट और डिजिटल लर्निंग का उदयः AI के उपयोग से ई–बुक्स, वर्चुअल ट्यूटर, इंटरैक्टिव वीडियो लेक्चर और अन्य आकर्षक डिजिटल शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जा सकता है. जो शिक्षा को अधिक रोचक, सुलभ और मनोरंजक बनाते हैं।

शिक्षकों के लिए एक वरदानः AI शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित करने में सहायता प्रदान करता है, जिससे वे शिक्षण और छात्रों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाते हैं।

भाषा की बाधाओं को तोड़नाः AI अनुवाद उपकरण विभिन्न भाषाओं में शिक्षण सामग्री उपलब्ध करा सकते हैं, जिससे भाषा संबंधी बाधाएं कम होती हैं, और शिक्षा सभी के लिए सुलभ और समावेशी हो जाती है।

ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा का सशक्तिकरणः AI तकनीक, ऑनलाइन कक्षाओं और ई–लर्निंग प्लेटफार्मों को अधिक प्रभावी बनाती है। वर्चुअल असिस्टेंट और चैटबॉट छात्रों की समस्याओं का तुरंत समाधान करते हैं, जिससे वे कहीं भी और किसी भी समय शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

डेटा–संचालित अंतर्दृष्टिः AI छात्रों के प्रदर्शन और सीखने की आदतों का विश्लेषण करके शिक्षकों को उपयोगी रिपोर्ट प्रदान करता है, जिससे उन्हें छात्रों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने और उन्हें प्रभावी ढंग से मार्गदर्शन करने में मदद मिलती है।

स्वास्थ्य सेवा में AI जीवन का एक नया सवेरा : AI स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण क्रांति लाने की क्षमता रखता है।

रोगों का त्वरित और सटीक निदानः AI आधारित मेडिकल इमेजिंग और इमेज प्रोसेसिंग तकनीकें, कैंसर और हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारियों की शीघ्र और सटीक पहचान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे जीवन बचाने की संभावना बढ़ जाती है।

टेलीमेडिसिन और हेल्थ मॉनिटरिंग का विस्तारः AI आधारित वर्चुअल हेल्थ असिस्टेंट और टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म, दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को बढ़ाते हैं, जिससे सभी को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध हो पाती है।

दवा अनुसंधान में अभूतपूर्व तेजीः AI बड़े पैमाने पर डेटा का विश्लेषण करके संभावित औषधीय यौगिकों की पहचान करने में मदद करता है, जिससे नई दवाओं के परीक्षण और निर्माण की प्रक्रिया में तेजी आती है, और बीमारियों का प्रभावी ढंग से इलाज किया जा सकता है।

रोगी निगरानी और देखभाल में क्रांतिकारी बदलावः स्मार्ट वियरेबल डिवाइस, हृदय गति. रक्तचाप और अन्य महत्वपूर्ण संकेतकों की निरंतर निगरानी करके रोगियों को बेहतर देखभाल प्रदान करते हैं। AI रोबोटिक सर्जरी, ऑपरेशन की सटीकता और सुरक्षा में सुधार करती है, जिससे रोगियों को तेजी से ठीक होने में मदद मिलती है।

चिकित्सकीय डेटा का विश्लेषणः AI मरीजों के मेडिकल रिकॉर्ड का विश्लेषण कर संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की भविष्यवाणी कर सकता है, जिससे डॉक्टरों को व्यक्तिगत उपचार योजनाएं बनाने और चिकित्सा अनुसंधान को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है।

कृषि में AI खेतों में एक नई क्रांति : AI कृषि क्षेत्र में दक्षता और उत्पादकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सटीक खेती का उदयः AI तकनीक, मिट्टी की गुणवत्ता, नमी स्तर और फसल के स्वास्थ्य की निगरानी करके किसानों को संसाधनों का अधिक कुशलतापूर्वक उपयोग करने में सक्षम बनाती है।

फसल सुरक्षा को मजबूत करनाः AI फसलों को कीटों और रोगों से बचाने में मदद करता है, जिससे फसल की गुणवत्ता और पैदावार में सुधार होता है।

स्वचालित कृषि मशीनरी का विकासः AI संचालित रोबोटिक मशीनें, खेतों में बुवाई, सिंचाई और कटाई जैसे कार्यों को स्वचालित करती हैं, जिससे श्रम लागत कम होती है और उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

जल प्रबंधन में क्रांतिकारी सुधारः AI आधारित स्मार्ट सिंचाई प्रणालियाँ, पानी की बर्बादी को कम करने और जल संकट से निपटने में मदद करती हैं।

मौसम की भविष्यवाणी और जोखिम प्रबंधनः AI मौसम की भविष्यवाणी करने में सहायक है. जिससे किसान अपनी फसलों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने के लिए बेहतर योजना बना सकते हैं।

बाजार विश्लेषण और मूल्य निर्धारणः AI किसानों को यह अनुमान लगाने में मदद करता है कि आने वाले दिनों में किस फसल की मांग और कीमत अधिक होगी, जिससे वे अपनी फसल को सही समय पर बेचकर अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।

खाद और कीटनाशक प्रबंधनः AI तकनीकों की सहायता से किसानों को यह जानकारी मिलती है कि कब और कितनी मात्रा में खाद या कीटनाशक का उपयोग करना चाहिए, जिससे लागत कम होती है और फसलों की गुणवत्ता बनी रहती है।

उद्योग और सेवा क्षेत्रों में AI दक्षता और नवाचार का एक नया युग

AI उद्योग और सेवा क्षेत्रों में स्वचालन, दक्षता और नवाचार को बढ़ावा दे रहा है।

औद्योगिक क्षेत्र में AI का प्रभावः AI संचालित रोबोटिक आर्म्स, उत्पादन प्रक्रिया को अधिक कुशल बनाते हैं. और AI आधारित विजन सिस्टम दोषपूर्ण उत्पादों की पहचान करके गुणवत्ता मानकों में सुधार करते हैं। AI आधारित मांग पूर्वानुमान और स्मार्ट लॉजिस्टिक्स सेवाएं, आपूर्ति श्रृंखला को अधिक कुशल बनाती हैं। AI मशीनों के संचालन डेटा का विश्लेषण करके संभावित खराबी का पूर्वानुमान लगाता है, जिससे उत्पादन बाधित नहीं होता।

सेवा क्षेत्र में AI की भूमिकाः AI आधारित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट, सेवा क्षेत्र में ग्राहक सहायता को स्वचालित करते हैं, ग्राहकों की समस्याओं को हल करते हैं, और AI ग्राहक की पिछली खरीदारी और बातचीत के आधार पर व्यक्तिगत सिफारिशें भी देते हैं।

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में AI सुरक्षा और दक्षता का नया दौर : AI वित्तीय संस्थानों के लिए सुरक्षा, धोखाधड़ी की रोकथाम और जोखिम प्रबंधन को मजबूत बना रहा है। AI वित्तीय डेटा का विश्लेषण करके संदिग्ध गतिविधियों की पहचान कर सकता है, ग्राहकों के वित्तीय रिकॉर्ड का आकलन करके ऋण स्वीकृति प्रक्रिया को सरल बनाता है, और निवेशकों को उनकी निवेश रणनीतियों को बेहतर बनाने में भी मदद करता है।

सरकारी प्रशासन में AI पारदर्शिता और जवाबदेही का नया युग AI सरकारी प्रशासन को अधिक पारदर्शी, कुशल और जवाबदेह बना रहा है। सरकारी योजनाओं में AI का उपयोगः AI के माध्यम से नीतिगत निर्णय अधिक सटीक और प्रभावी हो सकते हैं, और AI आधारित डिजिटल लेनदेन, फेस रिकग्निशन और बायोमेट्रिक तकनीकों से भ्रष्टाचार पर रोक लगाई जा सकती है। AI अपराधों की निगरानी और साइबर सुरक्षा को भी मजबूत बना रहा है।

सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र में AI एक मजबूत और सुरक्षित राष्ट्र : AI सैन्य अभियानों, निगरानी, स्वचालित रक्षा प्रणालियों और साइबर सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। AI आधारित सुरक्षा प्रणालियाँ साइबर हमलों की रोकथाम में सहायक हैं, और AI फेशियल रिकग्निशन और बायोमेट्रिक प्रणाली सीमाओं पर निगरानी को बेहतर बना रही हैं। स्वचालित हथियार, रोबोटिक टैंक और ऑटोनॉमस व्हीकल्स सैन्य अभियानों में क्रांति ला रहे हैं।

AI से उत्पन्न चुनौतियाँः एक संतुलित दृष्टिकोण : AI के असंख्य लाभों के बावजूद, हमें इससे जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। डेटा सुरक्षा और गोपनीयता एक गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि AI डेटा पर निर्भर करता है और व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करना अनिवार्य है। AI सिस्टम साइबर हमलों के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं. इसलिए साइबर सुरक्षा को प्राथमिकता देना आवश्यक है। AI आधारित स्वचालन के कारण पारंपरिक नौकरियों पर प्रभाव पड़ सकता है, जो एक महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दा है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। AI तकनीकों को सही ढंग से अपनाने के लिए लोगों को शिक्षित करना और जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है। AI के कारण पारंपरिक नौकरियों खत्म हो सकती हैं, लेकिन इससे नई नौकरियों के अवसर भी पैदा होंगे, इसलिए हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए।

निष्कर्षः एक उज्जवल भविष्य की ओर : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस AI भारत के आर्थिक और तकनीकी विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखता है। यह नवाचार, स्वचालन, दक्षता और सुरक्षा को बढ़ावा देने में सहायक है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और प्रशासन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में AI के प्रभावी उपयोग से समाज और अर्थव्यवस्था को अत्यधिक लाभ मिल सकता है। हालाँकि, AI के विकास और उपयोग के साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जैसे डेटा सुरक्षा, साइबर जोखिम, नैतिकता और रोजगार के अवसरों पर संभावित प्रभाव। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक संतुलित और समग्र नीति आवश्यक होगी, जिससे AI द्वारा नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके और इसके सकारात्मक पहलुओं का अधिकतम लाभ उठाया जा सके। यदि भारत AI तकनीकों को सही दिशा में विकसित और लागू करता है, तो यह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी सरकारी पहलें AI को प्रोत्साहित कर रही हैं, जिससे देश के तकनीकी और औद्योगिक विकास को गति मिलेगी। भविष्य में, AI मानव जीवन को अधिक सहज, कुशल और सुरक्षित बना सकता है। यह तकनीक न केवल वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकती है, बल्कि एक तकनीकी रूप से सक्षम और विकसित भारत की नींव भी रख सकती है। इसलिए, AI को अपनाना, इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसे जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि हम एक समृद्ध, सुरक्षित और तकनीकी रूप से सशक्त भविष्य का निर्माण कर सकें।

डॉ0 सुशीला आर्या

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चंपावत
राजनीति विज्ञान विभाग

विभाग का परिचय, उद्देश्य और शैक्षणिक गतिविधियाँ (2020–2025) राजकीय महाविद्यालय बनबसा में राजनीति विज्ञान विभाग छात्रों को व्यापक ज्ञान और विश्लेषणात्मक कौशल प्रदान करने वाली एक सुस्थापित इकाई है। विभाग ने छात्रों में उत्तरदायी नागरिक चेतना विकसित करने और उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित करने पर ध्यान केंद्रित किया है। हम छात्रों को राष्ट्रीय व वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य को समझने तथा उसमें सक्रिय भूमिका निभाने हेतु एक समृद्ध मंच प्रदान करते हैं।

विभाग का पाठ्यक्रम संविधान की प्रस्तावना सहित राजनीति विज्ञान के विस्तृत अध्ययन क्षेत्र को समाहित करता है। विभाग ने नियमित शैक्षणिक एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन किया है **नियमित कक्षाएं और सेमिनारः** पाठ्यक्रम को व्यवस्थित तरीके से पढ़ाया गया, और सेमिनार ने गहन चर्चा, प्रस्तुतीकरण एवं वैचारिक आदान–प्रदान को सुगम बनाया, जिससे छात्रों की समझ और अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि हुई।

शोध परियोजनाएं और प्रस्तुतियाँः छात्रों को राजनीतिक विषयों पर स्वतंत्र शोध, डेटा विश्लेषण, निष्कर्ष निकालना और प्रस्तुतियों को साझा करने का कार्य सौंपा गया, जिससे उनमें शोध कौशल, आलोचनात्मक सोच और सार्वजनिक प्रस्तुति की क्षमता विकसित हुई।

राजनीतिक घटनाओं और मुद्दों पर चर्चा : विभाग ने समसामयिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घटनाओं और ज्वलंत मुद्दों पर नियमित चर्चा सत्रों व वाद–विवाद का आयोजन किया, जिससे छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान को वर्तमान परिप्रेक्ष्य से जोड़ने में सहायता मिली।

महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिवस : राजनीति विज्ञान विभाग ने छात्रों में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागरुकता, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समर्पण और वैश्विक नागरिकता की भावना को बढ़ावा देने हेतु कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाए हैं। इनमें गणतंत्र दिवस पर संवैधानिक आदर्शों पर व्याख्यान, स्वतंत्रता दिवस पर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्व को रेखांकित करते कार्यक्रम, और गांधी जयंती पर गांधीवादी सिद्धांतों पर परिचर्चाएँ शामिल थीं। सामाजिक जागरूकता के लिए विश्व एड्स दिवस पर विशेष अभियान, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक सत्र, और विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरणीय चुनौतियों पर चर्चा व व्यावहारिक गतिविधियाँ आयोजित की गई।

विभाग द्वारा विभिन्न सामयिक गतिविधियों का भी आयोजन कियाः

- 16 सितंबर 2023ः ओजोन दिवस पर निबंध और पोस्टर प्रतियोगिता।
- 8 अक्टूबर 2023ः मेरी माटी, मेरा देश कार्यक्रम के अंतर्गत मोटे अनाज की भूमिका पर प्रकाश डालना।
- 14 नवंबरः बाल दिवस पर सर्व शिक्षा अभियान पर चर्चा।
- जनवरी 2024ः राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर परिचर्चा, जागरुकता रैली और शपथ कार्यक्रम।
- 10 अप्रैल 2024ः आर्य दिवस का कार्यक्रम।
- 14 अप्रैल 2024ः श्री बी. आर. अंबेडकर की जयंती पर विशेष कार्यक्रम ।
- 25 जूनः पर्यावरण संरक्षण पर निबंध प्रतियोगिता।
- 25 जुलाईः कारगिल विजय दिवस पर 'विजय दीवार' के पास पुष्पांजलि।

विभागीय परिषद : महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपरा अनुसार राजनीतिक विचारकों और संबंधित गतिविधियों हेतु सर्वसम्मति से छात्र–छात्राओं को पदों पर नामित करते हुए विभागीय परिषद का गठन किया गया। यह परिषद विभाग की सह–शैक्षणिक गतिविधियों का केंद्रबिंदु रहेगा।

विभागीय परिषद 2024–2025

क्र०सं०	नाम	पद	कक्षा
1	खुशी चन्द्र	अध्यक्ष	षष्ठम सत्रार्द्ध
2	निशा भट्ट	उपाध्यक्ष	षष्ठम सत्रार्द्ध
3	डोली खोलिया	सचिव	षष्ठम सत्रार्द्ध
4	प्रीतम कुमार	कोषाध्यक्ष	षष्ठम सत्रार्द्ध
5	दिव्या जोशी	सहसचिव	षष्ठम सत्रार्द्ध

निम्नलिखित सारणी में गत वर्षों में प्रविष्ट छात्र–छात्राओं का विवरण इस प्रकार है

क्रम सं०	सत्र	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
1	2019–20	132	27	12	171
2	2020–21	106	47	30	183
3	2021–22	78	66	46	190
4	2022–23	80	67	58	205
5	2023–24	85	56	10	151
6	2024–25	82	50	08	140

विभागीय परिषद के प्रमुख कार्य : नवगठित परिषद में राजनीति विज्ञान विषय से संबंधित विभिन्न बौद्धिक बौद्धिक एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। परिषद का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारकों और संबंधित विषयों से परिचित कराना है। परिषद द्वारा भविष्य में निम्नलिखित प्रमुख गतिविधियों का भी आयोजन किया जाएगाः

- 13 अगस्त 2024 : युवा संसद प्रतियोगिता।
- सितंबर 2024 : डेंगू पर चर्चा और कॉलेज परिसर में फॉगिंग।
- 2 अक्टूबर 2024 : गांधी जयंती पर कॉलेज के पास सफाई अभियान।
- 28 अक्टूबर 2024 : रक्तदान जागरूकता रैली।
- 29 नवंबर 2024 : राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस।
- 01 दिसंबर 2024 : विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम।
- 5 मई 2025 : विशेष श्स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संपर्क अभियान।
- 8 मई 2025 : विश्व रेड क्रॉस दिवस का मुख्य आयोजन।

निष्कर्ष : राजकीय महाविद्यालय बनबसा में राजनीति विज्ञान विभाग ने (2020–2025) में अत्यंत सक्रियता और समर्पण के साथ कार्य किया है। विभाग ने नियमित शैक्षणिक कार्यक्रमों, शोध परियोजनाओं, सामयिक चर्चाओं और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय दिवसों पर विशेष आयोजनों के माध्यम से कॉलेज और स्थानीय समुदाय दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। विभाग छात्रों के समग्र विकास हेतु निरंतर प्रयासरत है और भविष्य में भी शैक्षणिक व सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेगा, जिससे राजकीय महाविद्यालय बनबसा का गौरव बढ़ेगा।

डॉ. सुधीर मलिक
राजनीति विज्ञान

प्राध्यापक

ज्ञान से बडा कोई दान नहीं,
और गुरु से कोई दानी नहीं,
गिरते है जब हम तो उठाते है शिक्षक,
जीवन की राह दिखाते है शिक्षक,
अंधेरे जहाँ पर बनकर दीपक
जीवन को रोशन करते हैं शिक्षक,
कभी–कभी नन्ही आंखो में नमी हो जाती
तो अच्छे दोस्त बनकर हमें हँसाते शिक्षक,
जब दुनिया झटकती है हाथ,
तब झटपट बढ़ाते है शिक्षक,
हमारे प्यारे शिक्षक

निशा कश्यप
B.A. III Sem.

सपनों की उड़ान

मैं सपनों की उड़ान में खो जाना चाहती हूँ, जहाँ जीवन की कोई सीमा मुझको अब न रोक पाएगी। मैं उड़ना चाहती हूँ, अंबर की ऊँचाइयों को छूना चाहती हूँ, जहाँ मेरे सपनों का संसार विस्तृत और असीम होगा। इस जग में, जहाँ सपनों का कोई बंधन नहीं, मैं अपने हर सपने को साकार करने को तत्पर हूँ। मेरे हृदय की पुकार को, मन की हर अभिलाषा को पूर्ण करने हेतु, मैं हर संभव यत्न करूँगी। सपनों की इस उड़ान में, मैं अपनी परछाई संग चलूँगी, स्वयं को पहचानना चाहूँगी और अपनी अंतरात्मा को समझना चाहूँगी। अपने स्वप्नों को पूरा करने के लिए, मैं हर चुनौती का सामना दृढ़ता से करूँगी।

साक्षी चंद
B.A. II Sem.

रंगों का खेल

गाँव में होली का पर्व पूरे उत्साह से मनाया जा रहा था। रंग–बिरंगे गुब्बारे आकाश में उड़ रहे थे और बच्चे आनंदपूर्वक एक–दूसरे पर पानी के गुब्बारे फेंक रहे थे। वातावरण पूर्णतया प्रसन्नता और हर्ष से भरा हुआ था। गाँव के बच्चे, विशेषकर मोहन और सीता, इस आनंदमय माहौल में झूम रहे थे।

मोहन, जो स्वभाव से कुछ चंचल था, ने सीता पर नीले रंग का एक गुब्बारा फेंका। सीता को यह अप्रिय लगा और वह रुष्ट होकर रोने लगी। वह तत्क्षण अपनी दीदी के पास गई, जिन्हें सब स्नेहपूर्वक दादी माँ कहकर बुलाते थे।

दादी माँ ने सीता को प्रेम से शांत किया और समझाया, ''पुत्री होली रगों का पर्व है। यह हमें सिखाता है कि सभी रंग सुंदर होते हैं। क्रोध हमें भीतर से काला कर देता है, जबकि प्रसन्नता हमारे जीवन में और रंग भर देती है।''

दादी माँ की बात सुनकर मोहन को अपनी त्रुटि का बोध हुआ। उसने सीता से क्षमा याचना की और उसे एक लाल गुब्बारा प्रदान किया। सीता ने भी मुस्कुराते हुए उस गुब्बारे को स्वीकार कर लिया और दोनों पुनः खेलने लगे।

उस दिन बालकों ने होली का भरपूर आनंद लिया। उन्होंने एक–दूसरे को रंगों से रंगा और आपस में खूब स्नेह बाँटा। दादी माँ के वचनों ने उन्हें यह शिक्षा दी कि होली केवल रंगों का ही नहीं, अपितु प्रसन्नता, एकता और क्षमा का भी पर्व है।

शिवानी
B.A. III Sem.

जीवन की समझ

जीवन यात्रा, मैं सतत गतिशील, कभी न रुकता,
जीवन का मर्म क्या है, अनुभव से ही समझा मैंने।
नदी–सा प्रवाहमान, निर्मल जल संग बहता,
छोटे–छोटे पगों से ही यह जीवन पथ बढ़ता।
कभी लघु सरिता, कभी विशाल सागर में जीवन
का रूप बदलता, पर मैं अविरल चलता रहा।
जब था शिशु मैं, अनभिज्ञ जगत से,
चमकती आँखें तो थी, पर मन निष्पाप, भोला था।
माँ–पिता के वचन, तब समझ न आते थे,
स्वयं के अस्तित्व का भी बोध न था मुझको।
किन्तु मैं अग्रसर रहा, कभी न थमा,
जीवन का सत्य क्या है, जीकर ही जाना मैंने।

महक कुमारी
B.A. III Sem.

नारी

जहाँ झाँसी की **"मनु"** उठ तलवार बनी लक्ष्मीबाई।
उसी धारा पर आज की नारी, फिर क्यूँ सकुचाई।।
बहुत हो रहे जुल्म अब उन पर, और बहुत आघात।
अब क्यूँ सहे तू अत्याचार, और क्यूँ दाबे तू मन में बात।।
तुमने तो है बहुत सहा, नहीं मिला बराबर का मान।
अब पुरुषों से कदम मिला, बढ़ा नारी का सम्मान।।
याद करो उस नारी को जो लाई थी देश में आँधी।
बनी देश की महिला मुखिया पहली **"इंदिरा गांधी"।।**
मान बढ़ाया जिसने देश का देकर अपना स्वर।
कहते जिनको स्वर कोकिला नाम लता मंगेशकर।।
याद कर इन्हीं नारी को बढ़ा अपनी इच्छाशक्ति।
निकल आ परदे के बाहर, बन जा देश की प्रगति।।

मुस्कान
B.A. II Sem.

देश भक्ति गीत

ना सरकार मेरी हैं, ना रौब मेरा है।
ना बड़ा सा नाम मेरा है
मुझे तो एक छोटी सी बात का गौरव है,
मैं हिन्दुस्तान का हूँ, और हिन्दुस्तान मेरा है
दे सलामी इस तिरंगे को, जिससे तेरी शान है
सर हमेशा ऊँचा रखना इसका,
जब तक दिल में जान है
पूछो जमाने से क्या हमारी कहानी है
हमारी पहचान तो सिफ ये है कि,
हम सिर्फ हिन्दुस्तानी हैं
अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं
सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं

जय हिन्द जय भारत,
भारत माता की जय

डौली खोलिया
B.A. III Sem.

मेरी माँ

माँ वह है जो हमें जन्म देने के साथ ही हमारा लालन–पालन भी करती। माँ के इस रिश्ते को दुनिया में सबसे ज्यादा सम्मान दिया जाता है। इक माँ दुनिया भर के के कष्ट सहकर भी अपनी संतान को अच्छी से अच्छी सुख–सुविधाएं देना चाहती है। मेरी माँ मेरे जीवन में कई सारी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती है, वह मेरी शिक्षक तथा मार्ग दर्शक होने के साथ ही मेरी सबसे अच्छी मित्र भी है। जब मैं किसी समस्या में होता हूँ तो वह मुझमें विश्वास पैदा करने का कार्य करती है। मैं अपने जीवन में जो कुछ भी हूँ वह अपनी माँ की ही बदौलत हूँ, क्योंकि मेरी सफलता के वक्त वह मेरे साथ होती है।

गीता सामन्त
B.A. III Sem.

शिक्षक छात्र का रिश्ता ऐसा

शिक्षक छात्र का रिश्ता ऐसा
जैसे बगीचे का माली से है।
माली करता रक्षा बगीचे की
रिश्ता उसका फुलवारी से है।

शिक्षक छात्र के भविष्य निर्माता
वही छात्र के रखवाले है।
छात्र का मार्गदर्शन होता उनसे
छात्र नैया उन्ही के सहारे है।

चल के उनके मार्गदर्शन पर,
छात्र कल्याण संभव हो पाया।
इस कथन को जाने कितने
महापुरुषों ने दोहराया।

पथ प्रदर्शकों की ऋण है इतना,
उऋण न संभव हो पाया।
करते हम सब यही कामना,
बना रहे उनका साथ

धन्य – धन्य ऐसे गुरूओं का
जिन्होंने अज्ञान को दूर किया
देके अपना दिव्य ज्ञान,
सृष्टि को ज्योतिस्वरूप किया।

खुशी मौर्य
B.A. III Sem.

माँ

जब सब छोड़ देते हैं साथ,
तो साथ माँ होती हैं
मां की जैसी ममता पूरे
जहाँ में कहां होती है,
वैसे तो हर रिश्ता बड़ी
शिद्दत से निभाती है औरतें,
रिश्ता और भी खूबसूरत हो जाता है
जब वो एक मां होती है

प्रिया सागर
B.A. III Sem.

नशा

हाँ नशा नहीं करता हूँ मैं
दोस्तों के लाख कहने पर भी,
दोस्ती की कसमें देने पर भी
हां नशा नहीं करता हूँ मैं
ऐसा नहीं कि बहुत ही गरीब हूं मैं
या फिर बहुत शरीफ हूँ मै
देखा है मैंने उस मां के दर्द को
जो देर रात तक शराबी बेटे की राह तकती है
मन में गुस्सा दिल में प्रेम लिए,
कर भी क्या सकती है।
खाना भी परोसती है गालियाँ भी सुनती हैं
उसके हालात देख कर रात भर सिसकती हैं
कहीं मेरी मां भी ना रोए इसलिए डरता हूँ मैं
हां नशा नहीं करता हूँ मैं
देखा है मैने उस औरत के दर्द को
जो उसे अपना सब कुछ मान के बैठी है
लात घूसों के बीच हथेली पे जान लिए बैठी है
रोती है बिलखती है घुट घुट कर जीती हैं,
बस खामोश है, कि दो घरों का सम्मान लिए बैठी है,
उसे खुश रखने के वादे को याद रखता हूँ मैं
हां नशा नहीं करता हूं मैं

दुर्गा यादव
B.A. III Sem.

शिक्षक समर्पण

जहाँ सारा जग शिक्षक के पीछे चलता है,
काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है,
शिक्षक धरा को अम्बर से जोड़ सकता है।
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था।
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम है,
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है।
शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक राम बन जाते हैं,
शिक्षक की अनदेखी से रावण भी कहलाते हैं।

अनुष्का सोनकर
B.A. I Sem.

समाजशास्त्र विभाग (सत्रः 2024–25)

समाजशास्त्र मानवीय सामाजिक सम्बन्धो और संस्थाओं का अध्ययन है। समाजशास्त्र सामाजिक जीवन, सामाजिक परिवर्तन और मानव व्यवहार के सामाजिक कारणों और परिणामों का अध्ययन हैं। समाजशास्त्र उस सामाजिक दुनिया को देखने और समझने का एक विशिष्ट और ज्ञानवर्धक तरीका प्रदान करता है। जिसमें हम रहते हैं और जो हमारे जीवन को आकार देता है। भारत में समाजशास्त्र का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने तथा अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के समाज तथा अन्य कमजोर वर्गो की समस्याओं के निदान तथा सामाजिक सन्तुलन स्थापित करने में सहायक होता है। इसके अलावा समाजशास्त्र, परिवार, शिक्षा, धर्म और अर्थव्यवस्था जैसी सामाजिक संस्थाओं की जाँच करता है। इसके साथ ही यह विश्लेषण करता है कि सामाजिक व्यवहार उन्हें कैसे आकार देता है। वर्तमान समय में समाजशास्त्र सामाजिक परिवर्तन से भी सम्बन्धित है। जो यह समझाने का प्रयास करता है कि समय के साथ– साथ समाज कैसे और क्यों विकसित होते है।

समाजशास्त्र एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान है। विशेषतः विकासशील देशों में पुनर्निर्माण सम्बन्धित विभिन्न निर्माण सम्बन्धी विभिन्न योजनाओं को सफल बनाने में समाजशास्त्रीय ज्ञान विशेष रूप से उपयोगी है। जैसा कि विदित है, कि महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही सन् 2014 से स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र विषय का अध्ययन अध्यापन कार्य प्रारम्भ हुआ। वर्तमान सत्र 2024–25 में समाजशास्त्र विषय में एक नियमित प्राध्यापक कार्यरत है। इसके अतिरिक्त बी०ए० प्रथम / द्वितीय सेमेस्टर में 120, बी०ए० तृतीय / चतुर्थ सेमेस्टर में 65 तथा बी०ए० पंचम / षष्टम सेमेस्टर में 40 छात्र–छात्राएँ अध्ययनरत है। समाजशास्त्र विषय में अध्ययन–अध्यापन के साथ ही अन्य शैक्षणिक गतिविधियों का भी संचालन किया जाता रहा है। इसके अंतर्गत समाजशास्त्र परिषद का गठन प्रत्येक अकादमिक सत्र में किया जाता रहा है।

वर्तमान में समाजशास्त्र विभाग के अन्तर्गत प्रो. आनन्द प्रकाश सिंह के निर्देशन में 3 शोधार्थी शोधरत हैं।

महायोगी गुरू गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय, बिथयानी, यमकेश्वर एवं राजकीय महाविद्यालय, बनबसा के संयुक्त तत्वाधान में एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन दिनांक 28/12/2024 को किया गया जिसका शीर्षक विकसित भारत–ग्रामीण विकास एक परिप्रेक्ष्य एवं संभावनाएं उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में आयोजित किया गया

समाजशास्त्र विभागीय परिषद (सत्रः 2024–25)

समाजशास्त्र विभाग अपने शैक्षणिक उद्देश्यों हेतु नियमित शैक्षणिक एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों का सुनियोजित संचालन करता है। नियमित कक्षाएँ अध्ययन का सबसे औपचारिक मूलभूत तरीका है। जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम को एक व्यवस्थित और क्रमबद्ध तरीके से पढ़ाया जाता है। नियमित कक्षाऐं विषय–वस्तु को सम्पूर्ण करने का आधार बनाती है। समाजिक क्षेत्र के विशिष्ट विषयों पर गहन चर्चा, छात्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण और वैचारिक आदान प्रदान सुगम बनाया जाता है। जिससे छात्रों की समझ और अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि होती है। इसके तहत अकादमिक सत्र 2024–25 में समाजशास्त्र परिषद की गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं–

1. महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग द्वारा समाजशास्त्रीय परिषद का गठन दिनांकः 07/02/2025 को हुआ। जिसका मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं के सामाजिक जीवन में समय–समय पर होने वाले सामाजिक परिवर्तनों का मार्गदर्शन एवं दिशा निर्देशन करना है। समाजशास्त्र विषय के समस्त छात्र–छात्राओं की सहमति से निम्नांकित पदाधिकारियों का चुनाव हुआ–

- अध्यक्ष – प्रियम षष्टम सत्रार्द्ध
- उपाध्यक्ष – गायत्री चतुर्थ सत्रार्द्ध
- सचिव – गुंजन चतुर्थ सत्रार्द्ध
- महासचिव – मान्यता श्रीवास्तव द्वितीय सत्रार्द्ध
- कोषाध्यक्ष – साक्षी कापड़ी द्वितीय सत्रार्द्ध

2. दिनांकः 20/03/2025 को समाजशास्त्रीय परिषद के तत्वाधान में एक वाद–विवाद प्रतियोगिता (विभिन्न सामाजिक विषयों पर) का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम अग्रलिखित है।

- प्रथम – गुंजन चतुर्थ सत्रार्द्ध
- द्वितीय – सजना द्वितीय सत्रार्द्ध
- तृतीय – रिया द्वितीय सत्रार्द्ध

3. दिनांकः 17/04/2025 को समाजशास्त्रीय परिषद के तत्वाधान में एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम अग्रलिखित है।

- प्रथम – गायत्री चतुर्थ सत्रार्द्ध
- द्वितीय – रेनूका चतुर्थ सत्रार्द्ध
- तृतीय – सुहानी द्वितीय सत्रार्द्ध

4. दिनांकः 13/05/2025 को समाजशास्त्रीय परिषद के तत्वाधान में एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम अग्रलिखित है।

- प्रथम – कोमल पन्त द्वितीय सत्रार्द्ध
- द्वितीय – फरहीन अंसारी चतुर्थ सत्रार्द्ध
- तृतीय – मान्यता श्रीवास्तव द्वितीय सत्रार्द्ध

निम्नलिखित सारणी में गत वर्षों में प्रविष्ट छात्र–छात्राओं का विवरण इस प्रकार है

क्रम सं०	सत्र	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
1	2019–20	87	53	28	168
2	2020–21	79	52	20	151
3	2021–22	80	69	48	197
4	2022–23	73	60	50	183
5	2023–24	155	54	32	241
6	2024–25	161	70	55	286

डॉ राजीव कुमार सक्सेना

डॉ. भीमराव अंबेडकरः भारतीय शिक्षा नीति और राजनीति के शिल्पकार

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर, जिन्हें हम 'बाबासाहेब' के नाम से भी जानते हैं, सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा के प्रतीक हैं। उन्होंने न केवल भारत की आजादी के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि स्वतंत्र भारत की नींव रखने में भी अमूल्य योगदान दिया। एक समाज सुधारक, शिक्षाविद्, न्यायविद और राजनीतिज्ञ के रूप में, अंबेडकर ने जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक अथक लड़ाई लड़ी और एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिले।

अंबेडकर का प्रारंभिक जीवन और शिक्षा : 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश के महू में जन्मे अंबेडकर का जीवन सामाजिक भेदभाव और अन्याय के खिलाफ एक सतत संघर्ष की गाथा है। दलित महार परिवार में जन्म लेने के कारण, उन्हें बचपन से ही जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ा। स्कूल में अलग बैठने से लेकर सार्वजनिक संसाधनों तक पहुंच से वंचित रहने तक, उन्होंने हर कदम पर अपमान और अलगाव का अनुभव किया। लेकिन इन कठिनाइयों ने उनके दृढ़ संकल्प को और मजबूत किया। उन्होंने शिक्षा को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी बाधाओं को पार किया।

कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में उनकी शिक्षा ने उनके विचारों को एक नई दिशा दी। उन्होंने न केवल अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में गहरी विशेषज्ञता हासिल की, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धंतो को भी गहराई से समझा। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा उपकरण है जो समाज में गहरे बदलाव ला सकता है।

शिक्षा के प्रति अंबेडकर का दृष्टिकोण : अंबेडकर का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। उनके अनुसार, शिक्षा में जातिगत उत्पीड़न की जंजीरों को तोड़ने और व्यक्तियों तथा समुदायों को अधिक समानता और गरिमा की ओर ले जाने की क्षमता है। वे शिक्षा को राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रांति का आधार मानते थे। उन्होंने हमेशा वंचित वर्गों के लिए शिक्षा के महत्व पर जोर दिया, क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से ही दलित और अन्य marginalized समुदाय गरीबी और सामाजिक बहिष्कार के चक्र को तोड़ सकते हैं और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

अंबेडकर ने शिक्षा को आत्म–ज्ञान और अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता विकसित करने का महत्वपूर्ण साधन माना। उन्होंने नौकरी–उन्मुख और कौशल–आधारित शिक्षा का समर्थन किया ताकि लोग आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। उनका मानना था कि शिक्षा भारतीय समाज में गहरे बैठे संरचनात्मक परिवर्तनों को लाने का एक शक्तिशाली उपकरण है।

भारतीय संविधान और अंबेडकर का योगदान : भारतीय संविधान के निर्माण में अंबेडकर की केंद्रीय भूमिका ने यह सुनिश्चित किया कि मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक तत्वों में सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांत निहित हो। अस्पृश्यता का उन्मूलन और भेदभाव का निषेध उनके प्रयासों का प्रत्यक्ष परिणाम था। उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 45 को लागू करने पर विशेष जोर दिया, जिसके तहत 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है।

उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों जैसे वंचित वर्गों के छात्रों के लिए सीटों के आरक्षण की भी वकालत की। उनका मानना था कि ऐतिहासिक रूप से भेदभाव का सामना करने वाले इन समुदायों को शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करने के लिए विशेष प्रावधानों की आवश्यकता है। आरक्षण नीति का उद्देश्य सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना और इन वर्गों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करना था।

आधुनिक भारत में अंबेडकर की विरासत : आधुनिक भारत में, अंबेडकर की विरासत दलित राजनीति और सामाजिक न्याय की विचारधारा के माध्यम से जीवित है। उनका प्रसिद्ध नारा **'शिक्षित बनों, संगठित रहो और संघर्ष करो'** आज भी सामाजिक कार्यकर्ताओं और आंदोलनों को प्रेरित करता है। भले ही भारत ने कई क्षेत्रों में प्रगति की है, जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता अभी भी मौजूद हैं, जिससे अंबेडकर के विचार आज भी उतने ही महत्वपूर्ण बने हुए हैं जितने उनके जीवनकाल में थे। अंबेडकर का दृष्टिकोण एक अधिक न्यायपूर्ण, समान और समावेशी समाज के निर्माण के लिए एक स्थायी खाका प्रदान करता है। उनकी विरासत हमें यह याद दिलाती है कि शिक्षा और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर प्रयास करना कितना आवश्यक है।

निष्कर्ष : डॉ. भीमराव अंबेडकर न केवल एक महान विद्वान और नेता थे, बल्कि वे एक ऐसे दूरदर्शी थे जिन्होंने एक ऐसे भारत की कल्पना की जो जाति, धर्म और लिंग के आधार पर सभी भेदभाव से मुक्त हो। उनका जीवन और कार्य हमें यह सिखाता है कि शिक्षा और सामाजिक न्याय के माध्यम से ही हम एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

डॉ0 सुधीर मलिक

पिता

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान हैं पिता,
कभी धरती तो कभी आसमान हैं पिता,
जन्म दिया है अगर माँ ने
जानेगा जिससे जग वो पहचान हैं पिता,
कभी कंधे पे बिठाकर मेला दिखाते पिता,
कभी बनके घोड़ा खुद घुमाते हैं पिता,
महंगे सामान दिलवाकर हमें
खुद पुराने कपड़े पहनते हैं पिता,
कभी रोटी तो कभी पानी हैं, पिता,
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी हैं पिता,
बच्चों की खुशियों की खिलखिलाती मुस्कान हैं पिता,
माँ अगर घर में रसोई है,
तो चलता है जिससे घर वो रौशन हैं पिता,
माँ अगर है मासूम सी कहानी की लोरी
तो कभी ना भूल पाऊँगा, वह कहानी है पिता,
माँ तो कह देती है दिल की बात सब कुछ,
समेटे वो आसमान सा फैला पिता,
सारे घर की रौनक उनसे, सारे घर की शान है पिता
हर घर की उम्मीद का प्रकाश हैं पिता।

गुंजन
B.A. III Sem.

पर्यावरण बचाओ

बदलें हम तस्वीर जहाँ की, सुंदर सा एक दृश्य बनाएँ।
सन्देश ये, हम सब तक पहुंचाएँ, आओ पर्यावरण बचाएँ।
फैल रहा है खूब प्रदूषण, काट रहा मानव जंगल–वन।
हवा हो रही है जहरीली, कमजोर पड़ रहा है सबका तन।
समय आ गया है कि मिलकर, हम सब कोई कदम उठाएँ,
संदेश ये हम सब तक पहुँचाएँ, आओ पर्यावरण बचाएँ।
भला हो जिससे सभी जनों का, आदत हम सब वो अपनाएँ।
संदेश ये हम सब तक पहुँचाएँ, आओ पर्यावरण बचाएँ।

पूजा
B.A. III Sem.

विजेता की पुकार

मत पूछो आसमान से, कितनी ऊंचाई चाहिए,
हर उड़ान से पहले, हिम्मत आजमाई चाहिए।
हवा का रुख बदलेगा, ये यकीन रखो,
परिंदों को उड़ने की चाह खुद जगानी चाहिए।
हार अगर मिले, तो उसे गले लगाओ,
जीत से पहले हर दर्द को अपनाओ।
जो गिरकर उठता है, वही विजेता बनता है,
जो डर के साए में जीता है, वो सपना मरता है।
हौसले का दीप जलाकर देखो,
मुसीबतों के पहाड़ पिघलाकर देखो।
जो साहस की राह पर कदम बढ़ाता है,
वही इतिहास के पन्नों में जगह पाता है।
बदल डालो अपने डर को प्रेरणा में,
खुद को ढालो नयी ऊर्जा की भावना में।
हर संघर्ष तुम्हें निखारने आया है,
हर घाव तुम्हें विजेता बनाने आया है।
तो चल, आज नहीं तो कल तेरा होगा,
तेरे सपनों का हर पल तेरा होगा।
आसमान भी झुकेगा तेरी जिद के आगे,
बस खुद पर भरोसा रख, दुनिया झुकाने के आगे।

सौरभ कापड़ी
B.A. V Sem.

गीता का उपदेश

1. प्रसादे सर्वदुः खानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ।।
भावार्थः अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और उस प्रसन्नचित्त वाले कर्मयोगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर, एक परमात्मा में ही भलीभांति स्थिर हो जाती है।

2. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्थ तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
भावार्थः– जब जब धरती पर धर्म का पतन और अधर्म में वृद्धि होती है तब उस समय (ईश्वर) पृथ्वी पर अवतार लेते हैं

3. त्रिविधं नरकस्थेंद द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्थस्मादेतत्प्रयं त्यजेत् ।।
भावार्थ :– काम, क्रोध तथा लोभ– ये तीन प्रकार के नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले अर्थात उसको अधोगति में ले जाने वाले हैं। अतैव इन तीनों को त्याग देना चाहिए ।।

खुशी
B.A. III Sem.

महाविद्यालयी गतिविधियाँ

अन्य गतिविधियाँ

पूजा महर को सम्मानित किया

छात्रा पूजा का सम्मान करतीं प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा। स्रोत : महाविद्यालय

संवाद न्यूज एजेंसी

बनबसा (चंपावत)। राजकीय महाविद्यालय की तृतीय सेमेस्टर की छात्रा पूजा महर का बीच गेम्स 2024 के लिए चयन होने और फेडरेशन की ओर से आयोजित पेंचक सिलाट प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने के पर जोरदार स्वागत हुआ।

प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा ने छात्रा के महाविद्यालय पहुंचने पर उसका सम्मान किया। बताया कि बनबसा के अंबेडकर ग्राम फागपुर निवासी

पेंचक सिलाट प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर जोरदार स्वागत किया

पूजा ने पहले भी कई राज्य और राष्ट्रीय स्तर के खेल पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

उसने कराटे और पेंचक सिलाट विधा में महारत हासिल की है। यहां महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. भूपेन्द्र दीक्षित, डॉ. शशि प्रकाश, डॉ. सुधीर मलिक, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, त्रिलोक कांडपाल, अमर सिंह, विनोद चंद आदि थे। संवाद

युवाओं ने स्वामी विवेकानंद के बताए मार्ग पर चलने का लिया संकल्प

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद 23 जनवरी तक मनाएगी युवा पखवाड़ा, होंगे विविध कार्यक्रम

महाविद्यालय में बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक

बनबसा (चंपावत)। छात्रसंघ चुनाव निष्पक्ष कराने के लिए कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख मोहन चंद ने बनबसा महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. आभा शर्मा को सौंपे ज्ञापन में कहा है कि पिछले सत्र (वर्ष 2022) में छात्रसंघ चुनाव के बाद कुछ बाहरी संगठन के लोगों ने महाविद्यालय के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का प्रयास किया था। जिसके बाद पांच छात्रों के खिलाफ केस दर्ज हुआ था। कनिष्ठ प्रमुख ने इस वर्ष होने वाले छात्रसंघ चुनाव में महाविद्यालय में बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक लगाने की मांग की है ताकि महाविद्यालय का माहौल खराब न हो। प्राचार्या ने कहा कि अनधिकृत व्यक्तियों का महाविद्यालय में प्रवेश पूर्ण प्रतिबंधित किया गया है। संवाद

पर्यावरण की शुद्धता से रुकेगा प्रकृति का विनाश

बनबसा (चंपावत)। राजकीय महाविद्यालय में प्लास्टिक उन्मूलन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्लास्टिक से पर्यावरण और भूमि की उर्वरा शक्ति को होने वाले नुकसान के बारे बताया गया। महाविद्यालय में ईको क्लब का गठन भी हुआ।

बनबसा डिग्री कॉलेज परिसर में सफाई अभियान चलातीं छात्राएं। संवाद

प्राचार्या डॉ. आभा शर्मा ने संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए साफ सफाई का महत्व समझा अपने घरों के अलावा आसपास क्षेत्रों की भी सफाई पर जोर दिया। प्राध्यापक डॉ. भूप नारायण दीक्षित ने प्लास्टिक उपयोग पर रोक लगाने की अपील की। ईको क्लब का गठन कर प्राध्यापकों, कर्मचारियों और छात्रसंघ पदाधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई। डॉ. दिनेश गुप्ता, डॉ. शशि प्रकाश सिंह, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, त्रिलोक कांडपाल, अमर सिंह, विनोद कुमार चंद, परसोनू और छात्र-छात्राओं ने सहयोग दिया। संवाद

यूसीसी विधेयक पास होने पर की विद्यार्थियों संग चर्चा

संवाददाता, बनबसा

अतुल विचार : उत्तराखंड विधानसभा में समान नागरिकता संहिता विधेयक पास होने के बाद राजकीय महाविद्यालय बनबसा में इसके कानूनी पहलू पर छात्र-छात्राओं के संग चर्चा की गई।

राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में महाविद्यालय के राजनीतिक विज्ञान के प्राध्यापक डॉ. सुधीर मलिक के द्वारा समान नागरिकता संहिता विधेयक के विभिन्न बिंदुओं के बारे में छात्राओं को जानकारी ...

दी जानकारी

- महिलाओं से संबंधित कानूनी पक्षों के बारे में अवगत कराते हुए छात्रों की शंकाओं को किया दूर

महिलाओं से संबंधित कानूनी पक्षों के बारे में अवगत कराते हुए छात्रों की शंकाओं को दूर किया। महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. भूप नारायण दीक्षित, शशि प्रकाश सिंह, हेम कुमार गहतोड़ी आदि ने अपने-अपने विचारों से छात्रों को समान नागरिकता संहिता विधेयक के बारे में जानकारी दी।

छात्र-छात्राओं ने निकाली रक्तदान रैली

बनबसा। राजकीय महाविद्यालय बनबसा में ई-रक्तकोष कार्यक्रम के तहत रक्तदान रैली निकाली गई, जिसमें लोगों को अधिक से अधिक रक्तदान की अपील की गई। रक्तदान रैली का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा ने किया। रक्तदान रैली महाविद्यालय से शुरू होकर बनबसा बाजार से होकर तिराहे तक निकाली गई। छात्र-छात्राओं ने रैली के दौरान रक्तदान संबंधी नारों के माध्यम से लोगों को रक्तदान एक महादान के लिए प्रेरित किया। रैली में महाविद्यालय की छात्राओं के अलावा प्राध्यापक डॉ मुकेश कुमार, डॉ भूप नारायण दीक्षित, डॉ शशि प्रकाश सिंह, डॉ सुधीर मलिक सहित तमाम लोग शामिल रहे।

अर्थशास्त्र विभागः प्रगतिगाथा (2020–2025)

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत, अपनी स्थापना के पश्चात् से ही इस सीमांत अंचल में उच्च शिक्षा के प्रसार और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहाँ का अर्थशास्त्र विभाग, महाविद्यालय का एक केंद्रीय अंग होने के नाते, छात्रों को आर्थिक सिद्धांतों, राष्ट्रीय एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था की जटिलताओं से परिचित कराने हेतु प्रतिबद्ध है। यह विभाग न केवल छात्रों को अकादमिक ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उन्हें जागरूक नागरिक बनकर क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए भी प्रेरित करता है।

वर्ष 2020: सुचारू शैक्षणिक संचालन एवं विभागीय सक्रियता : वर्ष 2020 में अर्थशास्त्र विभाग डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता के अनुभवी नेतृत्व में संचालित हुआ। इस वर्ष का प्राथमिक केन्द्र बिंदु स्नातक स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रभावी अध्यापन और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रक्रियाओं का संचालन था। डॉ.गुप्ता ने नियमित अध्यापन के साथ–साथ, एडम स्मिथ जयंती जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर और विभागीय आवश्यकतानुसार छात्रों के लिए विभिन्न शैक्षणिक व सह–शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए।

वर्ष 2021: ज्ञान का विस्तार एवं विभागीय कार्यक्रमों की निरंतरता : वर्ष 2021 में भी अर्थशास्त्र विभाग को डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता का सक्रिय मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। नियमित अध्यापन कार्यों के अतिरिक्त, एडम स्मिथ जयंती सहित अन्य प्रासंगिक दिवसों पर विभागीय स्तर पर छात्रों हेतु सघन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें निबंध लेखन, वाद–विवाद और भाषण प्रतियोगिताएँ प्रमुख थीं, जिनके माध्यम से छात्रों को विषय की गहरी समझ और अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

वर्ष 2022: शैक्षणिक क्रम एवं छात्रों का प्रोत्साहन : वर्ष 2022 में भी अर्थशास्त्र विभाग में डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता की उपस्थिति में शैक्षणिक कार्य नियमित रूप से जारी रहा। इस वर्ष जॉन मेनार्ड कीन्स की जयंती तथा अर्थशास्त्र से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण दिवसों पर विभागीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम उत्साह और सक्रियता के साथ आयोजित किए गए। इन आयोजनों में प्रश्नोत्तरी, चार्ट प्रदर्शन और लघु प्रस्तुतिकरण जैसे आयोजन शामिल थे, जिनका उद्देश्य छात्रों के ज्ञान का विस्तार करना था।

वर्ष 2023: सेवामुक्ति एवं अतिथि प्राध्यापकों का बहुमूल्य सहयोग : वर्ष 2023 में विभाग में महत्वपूर्ण बदलाव आया। वर्ष के पूर्वार्ध (जनवरी–जून) तक डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता ने नियमित अध्यापन एवं विभागीय गतिविधियों का संचालन किया। जून 2023 में डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता का स्थानान्तरण हो गया, जिससे विभाग में स्थायी संकाय की रिक्ति उत्पन्न हुई। जुलाई 2023 से वर्ष के अंत तक विभाग में कोई समर्पित स्थायी प्राध्यापक उपलब्ध नहीं था। इस चुनौतीपूर्ण अवधि में, निदेशालय, उच्च शिक्षा, उत्तराखंड के निर्देशन में, राजकीय महाविद्यालय खटीमा से डॉ. हेमा और डॉ. पांडे जी जैसे अनुभवी अतिथि प्राध्यापकों की व्यवस्था की गई। उनके समर्पित अध्यापन और मार्गदर्शन से छात्रों का पठन–पाठन पूरी तरह बाधित नहीं हुआ और उन्हें निरंतर शैक्षणिक सहयोग प्राप्त होता रहा।

वर्ष 2024 : रिक्ति की चुनौती और नवीन नेतृत्व का आगमन : वर्ष 2024 के अधिकांश भाग में अर्थशास्त्र विभाग में स्थायी संकाय की रिक्ति बनी रही। जनवरी से 08 दिसंबर 2024 तक विभाग अतिथि प्राध्यापकों (डॉ. हेमा और डॉ. पांडे जी) के बहुमूल्य सहयोग से संचालित हुआ, जिन्होंने नियमित कक्षाएँ लेकर छात्रों की शैक्षणिक यात्रा को जारी रखा। वर्ष के अंतिम भाग में, 09 दिसंबर 2024 को डॉ. सुशीला आर्या ने अर्थशास्त्र प्राध्यापक के रूप में राजकीय महाविद्यालय बनबसा में कार्यभार ग्रहण किया। यह घटना विभाग के लिए एक आशाजनक मोड़ था, जिसने लंबी रिक्ति को समाप्त किया और विभाग में नवीन नेतृत्व का संचार किया। डॉ. आर्या ने तुरंत नियमित शैक्षणिक कार्य शुरू किया।

वर्ष 2025: (जून तक) नव नेतृत्व में विभागीय गतिविधियों का पुनर्जागरण : वर्ष 2025, जून तक की अवधि, अर्थशास्त्र विभाग केलिए डॉ. सुशीला आर्या के ऊर्जावान नेतृत्व में सघन गतिविधियों और विकासात्मक पहलों का वर्ष है। डॉ. आर्या वर्तमान में विभाग की एकमात्र संकाय सदस्य हैं, और उनके आगमन से विभाग में नियमितता और स्थिरता आई है। NEP 2020 के अनुरूप अध्यापन पूरी प्रतिबद्धता के साथ जारी है। डॉ. सुशीला आर्या छात्रों के समग्र शैक्षणिक विकास हेतु विभागीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का सक्रियता से आयोजन कर रही हैं। वर्ष 2025 में नियमित अध्यापन कार्यों के अतिरिक्त अन्य प्रासंगिक अवसरों पर छात्रों हेतु विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें विशेष रूप से निबंध लेखन, क्विज प्रतियोगिता, वाद–विवाद और भाषण प्रतियोगिताएँ शामिल इसके अतिरिक्त, राजकीय महाविद्यालय बनबसा एवं राजकीय महाविद्यालय अमोडी के अर्थशास्त्र विभागों के बीच एक आपसी समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किया गया। इस समझौते के अंतर्गत "Viksit Bharat: AI Research & Innovation for Economic Transformation" विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन दोनों महाविद्यालयों के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया। डॉ. आर्या महाविद्यालय स्तर पर भी विभिन्न शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागी रही हैं।

अर्थशास्त्र विभाग : पाँच वर्षीय प्रगति की अर्थशास्त्र विषय में छात्र नामांकन एक झलक (2020–2024)

YEAR	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
I SEM	67	62	72	14	28
III SEM	42	56	54	19	35
V SEM	-	-	51	23	38
II YEAR	46	05	-	-	-
III YEAR	-	47	-	-	-

शोध और प्रकाशन : विभाग के प्राध्यापकों ने विगत वर्षों में 10 से अधिक विभिन्न सामाजिक–आर्थिक मुद्दों पर शोध पत्र प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में तथा पुस्तकों में प्रकाशित किए। विभाग द्वारा एक (2025) राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन तथा शोध परियोजनाएं राज्य सरकार (मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा शोध परियोजना (2023 – 2024)) द्वारा स्वीकृत होना विशेष उपलब्धि रही।

भविष्य की दिशा : विगत पाँच वर्षों में अर्थशास्त्र विभाग ने शैक्षणिक, शोध एवं सामाजिक दृष्टि से प्रभावशाली प्रगति की है। विभाग भविष्य में और अधिक नवाचार, गुणवत्ता शिक्षा और शोध की दिशा में कार्यरत रहेगा।विभाग का लक्ष्य है कि निबंध लेखन, नेशनल सेमिनार तथा क्विज प्रतियोगिता, वाद–विवाद और भाषण प्रतियोगिताएँ तथा शोध को स्थानीय समस्याओं से जोड़ते हुए सामाजिक परिवर्तन की दिशा में योगदान दिया जाए। आने वाले वर्षों में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार आयोजित करना तथा रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों की शुरुआत प्राथमिकता में है।

निष्कर्ष (2020–2025): वर्ष 2020 से 2025 तक की अवधि राजकीय महाविद्यालय बनबसा के अर्थशास्त्र विभाग के लिए संकाय उपलब्धता में भिन्नता से चिह्नित रही। डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता ने प्रारंभिक वर्षों में विभाग को संभाला। उनके स्थानान्तरण के बाद निदेशालय, उच्च शिक्षा, उत्तराखंड के निर्देशानुसार राजकीय महाविद्यालय खटीमा से आए अतिथि प्राध्यापकों, डॉ. हेमा और डॉ. पांडे जी, के बहुमूल्य सहयोग से अर्थशास्त्र विभाग में शैक्षणिक निरंतरता सुनिश्चित की गयी। 09 दिसंबर 2024 को डॉ. सुशीला आर्या के आगमन ने विभाग को स्थायी नेतृत्व प्रदान किया है, जिससे विभाग में नई ऊर्जा और स्थिरता आई है। उनके मार्गदर्शन में विभाग 2025 से पुनः सक्रियता और विकास की ओर अग्रसर है, जिसमें नियमित अध्यापन और विभिन्न शैक्षणिक एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों का सघन आयोजन शामिल है। यह अवधि अर्थशास्त्र विभाग की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता, संस्थागत समन्वय के महत्व और संकाय (स्थायी एवं अतिथि) के समर्पण का प्रमाण है। विभाग अपनी विकास यात्रा में आगे बढ़ रहा है, छात्रों को सशक्त बना रहा है और उज्ज्वल भविष्य के लिए आशावान है।

डॉ0 सुशीला आर्या

मीडिया की नजर से

देश के लिए मर मिटने का लिया संकल्प

बनबसा/लोहाघाट (चंपावत)। बनबसा राजकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने हर घर तिरंगा अभियान के तहत तिरंगा रैली निकाली। प्राचार्या डॉ. आभा शर्मा ने सभी को तिरंगा प्रतिज्ञा और नशा मुक्त शपथ दिलाई। डॉ. मुकेश कुमार ने देश के वीर सपूतों को याद कर तिरंगा की आन बान शान के लिए मर मिटने का संकेल्प लिया।

वहां प्राध्यापक डॉ. राजीव कुमार, डॉ. भूप नारायण दीक्षित, डॉ. सुधीर मलिक, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, प्रधान सहायक जयंती देवी रहीं। वहीं पीजी कॉलेज लोहाघाट में प्राचार्य प्रो. संगीता गुप्ता के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाली गई। वहां संयोजक डॉ. कमलेश शक्टा, सह-संयोजक डॉ. प्रकाश लखेड़ा डॉ. अर्चना त्रिपाठी, डॉ. स्वाति बिष्ट, डॉ. दिनेश राम आदि रहे। संवाद

तिरंगा यात्रा में शामिल एनसीसी, एनएसएस स्वयंसेवक व लोग। संवाद

IMG-20250506-WA0003.jpg

राजकीय महाविद्यालय बनबसा की रेड क्रॉस इकाई ने चलाया स्वच्छता अभियान, स्वच्छता के प्रति लोगों को किया जागरूक

खुसरो मेल, संवाददाता

बनबसा। राजकीय महाविद्यालय, बनबसा की रेड क्रॉस यूनिट में महाविद्यालय के प्राचार्य आनंद प्रकाश सिंह के संरक्षण और रेड क्रॉस प्रभारी डॉ. सुधीर मलिक के नेतृत्व में स्थानीय रेलवे परिसर एवं स्टेशन पर जन जागरुकता और स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वयंसेवकों ने रेलवे स्टेशन परिसर और आसपास के क्षेत्र में व्यापक सफाई अभियान चलाने के साथ ही यात्रियों और आम जनता को स्वच्छता के महत्व और इसे बनाए रखने के तरीकों के बारे में जागरूक किया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सामुदायिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरुकता बढ़ाना था।

कार्यक्रम को सफल बनाने में बनबसा रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर सूरज कुमार, अजीत सिंह, राकेश यादव, पर्यावरण मित्र रवि कुमार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ, वहीं इस अभियान में महाविद्यालय की ओर से में डॉ. मुकेश कुमार, डॉ भूपनारायण दीक्षित, डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी, एवं डॉ सुशीला आर्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा अभियान में महाविद्यालय की कार्यालय अधीक्षक जयंती, शिक्षणेत्तर कर्मचारी त्रिलोक कांडपाल, अमर सिंह, विनोद कुमार एवं सोनू भी शामिल रहे।

महाविद्यालय के प्राचार्य आनद प्रकाश सिंह ने इस सफल आयोजन के लिए रेड क्रॉस यूनिट के सभी सदस्यों, छात्र-छात्राओं और सहयोगी कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन न केवल हमारे परिवेश को स्वच्छ रखने में मदद करते है, बल्कि छात्रों में सेवा भावना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी मजबूत करते हैं।"

अमृत विचार 29.03.2025

दो दिनी वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता हुई संपन्न

संवाददाता, बनबसा

अमृत विचार : राजकीय महाविद्यालय बनबसा में दो दिवसीय वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता का समापन हुआ। गुरुवार को राजकीय महाविद्यालय बनबसा में शुरू हुए दो दिवसीय वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आनंद प्रकाश सिंह ने किया। इस अवसर पर प्राचार्य ने खेल के जीवन में महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुये उनको अनुशासन में रहने को प्रेरित किया।

आयोजित प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग 100 मीटर दौड़ मे खुशी ने प्रथम, दीक्षा उनियाल ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। छात्र वर्ग 100 मीटर दौड़ में छात्र वर्ग कमल कापड़ी प्रथम और भास्कर कापड़ी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर हिमांशु सिंह प्रथम और कन्हैया सिंह द्वितीय स्थान पर रहे। छात्र वर्ग 200 मीटर दौड़ में सगनदीप कौर प्रथम स्थान पर रही। 400 मीटर दौड़ में जतिन चन्द प्रथम, कैलाश चंद द्वितीय, देव कुमार तृतीय और अनिल कुमार चतुर्थ स्थान पर रहे।

800 मीटर दौड़ मे नितेश चन्द प्रथम, हिमान्यु सिंह द्वितीय, भुवन चन्द तृतीय और कन्हैया सिंह चौथे स्थान पर रहे। छात्र वर्ग 800 मीटर दौड़ में खुशी चंद प्रथम और कमलेश चंद द्वितीय स्थान पर रही। समापन के मौके पर प्राचार्य डॉ. आनंद प्रकाश सिंह और क्रीड़ा प्रभारी डॉ. भूप नरायन दीक्षित ने सभी विजई प्रतिभागियों को बधाई दी।

प्रतियोगिता के दौरान दौड़ लगाते छात्र। ● अमृत विचार

राम आर्या ने अभियुक्त दिपेश को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया।

'परीक्षा संबंधी समस्याओं को निदान करें'

बनबसा। एसएसजे विवि के कुलपति प्रो.सतपाल सिह बिष्ट ने डिग्री कॉलेज का निरीक्षण किया। उन्होंने कॉलेज स्टाफ को छात्रों को परीक्षा से संबंधित समस्याओं का निदान करने के निर्देश दिए। कुलपति ने कॉलेज के भवन, पुस्तकालय आदि का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रशिक्षार्थियो से विश्वविद्यालय के पोर्टल से जानकारी लेने को कहा। इधर सोमवार को चम्पावत से स्थानांतरित हो कर आई अर्थशास्त्र की डॉ.सुशीला आर्या ने पदभार ग्रहण किया। यहां प्राध्यापक डॉ राजीव कुमार, भूप नरायण दीक्षित, सुधीर मलिक, हेम कुमार गहतोड़ी रहे।

बनबसा डिग्री कॉलेज का सोमवार को कुलपति प्रो.सतपाल सिह बिष्ट ने निरीक्षण किया।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया

महाविद्यालय में कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त करतीं छात्राएं।

बनबसा : राजकीय महाविद्यालय में बाल विकास विभाग की ओर से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राओं के लिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ।

शुक्रवार को बाल विकास विभाग के परियोजना अधिकारी पुष्पा चौधरी मिशन शक्ति योजना के जिला समन्वयक दीपक सिंह महाविद्यालय में चल रहे कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया। इस दौरान मिशन शक्ति योजना के जिला समन्वयक दीपक सिंह ने छात्राओं से कम्प्यूटर से संबंधित प्रश्नोत्तर और चर्चा कर छात्राओं को स्वावलंबी होने के लिए जागरूक किया। प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में 20 छात्राएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण आईटीएम खटीमा के सहयोग से चलाया जा रहा है।

मीडिया की नजर से

मुवानी महाविद्यालय में आयोजित प्रशिक्षण के दौरान उपस्थित विद्यार्थी, प्रशिक्षक। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

मुवानी (पिथौरागढ़)/बनबसा/चंपावत। राजकीय महाविद्यालय मुवानी में देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण जारी है। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को स्टार्टअप सीड फंड के लिए पंजीकरण कराया गया। विद्यार्थियों को स्टार्टअप आइडिया चयन होने पर स्टार्टअप सीड फंड अवार्ड के माध्यम से 75,000 रुपये की वित्तीय सहायता राशि प्रदान की जाएगी। इसका उद्देश्य स्टार्टअप को बढ़ावा देना है।

नोडल अधिकारी राजकमल किशोर ने कहा कि प्रशिक्षकों को नये बिजनेस आइडिया सोचने पर प्रेरित किया जा रहा है। डॉ. संजीव कुमार ने प्रशिक्षकों को उद्यमिता के महत्व और मार्केट के हिसाब से बिजनेस, स्टार्टअप ... कमलेश कुमार, डॉ. नीता जोशी, भावना, धर्मेंद्र सिंह, वीरेंद्र सिंह, अंशुल कुमार, ... आदि मौजूद रहे।

वहीं, बनबसा राजकीय महाविद्यालय में भी उद्यमिता विकास प्रशिक्षण शुरू हो गया है। मुख्य अतिथि परियोजना अधिकारी अवनीश कुमार और प्रशिक्षक आशीष शुक्ला ने विद्यार्थियों को देवभूमि उद्यमिता योजना की उपयोगिता और लाभ के संबंध में गहन जानकारियां दीं। कहा कि युवा प्रशिक्षण का लाभ उठा स्वरोजगार अपना आत्मनिर्भर हो सकेंगे।

इधर, डिग्री कॉलेज अमोड़ी में देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण जारी है। बृहस्पतिवार को सरस्वती बोहरा ने युवाओं को अचार, जैम बनाने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। वहीं पंकज तिवारी ने आइडिया क्रिएशन की विधियों के ...

Dec 2024 अमर उजाला

...बसा में परीक्षा का लिया जायजा

पर्यवेक्षक के रूप में ... महाविद्यालय में चल रही परीक्षा का निरीक्षण किया।

सचल दल के प्रभारी डॉ. ... ने बृहस्पतिवार को सुबह महाविद्यालय पहुंचे।

उन्हें 54 परीक्षार्थी परीक्षा देते हुए मिले। महाविद्यालय में चल रही परीक्षाओं के संचालन में प्रभारी प्राचार्य डॉ. मुकेश कुमार, परीक्षा प्रभारी डॉ. ... दीक्षित के अलावा प्राध्यापक डॉ. सुशीला आर्या, डॉ. सुधीर मलिक, हेम कुमार गहतोड़ी, कार्यालय कर्मी अमर सिंह, त्रिलोक चंद्र कांडपाल, ... आदि थे।

...एम से की समस्याओं के समाधान की मांग

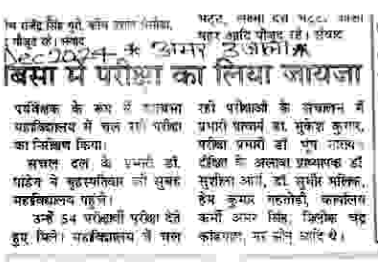

...बसा (चंपावत)। बनबसा भाजपा मंडल अध्यक्ष कमलेश भट्ट ने देहरादून में ... पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात कर क्षेत्र की समस्याओं के समाधान की ... की। सीएम को सौंपे ज्ञापन में कहा है कि बनबसा के ... ग्रामसभा अंतर्गत ...गोठ को बनबसा से जोड़ने के लिए झूला पुल बनाया जाए। कहा गया है कि ... में उफनाई हुड्डी नदी से हेलागोठ वासियों का बनबसा से संपर्क कट जाता ... इससे ग्रामीणों के अलावा स्कूली बच्चों को नुकसान होता है। इसी माह हेलागोठ ... घर जा रही एक महिला की हुड्डी नदी में बहने से मौत हो गई थी। संवाद

...कृति संरक्षण में वृक्षों का है विशेष महत्व

...बसा (चंपावत)। राजकीय महाविद्यालय में प्रकृति संरक्षण दिवस पर संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए प्राचार्या डॉ. आभा शर्मा ने प्रकृति संरक्षण ... महत्व और आवश्यकता पर जोर दिया। प्राचार्या डॉ. शर्मा की अध्यक्षता ... प्राध्यापक डॉ. हेम कुमार गहतोड़ी के संचालन में हुई संगोष्ठी में डॉ. ... सक्सेना, डॉ. सुधीर मलिक, डॉ. हेम कुमार, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. ... नारायण दीक्षित, डॉ. शशि प्रकाश, त्रिलोक चंद्र कांडपाल, विनोद कुमार, ... सिंह, नरसिंह के अलावा छात्र छात्राओं ने सहयोग दिया। संवाद

...नाम रोपे गए पौधे

राजकीय महाविद्यालय में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

भूमिका बसेड़ा ने बॉक्सिंग में जीता स्वर्ण पदक

राजकीय महाविद्यालय में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

भूमिका बसेड़ा ने बॉक्सिंग में जीता स्वर्ण पदक

मीडिया की नजर से

मोटे अनाज के फायदे बताए।

मेरी माटी, मेरा देश कार्यक्रम के तहत स्वयंसेवियों ने आंगन की मिट्टी अमृत कलश में एकत्र की। बनबसा महाविद्यालय में प्रभारी प्राचार्य डॉ. भूप नारायण दीक्षित ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। डॉ. शशिप्रकाश सिंह, डॉ. सुधीर मलिक ने गढ़भोज का महत्व बताया। वहां निबंध प्रतियोगिता भी हुई।

पाटी कॉलेज में छात्र-छात्राओं को डॉ. प्रवीण पांडे, अल्का आर्या ने मोटे अनाज के फायदे बताए।

मनोज कुमार आदि रहे। संवाद

डॉ. ऋतु, डॉ. शिवानी कर्नाटक और जगत सिंह बिष्ट ने स्थानीय फसलों की खेती के लिए प्रेरित किया। निबंध प्रतियोगिता में छात्रा हिमानी, रजनी, पायल गहतोड़ी, दीया, तनुजा, कृतिका, सरिता, सोनिया आदि थे।

परत का पर्यावरणीय महत्व सम

मतदाताओं ने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ ली

मतदाताओं ने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ ली

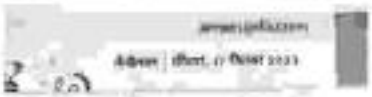

आस्था और संस्कृति का महाकुम्भः पौराणिक कथाओं से वैश्वीकृत युग तक

भारतवर्ष मानव सभ्यता की पुण्यभूमि है जिसके कारण देवगण भी इस कर्मभूमि पर जन्म लेने वाले मनीषियों की धन्यता का गान करते हुए स्वर्ग और अपवर्ग की साधनभूत भारतभूमि पर स्वयं जन्म लेने के लिए उत्सुक रहते हैं–

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

जिन्होंने इस पुण्यभूमि भारतवर्ष में जन्म लिया है, वे निश्चय ही पुण्य के भागी है, सौभाग्यशाली हैं। संस्कृति किसी देश, समाज या जाति की आत्मा होती है। जिससे उसके उन सभी संस्कारों का बोध होता है, जिसकी सहायता से वह अपने सामूहिक या सामाजिक जीवन के आदर्शों का निर्माण करता है। इस तथ्य का चिन्तन करते हुए भारतीय परम्परा ने सदा संस्कृतिनिष्ठ मंगलमय मार्ग को अपनाया है।

इस वर्ष प्रयागराज में 144 वर्षों के पश्चात् आयोजित इस पूर्ण महाकुम्भ ने भारत की एकता तथा विकासयात्रा का संदेश देते हुए धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक समृद्धि और आर्थिक प्रगति के मार्ग को प्रशस्त किया है। भारत की सनातन परम्पराओं में आस्था रखने वाले प्रत्येक भारतीय का यह दृढ विश्वास है कि गंगा माता की अविरल धारा की भांति महाकुम्भ की धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना साथ–साथ एकता की धारा निरन्तर बहती रहेगी।

महाविद्यालय में समसामयिक विषय को ध्यान रखकर दिनांक 11/02/2025 को एक वेबिनार **'आस्था और संस्कृति का महाकुम्भः पौराणिक कथाओं से वैश्वीकृत युग तक'** विषयक ऑनलाइन माध्यम से एक व्याख्यान कार्यक्रम संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बनबसा, चम्पावत, (उत्तराखण्ड) एवं खुनखुन जी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की संयोजक प्रो. (डॉ०) मांडवी सिंह विभागाध्यक्ष– संस्कृत विभाग खुनखुन जी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चौक, लखनऊ ने संयोजन करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन हमें धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ते हैं। यह महाकुम्भ धार्मिक समागम से भी अधिक महत्व रखता है। यह आस्था, अनुष्ठान एवं आध्यात्मिक ज्ञान से समन्वित एक जीवन्त उत्सव है।

व्याख्यान कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ०) अभिमन्यु सिंह, विभागाध्यक्ष–संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय ने वैदिक मन्त्रोच्चारण से किया, उन्होंने अपने व्याख्यान में स्कन्दपुराण के महत्व को विस्तार से समझाया, विशेष रूप से प्राचीन ग्रंथों में वर्णित कुम्भ मेला की धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला ।

विशिष्ट वक्ता डॉ. सत्यकेतु सहायक प्रोफेसर संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय ने **सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः** विषय के माध्यम से कुम्भ मेले को भारतीय संस्कृति और आस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया, कुम्भ समय तथा सीमा से परे है, जो जनमानस को उनके आध्यात्मिक मूल से जोड़ता है तथा समस्त विश्व को एकता के सूत्र में बांधता है।

डॉ. अशोक कुमार शतपथी सहायक प्रोफेसर संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय ने कुम्भ मेला के माध्यम से जीवन में सिद्धि और आत्मशुद्धि के पक्ष को भी प्रस्तुत किया गया। जिसे प्राचीन ग्रन्थों में विशेष स्थान प्राप्त है।

कार्यक्रम के संरक्षक प्रो० (डॉ०) आनन्द प्रकाश सिंह, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, बनबसा, चम्पावत, ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए मुख्य वक्ताओं प्रतिभागियों, आयोजन समिति को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि महाकुम्भ मेले में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। जो मानव जीवन का परम पुरुषार्थ है। प्रो० (डॉ०) अंशु केडिया, प्राचार्या खुनखुन जी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चौक, लखनऊ ने महाकुम्भ के माहात्म्य का वर्णन करते हुए सभी श्रोताओं तथा सहभागियों का आभार व्यक्त किया।

इस व्याख्यान कार्यक्रम के समापन पर महाविद्यालय के प्राध्यापक सहसंयोजक प्रो० (डॉ०) मुकेश कुमार ने महाविद्यालय परिवार सहित सभी वक्ताओं, सहयोगियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रुद्रो समाहितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल में ब्रह्मा, मध्य में मातृगण, अन्तावस्था में समस्त सागर, पृथ्वी में निहित सप्त द्वीप तथा चारों वेदों का समन्वयात्मक स्वरूप विद्यमान है।

आस्था और संस्कृति के महाकुम्भ की पौराणिक कथाओं से वैश्वीकृत युग तक की महत्ता एवं विशिष्टता बताते हुए कहा कि महाकुम्भ में करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु स्नान करते हैं, और तपःपूत साधु–सन्त, महात्माओं के दीर्घ अनुभव, चिन्तन और ज्ञान के उपदेशामृत का पान करते हैं। सनातन परम्परा में महाकुम्भ मेले के समय पवित्र गंगा, यमुना, और सरस्वती नदियों में स्नान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है ऐसी मान्यता है।

धन्यं हि भारतवर्ष धन्या भारतसंस्कृतिः ।
भारतीयाः जनाः धन्याः धन्यास्माकं परम्परा ॥

प्रो. डा0 मुकेश कुमार
संस्कृत विभाग

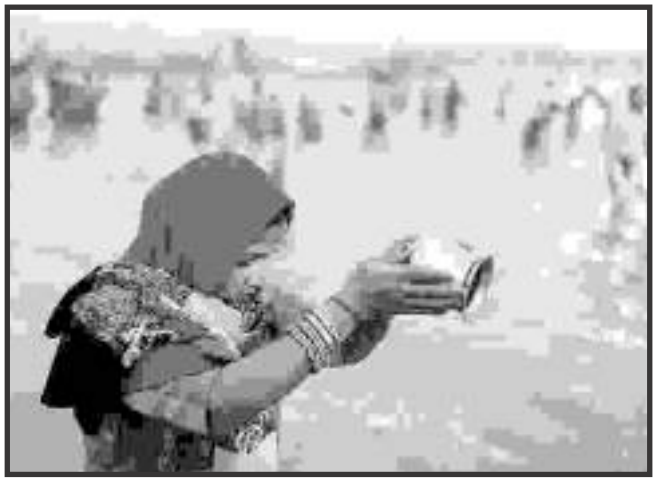

वार्षिक पत्रिका हेतु विगत पाँच वर्षों की सांस्कृतिक यात्रा पर विशेष आख्या

माँ पूर्णागिरी के पावन सान्निध्य में सांस्कृतिक उत्कर्ष की गाथा उत्तराखंड के सुरम्य अंचल में स्थित, राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत, मात्र ज्ञान की मदाकिनी प्रवाहित करने वाला संस्थान नहीं, अपितु माँ पूर्णागिरी के असीम आशीर्वाद से सिंचित, कला, साहित्य और संस्कृति के एक जीवंत ऊर्जा केंद्र के रूप में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। महाविद्यालय की गौरवमयी वार्षिक पत्रिका **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** का यह विशेषांक, विगत पाँच वर्षों (2020–2025) के उस सुनहरे कालखंड को समर्पित है, जब सांस्कृतिक गतिविधियों ने यहाँ के अकादमिक वातावरण में नवीन चेतना का संचार किया। इन वर्षों में. वैश्विक परिस्थितियों की जटिलताओं के बावजूद सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रवाह अविच्छिन्न रहा, जिसने युवा प्रतिभाओं को पल्लवित होने का अवसर दिया और उन्हें हमारी समृद्ध विरासत से गहराई से जोड़ा। यह आख्या इन पाँच वर्षों की प्रमुख सांस्कृतिक झलकियों का एक सारगर्भित, साहित्यिक एवं प्रेरणास्पद वृत्तचित्र प्रस्तुत करती है, जो **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** के पृष्ठों पर जीवंत हो उठेंगे।

वर्ष 2020: उत्साह का प्रभात और अनुकूलन की गाथा वर्ष 2020 का सांस्कृतिक क्षितिज, 6 मार्च को आयोजित सत्र 2019–20 के भव्य वार्षिकोत्सव के साथ उद्घाटित हुआ। यह दिवस छात्र–छात्राओं के कलात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन, पारंपरिक नृत्यों, सुरीले गीतों और विचारोत्तेजक नाटकों के मंचन का महापर्व था। शैक्षणिक एवं सह–पाठ्यक्रम उत्कृष्टता हेतु पुरस्कार वितरण ने प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया। किन्तु, मार्च 2020 में विश्वव्यापी कोविड–19 महामारी के अप्रत्याशित आगमन ने भौतिक कार्यक्रमों को बाधित किया। महाविद्यालय ने त्वरित अनुकूलन कर अकादमिक गतिविधियों को ऑनलाइन स्थानांतरित किया, तथा नवंबर–दिसंबर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार ने डिजिटल माध्यम से जुड़ने का नया मार्ग प्रशस्त किया।

वर्ष 2021: ऑनलाइन माध्यमों पर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की दृढ़ता कोविड–19 महामारी की चुनौतियों के बावजूद, महाविद्यालय की सांस्कृतिक आत्मा अडिग रही। महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति ने डिजिटल माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया। 5 अप्रैल को 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत ऑनलाइन रंगोली प्रतियोगिता ने कलात्मकता और देशभक्ति को जोड़ा। अगस्त 2021 का महीना ऑनलाइन सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के एक जीवंत समागम का साक्षी बना, जिसमें उत्तराखंड की पारंपरिक लोककलाओं एवं प्रदर्शन कलाओं से सबंधित विधाएं शामिल थीं। छात्र–छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किझा। विजेताओं को ऑनलाइन पुरस्कृत किया गया। 2 अक्टूबर को गांधीजी एवं शास्त्री जी की जयंती तथा 26 नवंबर को संविधान दिवस जैसे राष्ट्रीय दिवस भी ऑनलाइन मनाए गए, जिससे नई पीढी राष्ट्रीय मूल्यों से जुड़ी रही।

वर्ष 2022: भौतिक कार्यक्रमों का पुनर्जागरण और राष्ट्रीय गौरव का समागम जैसे–जैसे महामारी का प्रकोप कम हुआ, भौतिक गतिविधियों पुनः प्रारंभ हुई। 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर रोवर रेंजर इकाई ने सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित पोस्टर, रंगोली एवं निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। ष्आजादी का अमृत महोत्सवष् के अंतर्गत 12 मार्च को दांडी मार्च पर विशेष कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं ने आंदोलन के महत्व पर प्रकाश डाला और देशभक्तिपूर्ण प्रस्तुतियाँ दी। 14 सितंबर को हिंदी दिवस तथा 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस पर भी गरिमापूर्ण आयोजन हुए। वर्ष के अत में छात्र संघ चुनाव 2022–23 सपन्न हुए।

वर्ष 2023: जागरुकता के रंग, साहित्य की बहार और उत्तराखंड का गौरवगान वर्ष 2023 सामाजिक जागरुकता, साहित्यिक आयोजन और राज्य गौरव का वर्ष रहा। स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत 18–19 दिसंबर को आगामी चुनावों में शत–प्रतिशत मतदान हेतु रंगोली प्रतियोगिता ने मतदाता जागरूकता का संदेश प्रभावी ढंग से प्रसारित किया। 09 नवंबर को उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस पर प्राचार्य एवं छात्र संघ पदाधिकारियों द्वारा राज्य की स्थापना के उद्देश्यों एवं संस्कृति पर गहन चर्चा हुई। 23 जुलाई को लोक पर्व हरेला के समापन पर बुलंदी साहित्य सेवा समिति एवं हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें भारत एवं नेपाल के ख्याति प्राप्त कवियों ने अपनी ओजस्वी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। वर्ष 2023–24 के छात्र संघ चुनाव में अंशु चंद सांस्कृतिक सचिव निर्वाचित हुए।

वर्ष 2024 राष्ट्रीयता का पर्व, साहित्यिक चेतना और सामाजिक जागरुकता का वर्ष : वर्ष 2024 राष्ट्रीयता की भावना, साहित्यिक अभिरुचि एवं सामाजिक जागरुकता से ओतप्रोत रहा। 18 मार्च को लोकसभा चुनाव में शत–प्रतिशत मतदान हेतु स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत भव्य मतदाता जागरूकता रैली एवं स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित हुई। 26 जुलाई को कारगिल दिवस पर वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 12 अगस्त को **'हर घर तिरंगा अभियान'** के तहत तिरंगा यात्रा एवं नशा मुक्ति शपथ दिलाई गई। 15–16 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर प्रभात फेरी, ध्वजारोहण एवं देशभक्तिपूर्ण प्रस्तुतियाँ हुई। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस वृक्षारोपण के साथ मनाया गया। 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला गया तथा छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। 23 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर शिक्षा के महत्व एवं सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता फैलाई गई। 9 नवंबर को राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस पर निबंध एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताएँ हुईं।

वर्ष 2025: सांस्कृतिक चेतना का नवोन्मेष और विरासत का सम्मान : वर्ष 2025 ने सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधियों से परंपरा और आधुनिकता का संगम दर्शाया। 9 फरवरी को 'आरंभ' सांस्कृतिक कार्यक्रम छात्र–छात्राओं के उत्कृष्ट प्रबंधन एवं रचनात्मकता का परिचायक था, जिसमें महाविद्यालय प्रशासन, पूर्व छात्र संघ पदाधिकारियों, स्थानीय गणमान्यों एवं कलाकारों की सक्रिय भागीदारी रही। 11 फरवरी को संस्कृत विभाग एवं खुन खुन जी कन्या महाविद्यालय, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में **''आस्था और संस्कृति का महाकुम्भ''** विषय पर विशिष्ट वेबिनार आयोजित हुआ, जिसमें पौराणिक कथाओं की वर्तमान प्रासंगिकता पर चर्चा हुई। 22 अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस पर पर्यावरण संरक्षण हेतु संकल्प लिया गया। 7 मई को गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर उनके जीवन, साहित्य एवं वैश्विक योगदान का स्मरण किया गया। 8 मई को रेड क्रॉस दिवस मानवीय सेवा के प्रति जागरूकता, प्रतियोगिताओं तथा महाविद्यालय प्रांगण में स्वच्छता अभियान के साथ मनाया गया।

उपसंहार : राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत ने विगत पाँच वर्षों में अकादमिक उत्कृष्टता के साथ–साथ सांस्कृतिक उत्कर्ष का भी मार्ग प्रशस्त किया है। वैश्विक चुनौतियों के बीच भी सांस्कृतिक गतिविधियों का निरंतर प्रवाह, ऑनलाइन एवं भौतिक माध्यमों के समन्वय तथा छात्र–छात्राओं की सक्रिय भागीदारी ने महाविद्यालय को एक जीवंत केंद्र बनाए रखा। इन प्रयासों ने न केवल प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया, बल्कि सामाजिक जागरूकता राष्ट्रीय गौरव और नेतृत्व क्षमता को भी सुदृढ किया। **'श्री पूर्णागिरी दर्पण'** पत्रिका इन स्मरणीय पलों की साक्षी और प्रेरणास्रोत है। यह आख्या इस सांस्कृतिक यात्रा का प्रतिबिंब है, जो भविष्य में भी इस धरोहर को संजोने हेतु प्रेरित करेगी।

हेम कुमार गहतोड़ी

Uttarakhand's Regional Literature in English Prose and Rhyme.

Abstract
Uttarakhand's regional literature, rooted in Garhwali, Kumaoni, and Hindi traditions, has made significant contributions to English prose through translations, adaptations, and original writings. This article explores the diverse genres of Uttarakhand's literature, including folk tales, eco-literature, spiritual writings, modern fiction, and academic works. Highlighting key authors such as Shivani, Ruskin Bond, Ganesh Saili, Stephen Alter, and Namita Gokhale, the article underscores the region's unique blend of cultural heritage, environmental consciousness, and spiritual narratives. Despite challenges such as limited mainstream recognition and publishing platforms, Uttarakhand's literature continues to evolve, bridging regional identity with global literary discourse.

Keywords: Uttarakhand, regional literature, English prose, folklore, eco-literature, Himalayan writers

Introduction: Uttarakhand, nestled in the Himalayas, boasts a rich cultural and linguistic heritage, with primary literary traditions in Garhwali, Kumaoni, and Hindi. However, the translation and adaptation of these regional narratives into English have enriched Indian literature, offering global audiences a glimpse into the state's folklore, traditions, and socio-environmental concerns (Saili, 2010). This article examines the contributions of Uttarakhand's literature to English prose, focusing on folk tales, eco-literature, spiritual writings, modern fiction, and academic works.

Folk Tales and Oral Traditions: Uttarakhand's oral traditions, including folktales, legends, and ballads, have been preserved through English translations. Stories of deities like Golu Devta, Nanda Devi, and Hariyali Devi are central to the region's cultural memory (Alter, 2001). Folk songs such as Jagars (spiritual invocations), Chhopati (romantic songs), and Mangal (wedding songs) reflect the emotional and social fabric of the hill communities (Pande, 2014). Writers like **Shivani (Gaura Pant)** and **Rahul Sankrityayan,** though primarily Hindi authors, have inspired English adaptations of Kumaoni and Garhwali stories. Shivani's works, such as Chaudah Phere and Krishnakali, translated by her daughter Ira Pande, highlight Kumaoni culture and women's struggles (Pande, 2014).

Eco-literature and Nature Writing: The Himalayas' pristine landscapes have inspired English writings on ecology and environmental activism. Ruskin Bond, though not native to Uttarakhand, has immortalized the region in works like Landour Days and The Blue Umbrella (Bond, 2002). His narratives capture the simplicity and beauty of hill life, making him a cornerstone of Uttarakhand's English literature.

Stephen Alter, an American-Indian writer raised in Mussoorie, blends memoir with environmental advocacy in Sacred Waters and Wild Himalaya (Alter, 2019). His works emphasize the ecological and spiritual significance of the Himalayas.

Spiritual and Philosophical Prose : Uttarakhand's spiritual hubs like Rishikesh and Badrinath have influenced English works on Himalayan spirituality. Swami Rama's Living with the Himalayan Masters explores mystical experiences, while Western authors influenced by Uttarakhand's ashrams have contributed to spiritual literature (Rama, 1999).

Modern Fiction and Memoirs : Contemporary writers like Namita Gokhale explore Kumaoni heritage and gender dynamics in works such as Things to Leave Behind (Gokhale, 2016). Bill Aitken's travelogues, like The Nanda Devi Affair, combine personal narrative with Himalayan exploration (Aitken, 1994).

Academic and Historical Contributions: Scholars have documented Uttarakhand's history and tribal cultures in English. Works like Himalayan Polyandry by D.N. Majumdar provide anthropological insights, while Ganesh Saili's books preserve colonial and post-colonial histories of Mussoorie and Dehradun (Saili, 2010).

Challenges and Future Directions : Despite its richness, Uttarakhand's English literature faces challenges such as limited mainstream recognition and few dedicated publishing platforms (Gokhale, 2016). However, initiatives like the Mussoorie Writers' Festival and translations by diaspora writers are amplifying its presence.

Conclusion : Uttarakhand's regional literature, deeply rooted in Himalayan heritage, has enriched English prose through its unique blend of folklore, ecology, and spirituality. Authors like Ruskin Bond, Shivani, and Stephen Alter have bridged local traditions with global narratives, ensuring the region's literary legacy endures. With continued efforts in translation and preservation, Uttarakhand's literature promises to thrive on the global stage.

References

•Alter, S. (2001). Sacred Waters: A Pilgrimage to the Many Sources of the Ganga. Penguin India.
•Bond, R. (2002). Landour Days: A Writer's Journal. Penguin India.
•Gokhale, N. (2016). Things to Leave Behind. Penguin India.
•Pande, I. (2014). Shivani's Best Stories. HarperCollins.
•Rama, S. (1999). Living with the Himalayan Masters. Himalayan Institute Press.
•Saili, G. (2010). Mussoorie & Landour: Days of Wine and Roses. Rupa Publications.

देवभूमि उद्यमिता योजना के अन्तर्गत उद्यमिता विकास कार्यक्रम की आख्या

परिचयः उत्तराखण्ड की स्थापना भारत के 27वें राज्य के रुप में 9 नवंबर, 2000 को हुई। उत्तराखण्ड राज्य हिमालयी पर्वत श्रृंखला की तलहटी में प्राकृतिक सुंदरता को समेटे हुए स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति विविधता से भरी है। बर्फ से आच्छादित हिमालयी चोटियां, घाटियां, हिमनदियां (ग्लेशियर्स), झीलें और हरियाली इसे देश के गौरवशाली राज्य के रूप में महत्व प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में देवभूमि उद्यमिता योजना का शुभारम्भ राज्य सरकार द्वारा राज्य के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया था। इस योजना का शुभारम्भ माननीय मुख्यमन्त्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा वर्ष 2022 में देहरादून में आयोजित एक राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान किया गया था, और इसे मुख्यमन्त्री स्वरोजगार योजना के एक विस्तृत संस्करण के रूप में प्रस्तुत किया गया।

उत्तराखण्ड राज्य में देवभूमि उद्यमिता योजना का उद्देश्य स्वरोजगार को प्रोत्साहन देना, युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना तथा ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को सशक्त करना है। नवोदित युवाओं को स्वरोजगार एवं लघु उद्योगों के लाभप्रद कार्यों में शिक्षा, दक्षता और कुशलता विकसित करने के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से उद्यमिता के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने के लिए उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित देवभूमि योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय में 12 दिवसीय 05/03/2024 से 18/03/2024 तक एक उद्यमिता विकास कार्यक्रम Entrepreneurship Development Programme (EDP) भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद, गुजरात कार्यान्वयन संस्था के सहयोग से महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो० (डॉ०) आभा शर्मा की अध्यक्षता तथा नोडल अधिकारी प्रो० (डॉ०) मुकेश कुमार के दिशा–निर्देशन में आयोजित किया गया।

भारत के आर्थिक विकास को दृष्टिगत रखकर उत्तराखण्ड राज्य के नवोदित युवाओं को स्वरोजगार एवं लघु उद्योगों के लाभप्रद कार्यों में शिक्षा, दक्षता और कुशलता विकसित करने के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से उद्यमिता के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने के लिए उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित देवभूमि योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय में उद्यमिता विकास कार्यक्रम हेतु देवभूमि उद्यमिता योजना के पोर्टल पर पंजीकृत 45 प्रतिभागियों का चयन किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम दिवस के उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो० (डॉ०) आभा शर्मा तथा कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो० (डॉ०) मुकेश कुमार के दिशा–निर्देशन में मॉ सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन तथा वैदिक मंत्रोच्चारण के द्वारा शुभारम्भ हुआ।

समापन दिवस में प्रतिभागियों द्वारा उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ई०डी०पी०) से प्राप्त अनुभवों उपलब्धियों (फीड बैक) पर अपने विचार रखे– श्रीमती बसंती देवी ने पशु–पालन, ममता पाल ने स्ट्रोबेरी के उद्योग को अपनाने, नेहा ने सिलाई कढ़ाई को उद्योग का रूप देने तथा प्रबन्धन विषय की जानकारी दी। छात्रा हिमानी भट्ट ने समूह में कार्य करने की प्रेरणा श्रीमती माया देवी ने लघु उद्योग को आगे कैसे बढ़ाया जाये विषय पर अपने विचार रखे, श्रीमती नीतू कोहली ने महिलाओं द्वारा समूह में रोजगार अपना कर अपनी आर्थिक स्थिति के सुधार में अपने अनुभव साझा किये। इसी क्रम में श्री आशीष शर्मा ने प्रशिक्षण प्राप्त प्रतिभागियों के उद्योग की भविष्य की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में श्रीमती नीतू कोहली, तथा माया देवी ने विभिन्न स्वरोजगार करने वाली महिलाओं की सहभागिता में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। समापन दिवस की अध्यक्षा प्रोफेसर (डॉ०) आभा शर्मा ने मधुपालन, मत्स्यपालन, पशुपालन, नर्सरी तथा स्ट्रोबेरी आदि को कार्यरूप में परिणत करने हेतु प्रतिभागियों को प्रेरित किया,

अन्त में देवभूमि उद्यमिता योजना के अन्तर्गत संचालित इस बारह दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो० (डॉ०) मुकेश कुमार ने सभी प्रतिभागियों, विषय विशेषज्ञों, महाविद्यालय परिवार के सभी प्राध्यापकों, कार्मिकों, सम्मानित अतिथियों, छात्र–छात्राओं का इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद (गुजरात) में संचालित देवभूमि उद्यमिता योजनान्तर्गत 6 दिवसीय फैकल्टी मेंटर विकास कार्यक्रम के लिए उत्तराखण्ड राज्य से सत्र–2024–25 दिनांकः 14/07/2024 से 19/07/2024 हेतु महाविद्यालय के डॉ० मुकेश कुमार, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग को प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।

डॉ० सुधीर मलिक ने सारगर्भित व्याख्यान में उत्पादन, सेवा, और उत्पाद को बेचने से होने वाले लाभ तथा कुटीर उद्योग धंधों जैसे पहाड़ी अचार, फल, फलों के रस, सुगन्धित तथा औषधीय वनस्पतियों के उत्पाद तथा होम स्टे जैसी योजनाओं की सुविधा उपलब्ध कराकर उद्यमिता से लाभान्वित हो सकते है।

संयोजक डॉ० मुकेश कुमार ने उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग हेतु देवभूमि उद्यमिता योजना की वेबसाईट– **https//duy.heduk.org** पर अधिक से अधिक संख्या में 18 से 45 वर्ष उम्र तक के सभी को निशुल्क पंजीकरण करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम की सफलता के लिए महाविद्यालय परिवार के सभी प्राध्यापक, कार्मिकों तथा विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

उत्तराखण्ड राज्य में देवभूमि उद्यमिता योजना का उद्देश्य स्वरोजगार को प्रोत्साहन देना, युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना तथा ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को सशक्त करना है। इसके अन्तर्गत उद्यमिता विकास कार्यक्रम (Entrepreneurship Development Programme - EDP) का आयोजन किया जाता है जिससे युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) स्थापित कर सकें।

महाविद्यालय में भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद, गुजरात कार्यान्वयन संस्था के सहयोग से 12 दिवसीय ई०डी०पी० (उद्यमिता विकास कार्यक्रम) दिनांकः 20, मार्च 2025 से 02 अप्रैल 2025 तक आयोजित किया ।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० आनन्द प्रकाश सिंह की अध्यक्षता तथा देवभूमि उद्यमिता योजना केन्द्र के नोडल अधिकारी डॉ० मुकेश कुमार के निर्देशन देवभूमि उद्यमिता योजना देहरादून के समन्वयक श्री अवनीश कुमार तथा प्रशिक्षक श्री आशीष शुक्ल के सहयोग से विद्यार्थियों कै प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में 35 प्रतिभागियों ने स्वरोजगार से जुड़नें के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस अवसर पर, जिला उद्योग केंद्र के एक अनुभवी अधिकारी को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने देवभूमि उद्यमिता योजना के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण कार्यक्रम और व्यवसाय स्थापित करने की प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने सफल उद्यमिता के उदाहरणों को साझा करते हुए युवाओं को अपना उद्यम शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम के तहत डॉ० मुकेश कुमार के मार्ग निर्देशन एवं डॉ० सुधीर मलिक एवं श्रीमती जयन्ती देवी के नेतृत्व में महाविद्यालय 28 विद्यार्थियों द्वारा दिनांक 04/04/2025 को आंचल डेरी दुग्ध प्लांट खटीमा का शैक्षिक भ्रमण किया गया। इस दुग्ध प्लांट के महाप्रबन्धक श्री राजेश मेहता जी ने शैक्षिक भ्रमण के मुख्य उद्देश्य दुग्ध उत्पादन, सुरक्षित स्वच्छ और प्रसंस्करण प्रक्रिया की विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की।
निष्कर्ष : उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत देवभूमि उद्यमिता योजना उत्तराखण्ड राज्य के युवाओं में स्वरोजगार की भावना को बढ़ावा देने वाली एक महत्वपूर्ण एवं बहु उद्देश्यी योजना है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम के माध्यम से न केवल युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है, अपितु राज्य के आर्थिक विकास एवं उन्नति में भी योगदान दिया जा रहा है।

देवभूमि उद्यमिता योजना समिति देवभूमि उद्यमिता योजना समिति में निम्नलिखित सदस्यों को नामित किया गया है।

क्रम	नाम	दायित्व
1	डॉ० मुकेश कुमार	नोडल
2	डॉ० राजीव कुमार	सदस्य
3	डॉ० भूप नरायन दीक्षित	सदस्य
4	डॉ० डॉ० सुशीला आर्या	सदस्य
5	डॉ० सुधीर मलिक	सदस्य
6	श्री हेम कुमार गहतोड़ी	सदस्य

डॉ० मुकेश कुमार

SC/ST/OBC/EWC छात्रवृत्ति

भारत सरकार के निर्देशानुसार समाज कल्याण विभाग उत्तराखण्ड सरकार द्वारा छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत संचालित दशमोत्तर छात्रवृत्ति लाभ हेतु छात्रवृत्ति पोर्टल www.scholarship.gov.in के माध्यम से आवेदित महाविद्यालय में अध्ययनरत पात्र SC/ST/OBC एवं EBC (सामान्य वर्ग में आर्थिक रूप से पिछड़े) छात्र छात्राओं के सत्यापित छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों की वर्षवार संख्या विवरण निम्नवत् है–

सत्यापित छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों का वर्षवार विवरण

क्रम सं०	वर्ष / सत्र	छात्र / छात्राओं की संख्या
1	2020–21	09
2	2021–22	34
3	2022–23	23
4	2023–24	38
5	2024–25	17

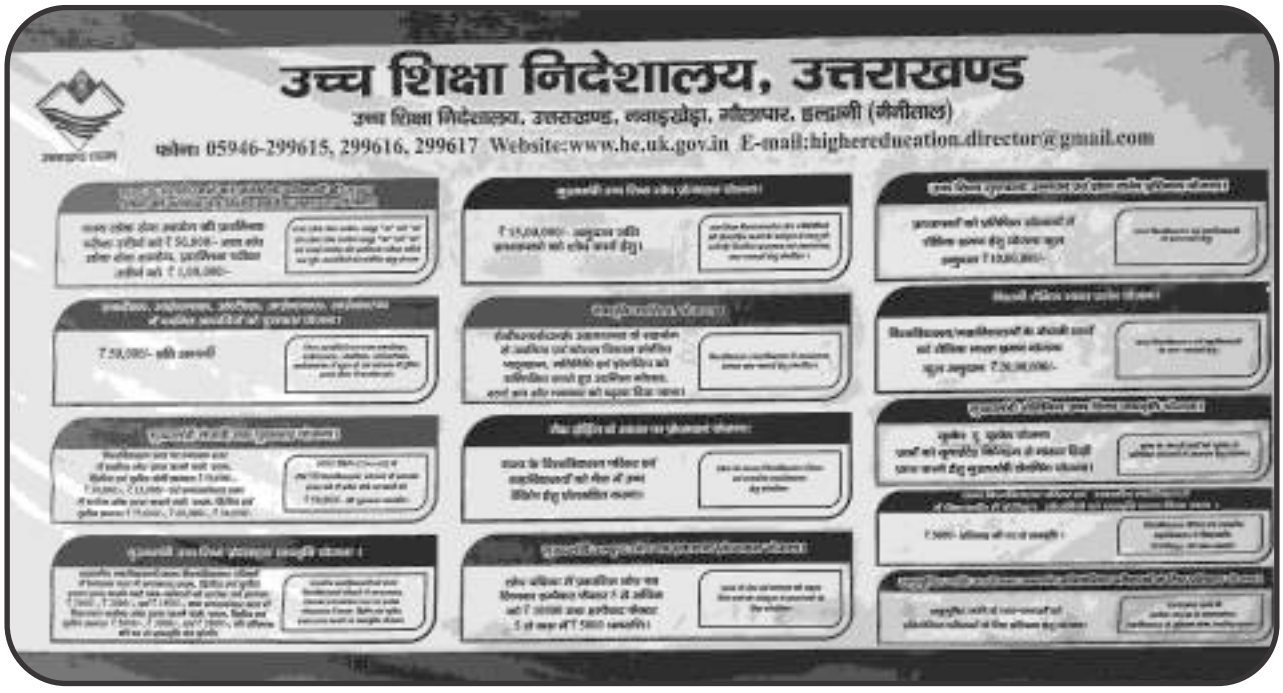

मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना आख्या

महाविद्यालय में अध्ययनरत मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना के तहत शासनादेश संख्याः 149416/XXVI-C-2/2003/ दिनांकः 25 अगस्त 2023, उच्च शिक्षा अनुभाग देहरादून के अनुपालन में स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को अपनी कक्षा में मेधावी वरीयता क्रम में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त छात्र–छात्राओं को क्रमशः धनराशि रु0– 3000 / 2000 / एवं 1500 प्रतिमाह की दर से उनके खातों में डी० बी० टी० के माध्यम से धनराशि हस्तान्तरित की गयी, उन लाभार्थी छात्र–छात्राओं का सत्रवार विवरण निम्नवत् है।

मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति लाभार्थियों का विवरण

सत्र– 2023–24

क्रम सं०	लाभार्थी छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	वरीयता क्रम
1	गीता	श्री त्रिलोक सिंह	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2	तनुजा सिंह	श्री सुनील सिंह	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3	मनीषा चन्द	श्री शुक्र चन्द	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
4	संजय राना	श्री चरन सिंह राना	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
5	लता टम्टा	श्री देवराम टम्टा	बी.ए. तृतीय वर्ष	द्वितीय
6	शनि कश्यप	श्री माटी कश्यप	बी.ए. तृतीय वर्ष	द्वितीय
7	स्वाति गंगवार	श्री रमेश कुमार	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय

सत्र– 2024–25

क्रम सं०	लाभार्थी छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	वरीयता क्रम
1	कुनाल सिंह नेगी	श्री महिपाल सिंह नेगी	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2	जतिन चन्द	श्री कैलाश चन्द	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3	गायत्री	श्री हरि महर	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
4	तनुजा सिंह	श्री सुनील सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
5	निशा भट्ट	हीरा बल्लभ भट्ट	बी.ए. तृतीय वर्ष	प्रथम
6	डौली प्रजापति	श्री कमल किशोर प्रजापति	बी.ए. तृतीय वर्ष	द्वितीय
7	नेहा सैनी	श्री राम चन्द्र सैनी	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय

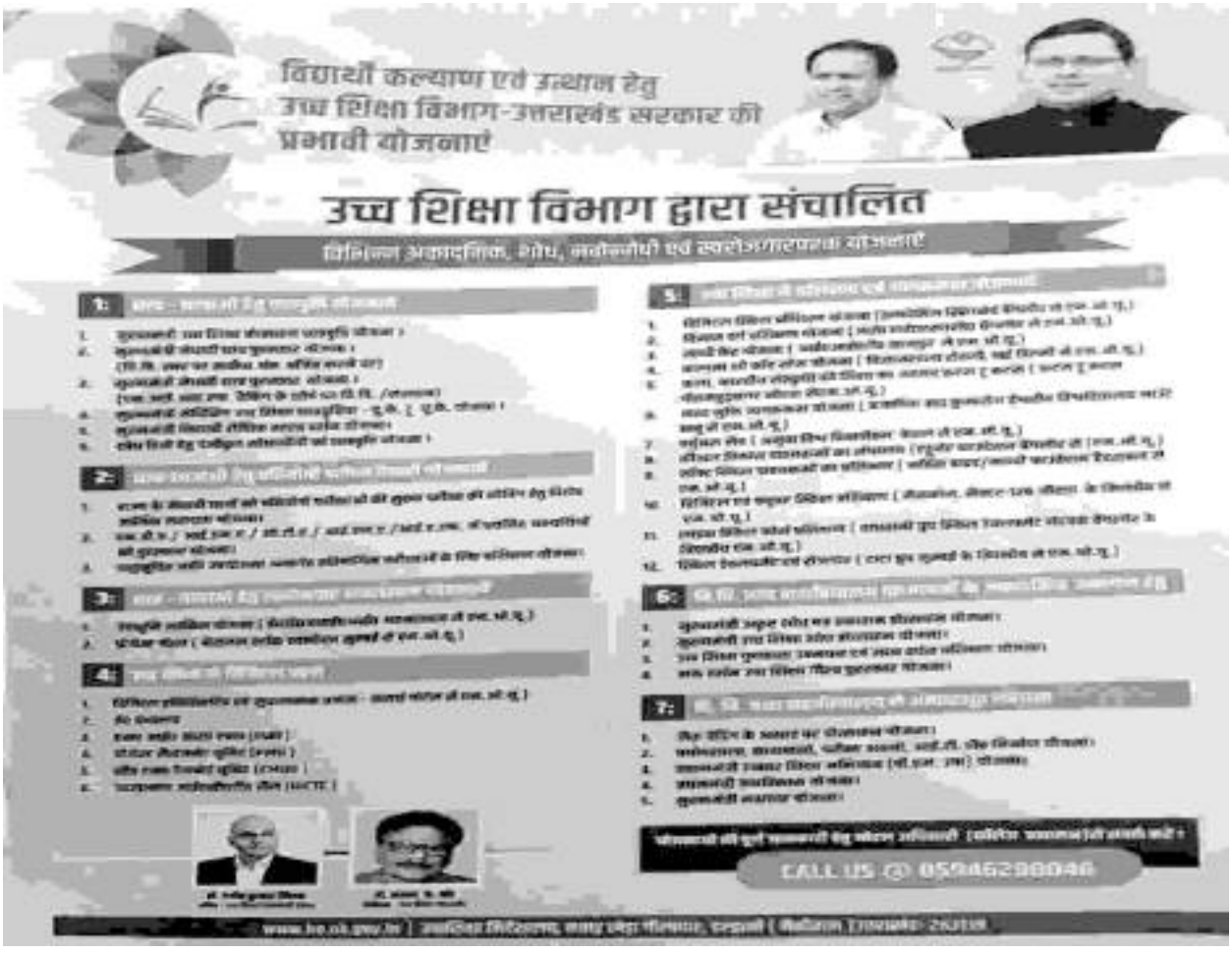

एन्टी ड्रग सेल आख्या

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, दून विश्वविद्यालय परिसर, देहरादून के आदेश के अनुपालन में **'नशा मुक्त उत्तराखण्ड'** अभियान, **ड्रग फ्री देवभूमि** एवं **''मिशन ड्रग फ्री कैम्पस''** अभियान के तहत महाविद्यालय में गठित एन्टी ड्रग सेल द्वारा उत्तराखण्ड शासन के निर्देशानुसार समय–समय पर भिन्न–भिन्न प्रकार से नशा मुक्त जागरुकता अभियान चलाये गये है। जैसे कि महाविद्यालय में दिनांकः 17/05/2023 **'नशा मुक्त उत्तराखण्ड'** विषयक स्लोगन लेखन प्रतियोगिता दिनांकः 26/06/2023 नशा मुक्त दिवस के अवसर पर ई–शपथ कार्यक्रम का आयोजन कर महाविद्यालय के स्टाफ तथा छात्र–छात्राओं को नशा मुक्त शपथ दिलायी गयी । दिनांकः 16/08/2023 राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत राष्ट्रीय तम्बाकू नियन्त्रण कार्यक्रम जिला चम्पावत के तत्वावधान में **'तम्बाकू एवं जन स्वास्थ्य'** विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया। 15 अगस्त 2024 स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों ने नशा मुक्त शपथ ली। इसी प्रकार महाविद्यालय में समय–समय पर नशा मुक्त विषय पर पोस्टर, पेंटिंग प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता तथा जन जागरूकता रैली आदि का आयोजन कर जनमानस को नशे से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए नशा मुक्त रहने के लिए प्रेरित किया जाता रहा है।

एन्टी ड्रग सेल का गठनः एन्टी ड्रग सेल में निम्नलिखित सदस्यों को नामित किया गया है।

क्रम	नाम	दायित्व
1	डॉ० राजीव कुमार	संयोजक
2	डॉ० मुकेश कुमार	सदस्य
3	डॉ० भूप नरायन दीक्षित	सदस्य
4	डॉ० सुशीला आर्या	सदस्य
5	डॉ० सुधीर मलिक	सदस्य
6	श्री नरसोनू	सदस्य
7	श्री देवकी नन्दन	सदस्य

डॉ0 राजीव कुमार
संयोजक

एंटी ड्रग एवं विधिक सेवा जागरूकता कार्यक्रम

अन्य गतिविधियाँ

एन्टी रैगिंग सेल आख्या

महाविद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्र–छात्राओं के लिए 'एन्टी रैगिंग सेल' (Anti-Ragging Cell) का गठन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) एवं उत्तराखण्ड शासन के निर्देशानुसार किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय में छात्रों के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाना है, रैगिंग (यानी सीनियर छात्रों द्वारा जूनियर छात्रों को मानसिक या शारीरिक रूप से प्रताड़ित करना) को रोकने के लिए बनाया गया है। यह रैगिंग की किसी भी घटना को रोकना और किसी भी संभावना को समाप्त करने एवं छात्रों के लिए सुरक्षित एवं अनुशासित वातावरण प्रदान करने में सहयोगी है।

एन्टी रैगिंग सेल द्वारा नव प्रवेशित छात्रों हेतु ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया रैगिंग निषेध शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। नियमित निगरानी हेतु टीमों का गठन किया गया। सभी छात्रों को न्ळब की रैगिंग विरोधी गाइडलाइन्स से अवगत कराया। डिजिटल निगरानी (CCTV) को और सुदृढ़ किया गया है।

महाविद्यालय में एन्टी रैगिंग सेल द्वारा उठाए गए सतर्कता के कदमों के फलस्वरूप वर्ष भर सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहा। छात्रों, प्राध्यापकों अनुशासन समिति एवं स्थानीय प्रशासन के सहयोग से रैगिंग की कोई भी घटना सामने नहीं आई।

एन्टी रैगिंग सेल का गठनः एन्टी रैगिंग सेल में निम्नलिखित सदस्यों को नामित किया गया है।

क्रम	नाम	दायित्व
1	प्रो० (डॉ०) आनन्द प्रकाश सिंह (प्राचार्य)	संयोजक
2	डॉ० राजीव कुमार	सदस्य
3	डॉ० सुशीला आर्या	सदस्य
4	श्रीमती जयन्ती देवी	सदस्य

डॉ0 राजीव कुमार
संयोजक

भारत सरकार के निर्देशानुसार समाज कल्याण विभाग उत्तराखण्ड सरकार द्वारा छात्रवृत्ति योजना

परिचय : समाज कल्याण विभाग, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुरूप, राज्य के छात्र–छात्राओं को शैक्षिक सशक्तिकरण हेतु छात्रवृत्ति योजना चलाई जाती है। इस योजना का उद्देश्य विशेष रूप से अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) के छात्रों को उच्च शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना है।

यह योजना विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आर्थिक बाधाओं से मुक्त कर पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखने में मदद करती है। प्रत्येक वर्ष छात्रवृत्ति के लिए प्राप्त ऑनलाइन आवेदन पत्रों को सत्यापन के उपरांत स्वीकृत किया जाता है, जो पात्रता की पुष्टि के पश्चात संबंधित छात्रों को राशि के रूप में वितरित की जाती है।

छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत सत्यापित छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों की वर्षवार संख्या

तालिका 1. वर्ष 2018–2025 तक छात्रवृत्ति योजना में सामाजिक वर्ग एवं लिंग आधारित लाभार्थी वितरण

S. NO.	Year	Total	Total	GEN		OBC		SC		ST		TOTAL STUDENTS NAME
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	
1	2018-19	2	7	0	2	0	1	2	4	0	0	9
2	2019-20	2	17	1	3	1	9	1	5	0	0	19
3	2020-21	3	25	0	0	2	16	1	8	0	1	28
4	2021-22	10	28	0	0	6	14	4	14	0	0	38
5	2022-23	5	23	0	0	2	10	3	13	0	0	28
6	2023-24	13	25	0	1	2	7	8	16	2	1	38
7	2024-25	4	12	0	1	2	2	1	9	1	0	16

(Primary data)

प्रस्तुत तालिका में वर्ष 2018–19 से 2024 25 तक समाज कल्याण विभाग, उत्तराखण्ड सरकार की छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत राजकीय महाविद्यालय बनबसा के पुरुष एवं महिला लाभार्थियों की संख्या दर्शायी गई है।

रेखाचित्र 1. वर्ष 2018–2025 तक छात्रवृत्ति योजना में सामाजिक वर्ग एवं लिंग आधारित लाभार्थी वितरण

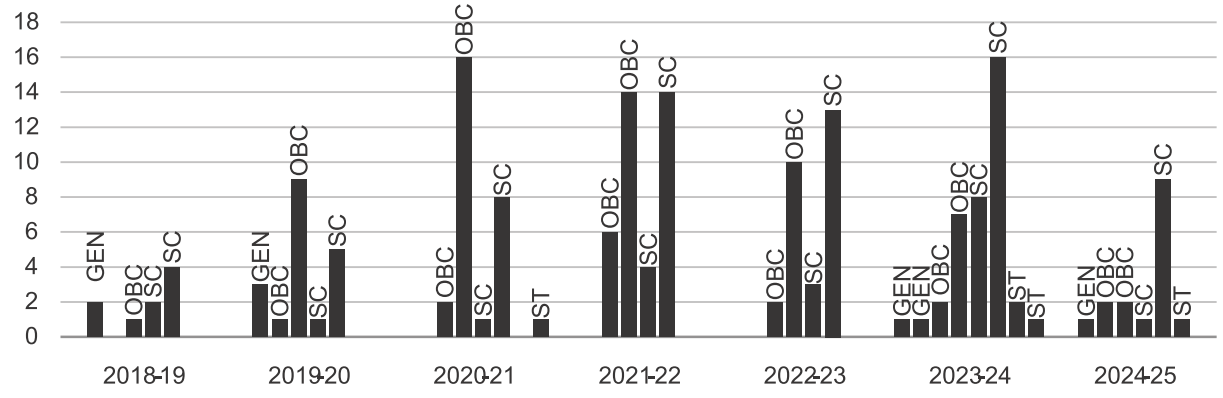

छात्रवृत्ति योजना में लिंग आधारित गहन विश्लेषण (2018–2025)

1. आवेदन की समग्र प्रवृत्ति : 2018–19 में केवल 9 छात्र–छात्राओं ने आवेदन किया जबकि 2021–22 और 2023–24 में यह संख्या बढ़कर 38 तक पहुँची। इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रवृत्ति योजना के प्रति विद्यार्थियों में जागरुकता और विश्वास बढ़ा है।

हालांकि, 2024–25 में यह संख्या घटकर 15 हो गई जो दर्शाता है कि इस वर्ष कुछ कारणों से आवेदन में कमी आई है। यह तकनीकी कारण, दस्तावेजों की कमी या आवेदन प्रक्रिया में बदलाव के कारण हो सकता है।
लिंग आधारित विश्लेषण (Gender wise Analysis) : प्रतिशत भागीदारी का तुलनात्मक विश्लेषणः

लिंग आधारित विश्लेषण (Gender wise Analysis) : प्रतिशत भागीदारी

वर्ष	कुल छात्र	कुल छात्राएँ	पुरुष %	महिला %
2018-19	2	7	22.2%	77.8%
2019-20	2	17	10.5%	89.5%
2020-21	3	25	10.7%	89.3%
2021-22	10	28	26.3%	73.7%
2022-23	5	23	17.9%	82.1%
2023-24	13	25	34.2%	65.8%
2024-25	4	12	25.0%	75.0%

वर्षवार छात्रवृत्ति आवेदन लिंग आधारित विश्लेषण (Gender wise Analysis)

(प्रतिशत भागीदारी)

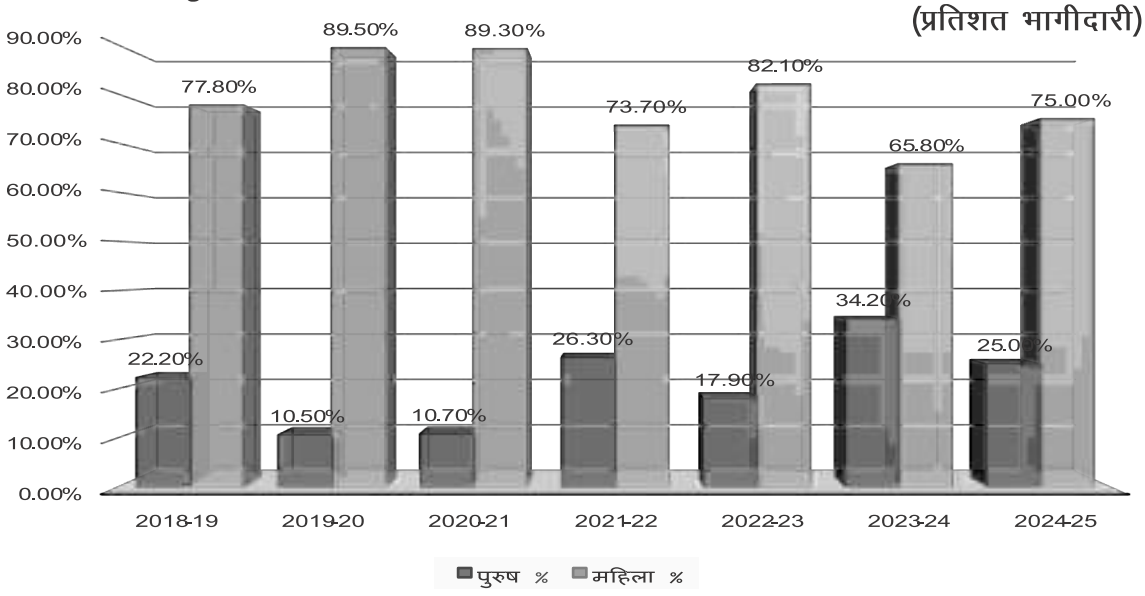

वर्षवार छात्रवृत्ति आवेदन लिंग आधारित विश्लेषण (Gender wise Analysis)

(प्रतिशत भागीदारी)

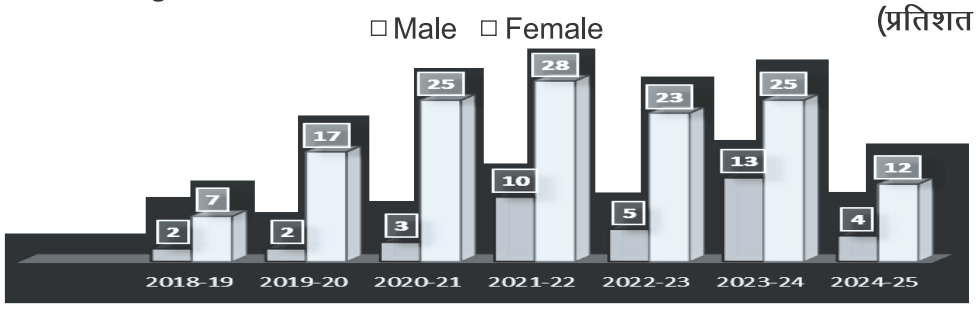

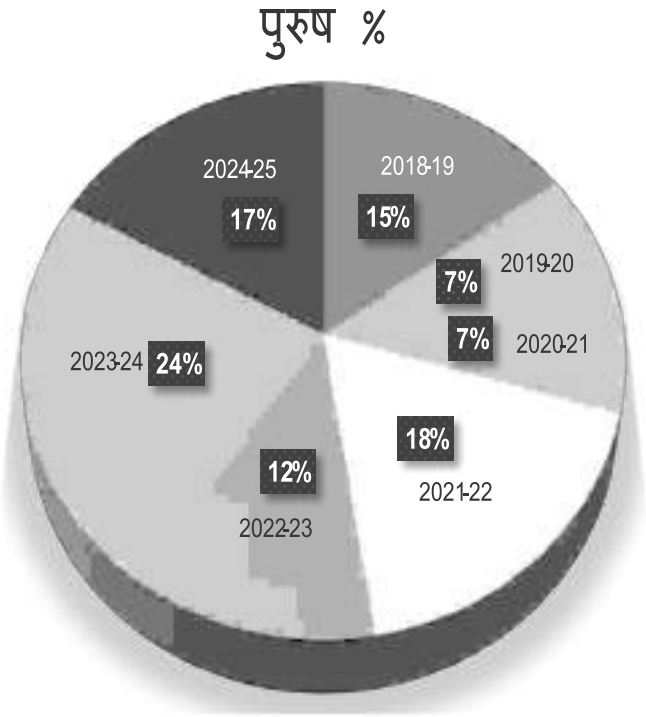

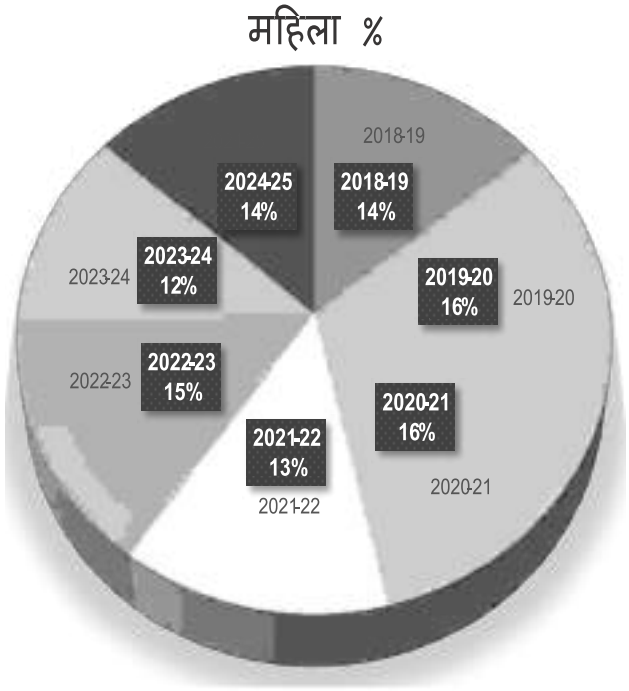

विश्लेषणात्मक बिंदु:

A. महिला छात्रों की निरंतर प्रधानता:

- प्रत्येक वर्ष महिला छात्रवृत्ति लाभार्थियों की संख्या पुरुषों से अधिक रही है।
- औसत महिला भागीदारी पिछले 7 वर्षों में लगभग 78% रही, जो दर्शाता है कि छात्रवृत्ति योजना से लड़कियों की शिक्षा में निरंतर निवेश हो रहा है।

B. पुरुष भागीदारी में असंतुलन एवं सुधार:

- 2019–20 और 2020–21 में पुरुष भागीदारी 10% के करीब थी जो न्यूनतम स्तर पर थी।
- 2023–24 में यह प्रतिशत 34.2% तक पहुँचा, जो योजना के प्रति पुरुष छात्रों की बढ़ती जागरुकता को दर्शाता है।

C. सामाजिक प्रभाव और कारण:

- ग्रामीण क्षेत्रों में परिवारों द्वारा बालिकाओं की शिक्षा के प्रति बढ़ती स्वीकृति एक प्रमुख कारण है।
- विद्यालयों और महाविद्यालयों द्वारा छात्रवृत्ति की जानकारी और सहायतार्थ सक्रिय काउंसलिंग से महिला भागीदारी बढ़ी है।
- लिंग–संवेदनशील सरकारी योजनाएं भी एक प्रमुख कारक रही हैं

D. 2023–24 और 2024–25 के डेटा पर विशेष टिप्पणी:

- 2023–24: पुरुषों की संख्या 13 तक पहुँची– यह एक संकेत है कि छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ धीरे–धीरे सभी वर्गों तक पहुँच रहा है।
- 2024–25 में कुल छात्रों की संख्या में गिरावट देखी गई, संभवतः यह आवेदन प्रक्रिया या समयसीमा की बाधाओं का परिणाम हो सकता है।

सामाजिक वर्ग आधारित विश्लेषण (Category-wise Distribution) :

- अनुसूचित जाति (SC) और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के छात्रों का अनुपात सबसे अधिक रहा है।
- सामान्य वर्ग (GEN) से आवेदन बहुत ही सीमित रहे, जो दर्शाता है कि यह योजना मुख्यतः आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए प्रभावी रही है।
- जनजातीय वर्ग (ST) से केवल 2023–24 और 2024–25 में कुछ नाम सामने आए हैं।

4. लिंग आधारित विश्लेषण (Gender - wise Analysis): प्रतिशत भागीदारी

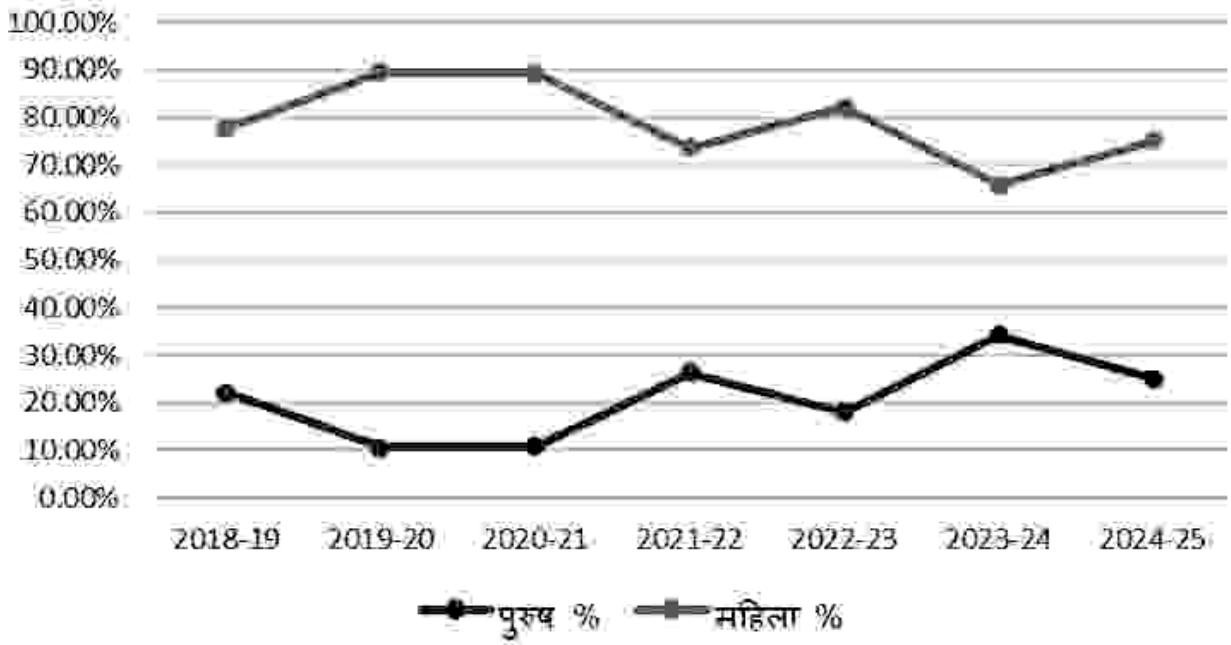

महिला प्रतिशत की रेखा अधिक ऊँचाई पर बनी रही, जो संगति और स्थायित्व को दर्शाती है।
पुरुष रेखा में धीमी परंतु सकारात्मक वृद्धि दर्शाई देती है, विशेषकर 2021–22 और 2023–24 में।

5. निष्कर्ष: ष्छात्रवृत्ति योजना ने विशेष रूप से ग्रामीण और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को उच्च शिक्षा में बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुरुषों की भागीदारी में भी वृद्धि हो रही है, जो समान अवसर और नीति की समावेशिता का संकेतक है।

डॉ प्रो. मुकेश कुमार
(प्रोफेसर) संस्कृत विभाग
डॉ. सुशीला आर्या
अ0 प्र0, अर्थशास्त्र विभाग

राजकीय महाविद्यालय बनबसा में 'युवा संसद' का सफल आयोजन

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत में 13 अगस्त, 2024 को एक अत्यंत सफल 'युवा संसद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को संसदीय कार्यप्रणाली, लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान की व्यावहारिक समझ प्रदान करना था। महाविद्यालय के नोडल अधिकारी डॉ. सुधीर मलिक एवं प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय विधायक प्रतिनिधि श्री दीपक रजवार जी, श्री कैलाश थपियाल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे, जिन्होंने छात्रों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता छात्रों की सक्रिय भागीदारी रही, जिसमें उन्होंने स्वयं स्पीकर, प्रधानमंत्री, विभिन्न मंत्री और विपक्ष के नेता की भूमिका निभाते हुए पूरे सदन का संचालन किया। छात्रों ने महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर गहन चर्चा की और सरकारी योजनाओं से जुड़े प्रश्नों पर तर्कपूर्ण बहस की।

कार्यक्रम के अंत में, निर्णायक मंडल ने छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया, जिसमें नेहा चंद (गृहमंत्री) को प्रथम पुरस्कार मिला। यह आयोजन सीमित संसाधनों में भी एक उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम का उत्कृष्ट उदाहरण बना और इसने छात्रों में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और नागरिक जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डा. सुधीर मलिक
संयोजक
(राजनीति विज्ञान विभाग)

पाठ्येत्तर गतिविधियाँ

पाठ्येत्तर गतिविधियाँ

KITM
Group of Institutions

BEST COLLEGE
STUDY & JOB 100%

Our college is committed to delivering quality education that combines academic excellence with practical exposure, preparing students to meet the dynamic challenges of today's global environment. We offer a broad spectrum of career-oriented programs designed to cultivate knowledge, Innovation, and professionalism.

Our major academic offerings include Catering Technology & Hotel Management (CTHM), Banking and Financial Management (BFM), B.Sc. in Information Technology, Bachelor of Computer Applications (BCA), and Journalism & Mass Communication (BJMC). Each of these programs is carefully structured to ensure students receive a balanced education that is aligned with current industry trends and expectations.

WWW.KITMCOLLEGE.COM

ADD: BYPASS ROAD BIGRABAG KHATIMA UTTARAKHAND
9258351065, 9568110012

श्री पुष्कर सिंह धामी
माननीय मुख्यमंत्री
उत्तराखण्ड सरकार

आँचल

प्राकृतिक शुद्धता का प्रतीक

श्री सौरभ बहुगुणा
माननीय दुग्ध मंत्री
उत्तराखण्ड सरकार

आंचल दूध उत्तराखण्ड के किसानो द्वारा उत्पादित, शुद्ध एवं प्राकृतिक है, यह बच्चे, युवा एवं बुजुर्ग व्यक्ति हेतु स्वास्थवर्धक है

प्रबन्ध कमेटी सदस्यः-

श्री नवनीत सिंह, श्रीमती संगीता ज्याला, श्री चन्द्रशेखर द्विवेदी,
श्री इंदर सिंह, श्रीमती नीमा देवी, श्रीमती नीलम कोरंगा,
श्रीमती भागीरथी जोशी,
श्री राम कुमार
(नामित राज्य सरकार)

राजेश मेहता
प्रधान प्रबन्धक

प्रभा रावत
अध्यक्ष

ऊधमसिंहनगर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि०, खटीमा

प्रधान कार्यालय-खटीमा, मो-73519,88888 । ईमेल- usnanchal@gmail.com

फोटो बाएं से दाएं (खड़े में) : श्रीमती जयंती देवी, श्री त्रिलोक चन्द्र कांडपाल, श्री विनोद कुमार चन्द्र, श्री नरसोनू, श्री अमर सिंह, श्री देवकी नन्दन जोशी

फोटो बाएं से दाएं (बैठे में) : श्री हेम कुमार गहतोड़ी, डॉ. सुशीला आर्या, डॉ. राजीव कुमार, प्रो. (डॉ.) आनन्द प्रकाश सिंह (प्राचार्य), प्रो. (डॉ.) मुकेश कुमार, डॉ. सुधीर मलिक, डॉ. भूप नरायण दीक्षित